ÖæÚÌèØ ßæ¾×Ø

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 12 | **सितम्बर-दिसम्बर (संयुक्तांक)** 2011 | **अंक** 9-12

संस्कृत भाषा और वैदिक साहित्य को समर्पित कीर्तिशेष डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

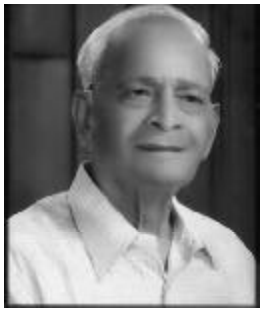

संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का निधन संस्कृत भाषा और वैदिक साहित्य की अपूरणीय क्षति है। शताधिक ग्रन्थों के प्रणेता डॉ० द्विवेदी का जन्म 16 दिसम्बर 1919 को ग़ाजीपुर जिले के गहमर कस्बे में हुआ था। हिन्दी में जासूसी उपन्यासों के आद्य लेखक गोपालराम गहमरी उनके चाचा थे। गहमर निवासी कपिलदेवजी की आरम्भिक शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुई जहाँ से उन्होंने 1939 में विद्याभास्कर की परीक्षा उत्तीर्ण की। कालान्तर में उन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम०ए० करने के पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी०फिल० की शोध उपाधि प्राप्त की। अनेक विदेशी भाषाओं के ज्ञाता डॉ० द्विवेदी ने संस्कृत व्याकरण, भाषा-विज्ञान, निबन्ध लेखन आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे जो संस्कृत पठन-पाठन में नितान्त उपयोगी सिद्ध हुए। इन ग्रन्थों के एकाधिक संस्करण इनकी उपयोगिता तथा लोकप्रियता सूचित करते हैं।

उत्तर प्रदेश की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन कार्य के अतिरिक्त उन्होंने अपनी मातृ संस्था गुरुकुल ज्वालापुर का कुलपति पद भी वर्षों तक संभाला। शिक्षा जगत् और विशेषत: उनकी सारस्वत साधना के कारण उन्हें पद्मश्री का सम्मान प्रदान किया गया।

वैदिक साहित्य लेखन में उनकी लेखनी सदा लगी रही। अथर्ववेद पर उनका शोध ग्रन्थ अपने विषय की अपूर्व कृति है। उन्होंने वैदिक विषयों को सर्व सामान्य के लिए उपयोगी सिद्ध करने के लिए लगभग चालीस खण्डों की एक ग्रन्थमाला तैयार की।

शेष पृष्ठ 5 पर

कालोह्यम् निरवधिः

'वाङ्मय' के चातुर्मास-अन्तराल में ऋतुक्रम से वर्ष और शरद् बीत गये, अब सुहानी लगने लगी है हेमन्त की गुनगुनी-धूप। ऋतुओं के इस सिलसिले के बीच भी अंतर्धारा-सा प्रवाहित रहता है काल—निरवधि। इस निरवधि या अवधिहीन काल को अपनी सुविधा से बाँटकर दिवा-रात्रि की सन्धियों, संक्रान्तियों, ऋतुओं आदि में विभाजित करते हुए हम कला-काष्ठा तक जा पहुँचते हैं फिर भी नहीं जान सकते उस अविभाजित / अदृष्ट काल द्वारा सुनियोजित सृष्टि और प्रलय की योजना का रहस्य। रहस्य की इसी परिवृत्ति में चलता रहता है जन्म, जीवन और मरण का जागतिक-चक्र।

यह जागतिक-परिवृत्ति ही हमारी परिधि है जहाँ निरवधि-काल भी सावधि और विभाजित होता है। युग-वर्ष-मास-पक्ष-तिथि के अन्तर्गत प्रवाहित काल/समय में ही सम्पन्न होता है मनुष्य का कर्ममय जीवन-यज्ञ। जन्म-जीवन-मरण के समस्त हर्ष-उल्लास, सुख-दु:ख, संघर्ष-संवेदना आदि से परिवेशित काल का यह लौकिक-धरातल भी बहुत व्यापक होता है। इसी धरातल पर जहाँ शैशव चहकता है, कैशोर्य फूटता है, ऊर्जा से दीप्त हो उठता है यौवन वहीं काल-चक्र से आधि-व्याधियुक्त वलीपलित जरावस्था और फिर पर्यवसान का दु:खद प्रसंग भी घटित होता है। समय के इसी दायरे में कभी-कभी किसी अपने के अवसान से लगता है कि जैसे गिर पड़ा हो कोई वट-वृक्ष और निरवलंब हो गये हैं नीड़-वासी विहग-वृंद।

इसी वट-वृक्ष-रूपक की त्रासदी से 'वाङ्मय' को भी इसी चातुर्मास्य-अवधि में गुज़रना पड़ा। अगस्त के आखिर में एक दोपहर बड़े भाई श्री अनुराग मोदी को चल-भाष (मोबाइल) पर सूचना मिली कि डॉ० कपिलदेव द्विवेदी नहीं रहे। उन्होंने मुझे बताया, कुछ देर के लिये स्तब्ध रह गये हम-सब और फिर आँखों के सामने गुज़रने लगा स्मृतियों का रेला। स्व० पिताजी (श्री पुरुषोत्तमदास मोदी) से डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का अत्यन्त ही पुराना व गहन आत्मीय सम्बन्ध था, उनकी अधिकांश पुस्तकें भी हमारे यहाँ से प्रकाशित हुईं। इस तरह हमारे परिवार, व्यवसाय/प्रकाशन और सम्बन्धों के बीच बचपन से अब तक डॉ० द्विवेदी का आशीर्वाद पाया है हमने। जब-जब वे सम्मानित होते, लगता कि हमारे ही परिवार का सम्मान हुआ। आत्मीयता के इन अज्ञात-सूत्रों के दरम्यान बहता रहा समय और अचानक डॉ० द्विवेदी ने आँखें बन्द कर लीं। सबसे निरपेक्ष होकर विलीन हो गये उसी निरवधि काल-प्रवाह में।

कहते हैं परा-भौतिक स्तर पर आत्मा अमर है किन्तु भौतिक-स्तर पर जिसकी कीर्ति कायम है वह जीवित होता है—'कीर्तिर्यस्य स जीवति'। निस्सन्देह डॉ० कपिलदेव द्विवेदी दोनों स्तर पर स्थित हैं। उनकी जीवन-साधना का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि गहमर-गाजीपुर के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में जन्म लेकर अपनी एकनिष्ठ तपस्या द्वारा उन्होंने ब्राह्मस्व प्राप्त किया एवं गुरुकुल में वेदाध्ययन करते हुए ऋग्वेद-यजुर्वेद में निष्णात होकर 'द्विवेदी' कहलाये। वेद-विद्या और देववाणी संस्कृत को जन-सामान्य के लिए उपलब्ध कराने का संकल्प लेकर उन्होंने वेदामृतम् ग्रन्थमाला और

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

संस्कृत भाषा, व्याकरण, अनुवाद, शिक्षा आदि से संबद्ध पुस्तकों का प्रणयन किया। 'वेद-तत्व मीमांसा' एवं 'अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन' जैसे मौलिक शोध-ग्रन्थ उनकी गवेषणा-दृष्टि के परिचायक हैं, तो संस्कृत-साहित्य में भास, कालिदास, भवभूति, माघ, भारवि की रचनाओं पर की गयी टीका-समीक्षा उनकी गम्भीर आलोचना-दृष्टि का परिचय देते हैं। ज्ञान की इस साधना के समानांतर उनका सामाजिक जीवन भी विद्यार्थी-काल से ही आरम्भ हो चुका था जब उन्होंने छात्र-जीवन में ही आर्य-सत्याग्रह में भाग लिया और छः महीने जेल में बिताये। शैक्षणिक सेवा में प्राध्यापक/अध्यक्ष/प्राचार्य और कुलपति रहे। उनकी पुस्तकें पुरस्कृत होती रहीं। उन्हें भारत और विदेशों में संस्कृत-वाङ्मय में विशिष्ट योगदान के लिए भारत सकार द्वारा 'पद्मश्री' प्रदान किया गया। राष्ट्रपति सम्मान (5 लाख रुपये) विश्वेश्वरानंद वेद रत्न पुरस्कार (1 लाख रुपये), वाल्मीकि सम्मान (1.5 लाख रुपये) आदि कितने ही राष्ट्रीय-सांस्कृतिक सम्मान से सम्मानित तत्व-चिन्तक, दार्शनिक, भाषाशास्त्री, साहित्यविद्, वेद-विद्या प्रचारक, संत, साधक और सद्गृहस्थ डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के सहज, सरल जीवन के कुछ अंतरंग-क्षणों का सान्निध्य और स्नेह हमारी सांस्कृतिक-धरोहर है। तभी हमें लगा कि अचानक अशनिपात हुआ और टूट गिरा वटवृक्ष। पिताजी के स्वर्गवास के बाद से तो यह बोध गहराता चला गया क्योंकि क्रमशः 'वाङ्मय परिवार' के डॉ० बच्चन सिंह, डॉ० रामचन्द्र तिवारी और अब डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का निर्वाण उसी रूपक की आवृत्ति है जो अवसाद-मग्न कर देती है।

चातुर्मास्य आरम्भ के इसी अवसाद में डूबते-उतराते श्राद्ध पक्ष बीता, नवान्न-पूजन/कलश-स्थापन के साथ नवरात्रि-साधना, शारदीय दीपदान के क्रम में आकाशदीप और फिर दीपावली के दिये जलाते हुए बीत चला है वर्ष 2011। इस वर्ष भी पर्यावरणीय-विक्षोभ के कारण वैश्वक-स्तर पर कई प्राकृतिक आपदायें आयीं, जन्म और मृत्यु का क्रम चलता रहा किन्तु इनमें सबसे भयानक विपत्ति का केन्द्र बना जापान का फुकुशिमा। यह अहम्मन्य वैज्ञानिक मानव की यांत्रिक-संरचना से उपजा अणु-प्रलय था जिसका ज्वार उतरने के बाद भी कई प्रश्न कायम हैं। चूँकि भारत जैसे विकासशील देश भी उसी रास्ते पर अग्रसर हैं इसलिए भी फुकुशिमा के प्रश्नों का उत्तर जरूरी है अन्यथा प्रस्तावित परमाणु-संयंत्रों से रिसती दुर्घटनाओं से घिरे होंगे हम। यद्यपि हमारी आशंकाएँ, दुर्घटनाएँ आदि उसी निरवधि-काल की किसी किश्त में विलीन हो जायेंगे और दूसरे दिन का सूरज निकलते ही परिदृश्य बदल जायेगा।

वर्ष बीत चला है, बीत चुके हैं ऋतु-पर्व किन्तु शेष है क्रिसमस, दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में चर्च की घंटियाँ बजेंगी फिर अवतरित होंगे करुणावतार महात्मा यीशु, देखते-देखते वर्ष बदल जायेगा और निरवधि काल के क्रोड में गुनगुनाता रहेगा कवि-मन—

निर्मोह काल के काले
पट पर कुछ अस्फुट-लेखा
सब लिखी पढ़ी रह जाती
सुख-दुःखमय जीवन-रेखा।

सर्वेक्षण

● **जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा :** आये दिन सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती महँगाई से त्रस्त हैं 85 प्रतिशत भारतीय-जन। अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री के बार-बार के दावों और वादों के बावजूद महँगाई का आँकड़ा, समग्र राष्ट्रीय विकास-दर के आँकड़े को लाँघने लगा है जो एक खतरनाक संकेत है। अपने गाल बजाते हुए पूँजीवादी अर्थशास्त्री भले ही कहते फिरें कि महँगाई समृद्धि का प्रतीक है लेकिन हमें ध्यान रखना होगा कि भारतीय पूँजी के सन्दर्भ यह प्रतीक विपर्यय भी हो सकता है। दूसरी ओर वैश्वक मंदी की आग में अभी तक ग्रीस जल रहा है। पश्चिमी देश भी अभी तक मंदी से उबर नहीं पाये हैं। 'यूरो' और 'डालर' अभी तक मजबूत नहीं हो सके हैं, यहाँ भी रुपये की कीमत गिरने लगी है। इस वैश्वक-परिदृश्य में पूँजीवादी अर्थतन्त्र को चुनौती देते हुए 'आक्यूपाई वॉल-स्ट्रीट' जैसे आन्दोलन भी जारी हैं। इस राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य में भारत जैसे विकासशील देश को अपनी आर्थिक नीतियों की पुनः समीक्षा करनी होगी अन्यथा ठहर जायेगा प्रगति-चक्र और आम आदमी के साथ सुर मिलाने को बाध्य होंगे पूँजीवादी शहंशाह—'महँगाई डायन मार गयी'।

●● **बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक :** इस वर्ष देश में और दुनिया में कई आन्दोलन हुए। भ्रष्टाचार और काले धन का मुद्दा राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करता रहा जिसकी वजह से केन्द्रीय-कैबिनेट के माननीय मंत्रीगण भी तिहाड़ की हवा खाने को मजबूर हुए। अण्णा हजारे के आन्दोलन का सत्याग्रही अंदाज़ देश के किशोर-युवावर्ग को जागृत कर चुका है जिसका परिणाम आगामी चुनावों में देखा जा सकेगा। इस आन्दोलन के समानांतर वैश्वक स्तर पर मिस्र, ट्यूनीशिया जैसे देशों में सत्ता-परिवर्तन के लिये सफल अहिंसक आन्दोलन हुए हालांकि लीबिया जैसे देश में यह उग्र हिंसक-आन्दोलन बन गया। 20वीं सदी कई देशों के लिए औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति की शताब्दी थी फिर भी दुनिया के कई हिस्सों में तानाशाही कायम है जिससे मुक्त होने की छटपटाहट लिये अभी भी जहाँ-तहाँ जारी है जन-विद्रोह जो जल्दी ही अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा।

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल, ज़बाँ अब तक तेरी है,
बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक
बोल कि जो कहना है, कह ले।

—परागकुमार मोदी

आकार डिमाई *पृष्ठ* 428

सजिल्द : 978-81-7124-783-7 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-7124-784-4 • रु० 300.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

परलोक तत्त्व

भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द

मरणोपरान्त जीव कहाँ जाता है, जीव का क्या होता है, यह जानने की इच्छा अवश्य होती है, तथापि क्या यह जान सकना सम्भव है? शास्त्र का कथन है कि स्थूल प्रत्यक्ष तथा अनुमानप्रमाण से यह जानना सम्भव न होने पर भी सूक्ष्म प्रत्यक्ष तथा आप्तोपदेश द्वारा इसे जाना जा सकता है। परलोक दुर्ज्ञेय होने पर भी अज्ञेय नहीं है।

जीव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में शास्त्रोपदेश

पुनर्जन्म परोक्ष है। यह स्थूल प्रत्यक्ष का विषय नहीं है। जो प्रत्यक्षपर हैं, जिनके पास प्रत्यक्ष के अतिरिक्त कोई भी प्रमाण मान्य नहीं होता, जो यह नहीं मानते कि मरने के पश्चात् जन्म होता है, यह उन्हें समझा सकना सम्भव नहीं होता। यह ग्रन्थ-लेखन नास्तिक को आस्तिक बनाने के लिए नहीं किया गया है। जिन्होंने आस्तिक्य बीज लेकर जन्म ग्रहण किया है, शास्त्र तथा युक्ति द्वारा मैंने यथाशक्ति यह प्रयत्न किया है कि उनके समक्ष नास्तिक मत का खण्डन हो। अत: यह ग्रन्थ ऐसे लोगों के लिए है, जो यह समझने योग्य हैं कि मरण के पश्चात् पुन: जन्म होता है। चैतन्य भूत अथवा भौतिक शक्ति का धर्म नहीं है। पूर्वजन्म का कर्म ही वर्तमान जन्म का कारण है, इत्यादि विषय समझाने की चेष्टा करूँगा।

पूर्वजन्म होता है, इसे प्रमाणित करने के लिए पहले के उन मतों का श्रवण- मनन आवश्यक है जो पहले से ही जीव के जन्म तथा उत्पत्ति के सम्बन्ध में अपना पक्ष प्रस्तुत कर गये हैं। जब तक जन्म का स्वरूपदर्शन नहीं होगा, तब तक पुनर्जन्म का तत्व निर्णीत नहीं होगा। किसी पदार्थ की उत्पत्ति के तत्व का चिन्तन करने के पूर्व यह जानना आवश्यक है कि क्या वह उत्पत्ति पूर्व सूक्ष्मरूप से विद्यमान था अथवा नहीं। इस प्रकार की जिज्ञासा का क्या कारण है? नास्तिकों के मन में भी ऐसा सन्देह जाग्रत् हो सकता है।

पहले जाना जा चुका है कि असत् (जो नहीं है) का जन्म अथवा उत्पत्ति नहीं हो सकती। जो सत् है (जो है) उसका एकबारगी नाश नहीं हो सकता, ध्वंस नहीं हो सकता। इसी विश्वास से यह सिद्धान्त बना है कि ''कार्यमात्र का कारण है। कारण के बिना कार्योत्पत्ति नहीं हो सकती''। नास्तिक भी कार्य का कारणानुसन्धान करते हैं। पूर्व तथा अपरभाव का बोध उनको भी है। नास्तिकगण भूत तथा भौतिक शक्ति को ही सत् मानते हैं। इन्द्रियों से जिनकी सत्ता प्रतिपन्न होती है उसके अव्यवहित पूर्वभाव अथवा किंचित् सूक्ष्म अवस्था मात्र को ही नास्तिकगण मानते हैं। उसके अतिरिक्त वे किसी सूक्ष्मतम इन्द्रियगम्य पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करते। वे कर्म मानते हैं, तथापि पूर्वजन्म के कर्म को मानने में वे विपत्ति में पड़ जाते हैं। इनके मत से परमाणु तथा परमाणुनिष्ठ शक्ति ही चेतन, अचेतन, अप्राण, सप्राण आदि सभी पदार्थ का कारण है। पूर्वभाव, चैतन्य, प्राण, मन: इत्यादि भूत के ही भिन्न-भिन्न रूप के कार्य हैं। नित्य एवं अनित्य भाव का ज्ञान तो कुछ न कुछ सभी चेतन पुरुषमात्र को है। नास्तिकगण परमाणु अथवा भूत तथा भौतिक शक्ति को नित्य तथा उसके कार्यजात को अनित्य मानने के लिए बाध्य हैं। वृक्ष, लता, पशु, पक्षी, मनुष्य, विविध रासायनिक तथा भौतिक परिणाम को मानना पड़ता है। इसे सबको मानना पड़ता है कि ये होते हैं। यद्यपि कार्य अनित्य अवश्य है, किन्तु कारण अनित्य नहीं है। यदि कारण ही अनित्य होता, तब जगत् ही न रहता। होता भी नहीं। माता-पिता मर जाते हैं, कन्या-पुत्र का जन्म होता है। कुछ समय व्यतीत हो जाने पर ये भी माता-पिता बन जाते हैं। बीज से अंकुर, अंकुर से शाखा प्रशाखायुक्त वृक्ष का जन्म। वृक्ष से फल, फल से पुन: बीज। अत: कारण का ध्वंस नहीं होता। कारण अनित्य नहीं है। यह स्पष्ट हो गया कि कार्य अनित्य है—कारण नित्य है, अब यह जानना है कि कारण को कार्य से पृथक् करके देखने के लिए उद्यत होने पर हम क्या प्राप्त करते हैं? 'घट' एक कार्य पदार्थ है। मृत्तिका घट का पूर्वभाव अर्थात् कारण है। घट से मृत्तिका को अलग करने पर क्या बचता है? 'घट' यह नाम रह जाता है, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रहता। यह स्थिर तथ्य है कि मृत्तिका घट नहीं है। मृत्तिका में और क्या संयुक्त किया जाता है कि वह घटरूप हो जाती है? संयुक्त किया जाता है कुम्हार का प्रयत्न, दण्डचक्र क्रिया तथा जल। ये घट की उत्पत्ति में किस प्रकार का सहयोग देते हैं? मृत्तिका में जो सब धर्म अथवा शक्ति स्थित थी (सूक्ष्म रूप से स्थित थी), उसे ये सब (कुम्हार का प्रयत्न आदि) अभिव्यक्त करते हैं। मृत्कण (क्ष्हुह्- ह्ल्द्दष्द्यद्द्ह्य) के जिस प्रकार से सन्निवेशित होने से घट होता है, उस रूप से सन्निवेशित होने की योग्यता उसमें है किन्तु जड़ होने के कारण मृत्तिका के कण अपने आप घटाकार नहीं हो सकते। कुम्भकार दण्डचक्रादि के द्वारा मृत्तिका कणों में सूक्ष्मभाव से विद्यमान योग्यता को प्रकटित करता है। मृत्तिका है घटकार्य का उपादान कारण तथा कुम्भकार एवं दण्डचक्रादि हैं निमित्त कारण। अत: देखा जाता है कि कार्यमात्र का ही उपादानकारण से युक्त निमित्तकारण है। उपादान तथा निमित्तकारण में से उपादानकारण कभी भी कार्य से पृथक् होकर अवस्थान नहीं करता। अनित्य कौन है? उपादानकारण के साथ निमित्तकारण का संयोग ही अनित्य है। समस्त कार्य निमित्त तथा उपादानकारण से उत्पन्न होते हैं। इस कारण किसी कार्य का कारणानुसन्धान करने के लिए उसके उपादान तथा निमित्तकारण के स्वरूप का निरूपण आवश्यक होता है।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

20वाँ द्विवार्षिक नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेला

Â»çÌ ×Î¿Ù, ×Í Ú¿ ÚæÇ, Ù§ çÎËÜè

(शनिवार 25 फरवरी से रविवार 4 मार्च 2012, प्रतिदिन प्रात: 11 से रात्रि 8 बजे तक)

×

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विविध विषयान्तर्गत अपने नवीनतम एवं विशिष्ट प्रकाशनों के साथ उपस्थित हो रहा है।
पुस्तकों के इस महाकुम्भ में हमारे स्टॉल पर आप सादर आमंत्रित हैं।

मीडिया एवं राजनीति के छक्के

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

कल रात सपने में एक पुराने क्रिकेटर को फिरण्ट होते देखा। वह मीडिया, शासन तथा जनता की जमात में उभरे शिवि, दधीचि, रन्तिदेव एवं कर्ण लोगों पर बिफरे हुए थे कि आज से अट्ठाईस साल पहले भी तो भारत ने विश्व कप जीता था? तब लोगों का क्रिकेट-प्रेम कहाँ था? तब कपिलदेव के लिए 'भारत रत्न' की माँग क्यों नहीं की गई? क्या तब भारत का मान नहीं बढ़ा था? तब शासन और समाज के धनकुबेरों की दयालुता कृपालुता एवं क्रिकेटोन्माद को क्या हो गया था? तीस करोड़ तो विजय पुरस्कार मिल ही रहा है। ऊपर से दिल्ली-सरकार एक-एक करोड़, हरियाणा-सरकार एक-एक करोड़ अपने सूरमाओं को दे रही है! कोई अपने एयरवेज से जिन्दगी भर मुफ्त यात्रा कराने की घोषणा कर रहा है तो कोई अपने राज्य में मुफ्त बँगले मुहैया करा रहा है तो कोई हफ्ते भर का मुफ्त सपरिवार टूर-पैकेज अर्पित कर रहा है! कोई धोनी के नाम प्ले-ग्राउण्ड बनवा रहा है।

वदान्यता के इसी महाज्वार में एक बार पुन: जोर पकड़ने लगी है सचिन तेंदुलकर को 'भारतरत्न' देने की माँग। महाराष्ट्र विधानसभा ने तो बाकायदा प्रस्ताव पारित कर केन्द्र को भेज दिया है। इस पूरे प्रकरण में इन तथ्यों का कोई महत्त्व नहीं कि क्या 'भारतरत्न' अथवा कोई भी स्पृहणीय पद-पुरस्कार हल्ला बोल कर लिया जाना चाहिये अथवा नहीं? क्या इसी प्रकार का हल्ला मचा कर बुकर, मैगसेसे अथवा नोबल भी लिया जा सकता है? क्या इस तरह, तीन वर्षों से हलाकान मचा कर लिया गया 'भारतरत्न' अवमूल्यित नहीं हो जायेगा? क्या सदा-सदा के लिये गुणपक्षधर, ईमानदार लोग यह अनुभव नहीं करेंगे कि यह पुरस्कार 'अमुक' को दिया नहीं गया है बल्कि 'अमुक' द्वारा अपनी लोकप्रियता को भुना कर, जनमत जोर से, छीना गया है? और यदि कहीं वह 'अमुक' नि:स्वार्थ है, सन्तस्वभाव है, इस पूरे नाटक का निमित्तकारण नहीं है तब तो एक प्रकार से उसकी कीर्ति को कलंकित किया जा रहा है, उसके चरित्र की ही हत्या की जा रही है!

उपर्युक्त दो अनुच्छेदों को पढ़कर ऐसा लगेगा बहुतों को कि मैं क्रिकेट अथवा क्रिकेटर्स का विरोधी हूँ। अथवा किसी के 'भारतरत्न' होने से मुझे कोई द्वेष है। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं है। मैं क्रिकेट ही नहीं, प्रत्येक बौद्धिक एवं शारीरिक-क्रीडा का प्रशंसक एवं प्रेमी हूँ। भारतीय होने के नाते मैं भी पाकिस्तान एवं लंका से मैच होने की अवधि में, अन्न-पानी छोड़ बैठा रहा, भारत की विजय के लिये 'सिद्धकुञ्जिका' का पाठ करता रहा। परन्तु मैं क्रिकेट के उन्माद से ग्रस्त नहीं। मैं विवेकशून्य नहीं। एम०ए०, डी० फिल्०, डी० लिट्० होकर मैं विक्षिप्तों एवं मूर्खों की तरह बात नहीं कर सकता। भावना के प्रवाह में बहकर 'अनुचित' का समर्थन नहीं कर सकता। और उसी प्रकार 'उचित' का विरोध भी नहीं कर सकता। पण्डितराज जगन्नाथ (शहंशाह शाहजहाँ के राजकवि) की एक कविता है—

यद्यपि का मे हानि: परकीयां चरति रासभे द्राक्षाम्।
असमञ्जसमिति मत्वा तथापि खलु खिद्यते चेत:॥

अर्थात् यदि गधा अंगूर खा रहा है तो भला मेरी क्या हानि है? (अंगूर की खेती करने वाले की हानि होगी) फिर भी 'यह अनुचित है' बस इतने से ही मैं दुखी हूँ (अनुचित इसलिए कि गधे की तृप्ति अंगूर के फलों से तो होगी नहीं, उसके स्वाद का भी वह मर्म क्या जानेगा? उसे तो भरपेट घास चाहिये।)

इस पूरे प्रकरण में भी अनेक अनौचित्य हैं। पहला तो यही कि हफ्तों से मीडिया द्वारा, चारणों की तरह दुहराई जाती, तोता-रटन्त प्रशस्तियों के बावजूद, जो अठारह रनों पर ही लुढ़क गया, उसके लिए तो 'भारतरत्न' की माँग? और जो जूझ गया अपनी तथा राष्ट्र की इज्जत के लिए, और तूफान से किश्ती निकाल भी लाया बहादुरी से—उसके लिए 'भारतरत्न' की माँग क्यों नहीं? क्या इसलिए कि वह अठारह साल की ही उम्र से, क्रिकेट खेलने के अलावा और कोई काम ही नहीं कर रहा है? क्या इसलिए कि झारखण्ड की विधानसभा ने, महाराष्ट्र की तर्ज पर, उसे भी 'भारतरत्न' देने का प्रस्ताव नहीं पारित किया? क्या जीतने वाली टीम के कप्तान को सचमुच भारतरत्न न बन पाने का कोई पश्चात्ताप न होगा, कोई अवसाद न होगा?

दूसरा अनौचित्य यह है कि आप पुरस्कार पाने की विधि को 'विकृत' क्यों कर रहे हैं? यूँ थोड़ी-बहुत विकृत तो वह हो ही चुकी है। राष्ट्र के एक सौ इक्कीस करोड़ लोग मुँह भले न खोलें, परन्तु 'अनुचित-अभद्र' को जानते-पहचानते सब हैं। जब किसी एक को 'तुष्टिकरण' के चलते मरणोत्तर 'भारतरत्न' घोषित कर दिया जाता है, सैकड़ों उन दिवंगत राष्ट्रभक्तों की उपेक्षा कर, जिनके चरणों की धूलि भी नहीं सिद्ध होता पुरस्कृत व्यक्ति—तो क्या राष्ट्र का सहृदय बुद्धिजीवी-वर्ग इसे देखता नहीं, जानता नहीं, अनुभव नहीं करता? परन्तु क्या करे? वह असहाय है। उसके विरोध, असन्तोष, असहमति का कोई अर्थ भी तो नहीं। कितना आश्चर्य है कि भेड़-बकरी का जीवन जीती भारतीय जनता के बीच, स्वतन्त्रता के चौंसठ वर्ष बाद आज कोई अन्ना हजारे उठ खड़ा हुआ है—विरोध का स्वर लेकर।

तो क्या आपने खुदीराम बोस, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाकुल्ला, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुखदेव, ऊधमसिंह, वीर सावरकर को मरणोत्तर भारतरत्न दिया? क्या आप इन्हें भारतरत्न नहीं मानते? इन स्वनामधन्य हुतात्माओं को भारतरत्न न घोषित करना और उसी पद के लिए मायावती तथा लालूप्रसाद जैसे नामों को उछालना कहाँ का न्याय है?

मीडिया और राजनेता इतने विवेकहीन एवं सस्ते क्यों हो गये हैं? जब महाराष्ट्र विधानसभा ने सचिन के लिये प्रस्ताव पारित किया तो यह क्यों नहीं सोचा कि यह प्रस्ताव सचिन की पात्रता को अपमानित तथा अवमूल्यित करेगा। क्योंकि वह महाराष्ट्र का है! यदि यही प्रस्ताव किसी अन्य राज्य की विधानसभा पारित करती तो निश्चय ही वह सचिन के पक्ष में जाता।

सारा राष्ट्र जानता है कि सचिन तेंदुलकर स्वभावत: एक महान् व्यक्ति है। उसने एक प्रस्ताव, जो शराब के विज्ञापन का था, ठुकरा दिया करोड़ों रुपयों का लोभ त्याग कर। एक विश्वविद्यालय की मानद डी०लिट्० उपाधि को विनम्रतापूर्वक यह कह कर लेने से इन्कार कर दिया कि मैं स्वयं को इसके योग्य नहीं समझता। यह देवत्व का लक्षण है! यह महामानव होने का प्रमाण है! सचिन की राष्ट्रभक्ति, विनम्रता, ऋजुता तथा निरहंकारता का कोई जोड़ ही नहीं। मेरी दृष्टि में तो वह जन्म से ही 'भारतरत्न' है। ऐसे व्यक्ति को 'भारतरत्न' बनवाने के लिए मीडिया तथा कतिपय राजनेताओं द्वारा मुहिम चलाना, प्रेशर पैदा करना, जनमत बनाने का यत्न करना—सब बेईमानी है।

मैं जानना चाहता हूँ कि यह सब पॉलिटिक्स फेंटने वाले लोग क्या सचिन की राय से यह सब कर रहे हैं? यदि नहीं, तो निश्चय ही वे लोग सचिन तेंदुलकर की राष्ट्रीय साफ-सुथरी छवि को धूमिल कर रहे हैं। यदि 'भारतरत्न' सम्मान के दायरे में सचिन आते हैं तो वह उन्हें मिलेगा ही। आज मिले या कल मिले। परन्तु उसके लिए 'कन्वेसिंग' क्यों? क्या 'कन्वेसिंग' अपराध नहीं, अयोग्यता-अपात्रता का प्रमाण नहीं? मेरी दृष्टि में यह सचिन जैसे धीर-गम्भीर कलाकार के व्यक्तित्व को सस्ता और हल्का बनाने का फूहड़ प्रयासमात्र है। सचिन तो मेरी दृष्टि में 'विश्वरत्न' है। विश्वरत्न, यानी भारतरत्न से भी बड़ी शख्शियत!

एक तथ्य और! मेरी प्रार्थना है कि लोग इस तथ्य को अन्यथा न लें। गहराई से मनन और चिन्तन करें। क्रिकेट मात्र संभावनाओं एवं संयोगों का खेल है। इसमें न शरीरबल काम आता है, न ही बुद्धिबल! जबकि अन्य सारी क्रीडायें इन्हीं दो

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

बातों पर निर्भर हैं। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि चार सौ किलो भार उठाने वाला खिलाड़ी अगली प्रतियोगिता में तीन सौ किलो भी न उठा पाये? या कबड्डी का खिलाड़ी छूना या पकड़ना भूल जाय? खेल कोई भी हो, सतत अभ्यास से वह खिलाड़ी की बौद्धिक अथवा शारीरिक क्षमता को बढ़ाता है, घटाता नहीं!

परन्तु इस 'महाखेल' को क्या मानूँ कि कभी लगातार तीन छक्का मार कर 'हैट्रिक' ले रहे हैं और कभी पहली ही गेंद में पैविलियन वापस हो रहे हैं? कभी छक्का मार दिया और कभी उसी छक्के के प्रयास में लपक लिये गये? कभी पाँच विकेटों से जीत गये तो कभी मात्र दो रन से हार गये। तो यह सब क्या है? क्रिकेट को आप प्रतिभा का खेल कहेंगे या शरीरबल का?

मैं अपने एक अन्य वक्तव्य में पहले भी दृढ़तापूर्वक कह चुका हूँ कि 'कला' को 'कला' ही रहने दीजिये। उसे 'ज्ञान' मत सिद्ध कीजिये। ज्ञान शाश्वत है, चिरन्तन है, मुक्ति का स्रोत है—ज्ञानाद् ऋते मुक्तिर्नास्ति। गीता में भी योगेश्वर कृष्ण कहते हैं—नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

परन्तु, कला कोई भी हो, वह शाश्वत नहीं होती। कला से मुक्ति भी नहीं (क्षणिक) आनन्द-मात्र मिलता है। यदि कला से प्राप्त आनन्द क्षणिक न होता तो 'शोले' फिल्म देखने के बाद लोगों ने फिल्म ही देखनी छोड़ दी होती। या फिर विश्वकप की जीत देखने के बाद, क्रिकेट देखने से लोग संन्यास ले लेते। परन्तु क्या ऐसा होना सम्भव है? फिर लोगों ने आई०पी०एल० का षट्राग अलापना प्रारम्भ कर दिया है। कला से कभी भी तृप्ति नहीं होती, प्यास की तरह।

कलाकार अपनी आजीविका के लिए कला अपनाता है। महाराज शूद्रक-प्रणीत नाटक मृच्छकटिक में, चम्पी करके पैसा कमाने वाला कलाकार संवाहक, वसन्तसेना के पूछने पर कहता है—कलेति शिक्षिता। आजीविकेदानीं संवृत्ता। अर्थात् सीखा तो था कला के रूप में। परन्तु अब यही मेरी जीविका का साधन बन गई है। कलायें मान-यश-प्रतिष्ठा तो देती ही हैं, भरपूर पैसा भी देती हैं। आज सिने कलाकार एक-एक फिल्म में साठ-साठ, सत्तर-सत्तर करोड़ रुपया ले रहे हैं। गीतकार, संगीतकार, निर्देशक कौन अपनी कला का मूल्य नहीं ले रहा है? तो फिर कलाकार के प्रति इतना कृतज्ञ, इतना विनत, इतना वशंवद होने की क्या आवश्यकता? उसके प्रति प्रशंसा दृष्टि ही पर्याप्त है।

सम्भवत: मेरी यह सोच गलत हो, परन्तु मैं मानता हूँ कि किसी भी कलाकार को मात्र यश एवं कीर्ति का लोभ नहीं होता। उसे धन-सम्पत्ति का लोभ ही अधिक होता है। इञ्जीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, क्लर्क या कोई भी अन्य वेतनजीवी एक सुनिश्चित मानक के अनुसार ही वेतन पाता है। चाहे उतने वेतन में उसका परिवार आराम से पले या न पले! कुछ लोग, जो प्राप्त वेतन से परिवार नहीं पाल पाते, कुछ और रास्ता निकाल लेते हैं धन की उगाही का। उन स्रोतों से भी हम परिचित हैं।

परन्तु कलाकार अपनी कला का जो मूल्य लेता है, वह सामान्य वेतनमान से हजारों गुना अधिक होता है। कभी-कभी तो लाखों गुना अधिक! इतने भारी-भरकम अर्थोपार्जन के बाद भी, कितने ही कलाकार ईमानदारी से राष्ट्र को कर नहीं देते। कुछेक का मामला पकड़ में आ भी जाता है, अन्यथा वे पाक-साफ बने रहते हैं। कर-विभाग को भी क्या पड़ी है कि वह इनके पीछे पड़े, इनकी आय के स्रोतों को खँगाले? वह तो शेर है उन लोगों के लिए जो बेचारे श्रम का मूल्य चेक से पाते हैं। और चेक से मिली कोई भी आय छिपाई नहीं जा सकती? अब वकील को, डॉक्टर को, व्यापारी को, कलाकार को तो बहुत कुछ 'गुप्तदान' विधि से प्राप्त होता है। तो फिर, कर-विभाग उनका क्या बिगाड़ सकता है?

वस्तुत: कलाकारों एवं वेतनभोगियों के बीच यही आर्थिक विषमता आज भारत के लिए नासूर बन गई है। काला धन किनके पास है? विदेशी बैंकों में किनका पैसा जमा है? किसी शिक्षक का नहीं, किसी भी अन्य वेतनभोगी का नहीं। यह पैसा मात्र कलाजीवियों का है, व्यापारियों का है, उद्योगपतियों का है तथा गद्दार राजनेताओं का है। यह वह पैसा है जो परोक्ष-रीति से मिलता है, गुप्तदान-विधि से मिलता है अथवा अपनी प्रतिष्ठा को नीलाम कर कमाया जाता है।

आज इसी आर्थिक विषमता के चलते नई पीढ़ी का हर युवक या तो हाथ में बल्ला थामना चाहता है या फिर ठुमका लगाना चाहता है बेहयाई के स्तर पर। दस साल मुम्बई की गलियों में घूमने के बाद भी यदि किसी सीरियल में घुसने को मिल गया तो सौदा बुरा नहीं। हर युवक सोच रहा है कि कोई नौकरी करने से लाख गुना अच्छा है बालीवुड में घुसने का प्रयत्न करना। यदि घुस गये तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—चारों पुरुषार्थ सिद्ध हैं।

यह समझ पाना कठिन है कि दिल्ली की मुख्यमंत्री किस विवेक और अधिकार से मात्र चार खिलाड़ियों को एक-एक करोड़ दे रही हैं? क्या अन्य क्रिकेटर्स मात्र इसलिए अपमानित करने योग्य हैं कि वे दिल्ली के नहीं हैं? विश्वकप जीतने से 'भारत' का मान बढ़ा है अथवा मात्र 'दिल्ली' का? यह भी तो नहीं कि यह चार करोड़ का अपना धन हो! यह जनता का पैसा है! जिन्हें क्रिकेट बोर्ड से ही तीस करोड़ मिल रहा है उन्हें और अधिक मालामाल करने का क्या औचित्य है?

क्या यह तीस करोड़, अपने राज्य का एक करोड़, किसी राज्य का मुफ्त बँगला, किसी एयर-फ्लाइट की मुफ्त आजीवन उड़ान आदि की घोषणा के बाद भी हमारी क्रिकेट-टीम राष्ट्र को यह गारण्टी देगी कि अब वह किसी से हारेगी नहीं? फिर भारत के चेहरे पर कालिख पोतेगी नहीं? यदि ऐसी गारण्टी देती है टीम तो एक ही नहीं सारे क्रिकेटर्स को 'भारतरत्न' घोषित कर दीजिये। और यदि ऐसा नहीं हो सकता तो मात्र क्रिकेट के चौकों और छक्कों का आनन्द लीजिये। वह एक कला है। मीडिया और राजनीति के छक्कों की चहलकदमी का तो कोई अर्थ ही नहीं है।

पृष्ठ 1 का शेष

इस योजना के अन्तर्गत सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, वेदों में नारी तथा वैदिक मनोविज्ञान आदि ग्रन्थ लिखे। इस प्रकार उन्होंने कर्मकाण्ड की लीक से हटकर वेदों का सर्वलोक ग्राह्य तथा जन सामान्य के लिए उपयोगी स्वरूप पाठकों के समक्ष रखा। डी०फिल० के लिए प्रस्तुत आपका शोध प्रबन्ध **'अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन'** विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हो चुका है। संस्कृत में काव्य रचना करने में भी आपको व्युतपन्नता प्राप्त थी। आपके लिखे काव्य 'राष्ट्र गीताञ्जलि' तथा 'शान्ति स्तोत्रम्' प्रकाशित हो चुके हैं। 1983 में ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आपको साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया तथा 2008 में राव हरिश्चन्द्र ट्रस्ट द्वारा आपको 'आर्य विभूषण' अलंकार से विभूषित किया गया था। डॉ० द्विवेदी का अवसान संस्कृत के विद्वत् समाज की महती क्षति है।

—डॉ० भवानीलाल भारतीय

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

ÌèÙ ãÂ#Ú ß» È¤Å × çßà##Ü à##M¤×

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

कक्षा आठ तक का पाठ्यक्रम बदलेगा

बेसिक शिक्षा परिषद के उच्च प्राथमिक स्कूलों का पाठ्यक्रम बदलेगा। सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में बच्चों को केन्द्रीय विद्यालयों की तर्ज पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की किताबें अगले सत्र से दी जाएँगी।

मातृभाषा बोलने पर स्कूल में एक हजार का जुर्माना!

त्रिचूर। यहाँ एक अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में कुछ छात्रों को अपनी मातृभाषा, मलयालम में बातें करना महँगा पड़ गया। स्कूल प्रशासन ने इन विद्यार्थियों पर एक-एक हजार रुपया जुर्माना लगाया। जिले के इस सीबीएसई से सम्बद्ध स्कूल के परिसर में अंग्रेजी को छोड़ बाकी भाषाओं में बोलने पर मनाही है।

इंटरनेट और सुपरमार्केट के कारण ब्रिटेन में बंद हुई किताबों की दुकानें

ब्रिटेन में पिछले छह साल में किताबों की दुकानों की संख्या आधी रह गई है और लगभग 600 कस्बों में किताबों की एक भी दुकान नहीं बची है। एक नए शोध में यह जानकारी दी गई है। शोध में इस स्थिति के पीछे इंटरनेट और 'ई-रीडिंग' की बढ़ती लोकप्रियता को जिम्मेदार ठहराया गया है। शोध में बताया गया है कि देश के 580 कस्बों में किताबों की एक भी दुकान नहीं बची है।

'टाइम' के कवर पेज पर छाएंगे अन्ना

रालेगण सिद्धि। जन लोकपाल बिल को लेकर केन्द्र सरकार को घुटनों के बल बैठने पर मजबूर करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे शीघ्र ही प्रतिष्ठित अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' के कवर पेज पर नजर आएँगे। 'टाइम' पत्रिका के फोटोग्राफरों की एक टीम ने अन्ना के निवास स्थान 'यादव बाबा मन्दिर' में उनकी कई फोटो खींची।

दलित लेखक संघ का नाम बदला

दलित लेखक संघ का नाम बदलकर 'दलित साहित्य मंच' कर दिया गया है। यह जानकारी संगठन के कोषाध्यक्ष दिलीप कठेरिया ने दी।

हिन्दी बने कामकाज की भाषा

लोकसभा के विगत सत्र में हिन्दी को हाईकोर्ट एवं सुप्रीम कोर्ट में कामकाज की भाषा बनाने का मामला उठाया गया।

बसपा के श्री गोरख प्रसाद जायसवाल ने शून्यकाल में इस आशय की माँग उठाते हुए कहा कि संविधान के अनुच्छेद 348 (1) में कहा गया है कि जब तक हाईकोर्ट में हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था नहीं हो तभी तक अंग्रेजी का प्रयोग किया जाए, लेकिन आज़ादी के इतने साल गुजरने के बावजूद हिन्दी में कामकाज के सन्दर्भ में कोई ठोस व्यवस्था नहीं हुई है। उन्होंने सरकार से इस दिशा में जरूरी पहल करने का आग्रह किया।

'रस की गंगा' मुफ्त

मुम्बई, वरिष्ठ सम्पादक सत्यनारायण मिश्र की देखरेख और 'जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय' के तत्त्वावधान में एक अत्यन्त रोचक शृंखला प्रकाशित हो रही है। इसकी कई किश्तें छप चुकी हैं। जो साहित्यप्रेमी इन्हें पढ़ना चाहें, उन्हें पन्द्रह रुपये के डाक-टिकट भेजने पर सुप्रसिद्ध लेखक की एक पुस्तिका के साथ 'रस की गंगा' की प्रतियाँ मुफ्त प्राप्त हो सकती हैं। पता : जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय, ए 209, साईं श्रद्धा, वीरा देसाई मार्ग, मुम्बई-400058, फोन : 9769109760

खतरे में सबसे मीठी बोली

सूरदास, रहीम, रसखान, बिहारी, केशव से लेकर मुल्ला दाऊद तक ने जिन मिठास भरे शब्दों से भक्ति काल में कालजयी साहित्य रच दिया, मीरा ने कृष्ण की भक्ति की, ब्रिटिश विद्वान सर अब्राहम जॉर्ज ग्रियर्सन ने जिसे दुनिया की सबसे मीठी बोली करार दिया, वह ब्रजभाषा संकट में है। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार 196 भारतीय भाषाएँ खतरे में हैं, जिनमें एक ब्रजभाषा भी है।

पाँच दशक पूर्व तक ब्रजभाषा आगरा, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, एटा, मैनपुरी, इटावा, बुलन्दशहर, गौतमबुद्ध नगर, बदायूं, फर्रुखाबादा, फरीदाबाद, गुड़गाँव से लेकर धौलपुर व भरतपुर तक किसी न किसी रूप में बोली जाती थी। शुद्ध रूप में यह पाँच जगह मथुरा, आगरा, अलीगढ़, भरतपुर और धौलपुर में बोलचाल में थी। परन्तु धीरे-धीरे इस भाषा से लोग दूर होने शुरू हो गए। यूनेस्को एटलस की 2009-10 की रिपोर्ट में संसार की छह हजार भाषाओं में से 2473 पर अस्तित्व का संकट है। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सेंट जोंस कॉलेज हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष श्री भगवान शर्मा कहते हैं कि यह संकट अब और गहरा रहा है। उनके अनुसार ब्रजभाषा के अस्तित्व पर आए संकट का प्रमुख कारण है कि इससे रोजगार नहीं मिलता। सरकारी राजकाज की भाषा खड़ी बोली है। मीडिया, सरकारी कार्यालयों, पढ़ाई, टी.वी. और फिल्मों तक में खड़ी बोली का प्रयोग हो रहा है। ब्रजभाषा के उद्गम स्थल कहे जाने वाले आगरा, मथुरा समेत पाँचों जिलों में भी आपसी बोलचाल के दौरान खड़ी बोली प्रयोग की जाती है। यदि यही स्थिति रही तो दो पीढ़ियों के बाद ब्रजभाषा पराई हो जायेगी।

अपने ही घर में उपेक्षा : जिस ब्रज क्षेत्र में ब्रजभाषा का उद्भव हुआ, वहीं वह उपेक्षित है। राजस्थान के भरतपुर में ब्रजभाषा अकादमी है परन्तु मथुरा-वृंदावन और उत्तर प्रदेश से जुड़े ब्रज क्षेत्र में ब्रजभाषा अकादमी नहीं है।

गिने चुने साहित्यकार बचे : वर्तमान में ब्रजभाषा का साहित्यिक महत्त्व नगण्य-सा होने के कारण गिने-चुने साहित्यकार ही हैं। इनमें त्रिलोकीनाथ प्रेमी, बालकृष्ण चतुर्वेदी, देवकीनन्दन कुम्हेरिया प्रमुख हैं।

चित्रकथा (कॉमिक्स) में छाए 26/11 के जाँबाज

नई दिल्ली। बदलते वक्त और हालात के साथ कॉमिक्स की पटकथा में भी परिवर्तन आया है। चाचा चौधरी और साबू जैसे काल्पनिक पात्र से ज्यादा महत्त्व अब असल योद्धाओं को दिया जाने लगा है। कहानीकारों ने अब बच्चों को बहादुरी के किस्से सुनाने के लिए अपनी चित्रकथाओं में मेजर संदीप उन्नीकृष्णन जैसे कई असली योद्धाओं को शामिल किया है। इसमें योद्धाओं को आतंकवादियों से मोर्चा लेते हुए दिखाया जा रहा है।

इन चित्रकथाओं में 26/11 के नायक उन्नीकृष्णन के साथ-साथ कारगिल युद्ध में शहीद हुए कैप्टन विक्रम बत्रा और कर्नल सी०जे० नायर की शौर्य गाथाओं को भी शामिल किया गया है। बच्चों को भी काल्पनिक पात्रों के बजाए असल जिन्दगी के बहादुरों के जीवन से रू-ब-रू होने में ज्यादा आनन्द आ रहा है। उन्नीकृष्णन पर 'ब्रेवहर्ट ऑफ मुम्बई-26/11', नायर पर 'द ट्रू मराठा' और कैप्टन विक्रम बत्रा पर 'ये दिल मांगे मोर' नाम से कॉमिक्स बाजार में उपलब्ध हैं।

मनोरंजन की दुनिया में डिजिटल गैजेट्स के तेजी से बढ़ते प्रयोग के बावजूद चित्र कथाओं का अपना अलग बाजार है।

ऑनलाइन क्लासिकल म्यूजिक स्कूल

भारतीय शास्त्रीय संगीत को सीखने के लिए अब आपको दूर किसी म्यूजिक स्कूल में समयानुसार जाकर क्लास करने की जरूरत नहीं है। बल्कि अब स्कूल को जहाँ चाहें, जैसे चाहें खुद खोलकर सुर-ताल का अभ्यास कर सकते हैं। वह भी विश्वविख्यात पण्डित अजय चक्रवर्ती से।

पण्डित अजय की संस्था 'श्रुतिनंदन' ने दुनिया का पहला ऑनलाइन (डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डाट एसएचआरयूटीआइएनएएनडीएएन डाट ओआरजी) क्लासिकल म्यूजिक इंस्टीट्यूट खोला है। इसके द्वारा छात्र शास्त्रीय संगीत की शिक्षा घर बैठे अपने कम्प्यूटर पर ऑनलाइन ले सकते हैं। 'म्यूजिक फॉर ऑल' नामक इस ऑनलाइन स्कूल में संगीत के पाठ्यक्रम को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है, आरोही (प्रारम्भिक), अस्थायी (मध्यम) व आनंदी (अंतिम)। इसके लिए आसानी से

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराकर छह महीने व सालभर का पंजीयन करा सकते हैं। भारतीय छात्रों को रुपये में व विदेशी छात्रों को अमेरिकन डॉलर में कोर्स शुल्क बैंक के द्वारा जमा कराना होगा। इसके बाद छात्र को आइडी व पासवर्ड उपलब्ध कराया जाता है। इसके आधार पर लाग-इन करने पर उन्हें एक लिंक दिया जाता है, जिससे वे मुख्य वेबसाइट में प्रवेश कर सकेंगे। जहाँ उन्हें लाइव क्लास की लिंक, अर्काइव गैलरी में पिछले क्लास की रिकार्डिंग, थ्योरी फाइल, फीडबैक विकल्प मिलते हैं। वेब कास्टिंग व स्क्रीनिंग के द्वारा लाइव क्लास होता है, इस समय चैट आप्शन भी खुले रहते हैं। छात्र अपने प्रश्न लाइव चैट या फिर फीडबैक के द्वारा मेल करके पूछ सकते हैं।

विष्णु प्रभाकर जिला पुस्तकालय

कुछ समय पूर्व शब्दसाधक विष्णु प्रभाकर जन्मशती समारोहों के अन्तर्गत सुरेन्द्र शर्मा, उपाध्यक्ष, हरियाणा साहित्य अकादेमी के प्रयासों से हिसार जिला पुस्तकालय का नामकरण विष्णु प्रभाकर की स्मृति एवं उनके हिसार से जुड़ाव को समर्पित करते हुए 'विष्णु प्रभाकर जिला पुस्तकालय' कर दिया गया। एक समारोह में हरियाणा के राज्यपाल महामहिम जगन्नाथ पहाड़िया के करकमलों द्वारा चौ० चरण सिंह महाविद्यालय में स्थित इस पुस्तकालय का लोकर्पण सम्पन्न हुआ। पुस्तकालय में लगभग 30,000 पुस्तकें हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट के नए निदेशक

श्री एम०ए० सिकंदर ने 29 जुलाई, 2011 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के निदेशक का पदभार सम्भाल लिया। श्री सिकंदर दिल्ली वि.वि. से प्रतिनियुक्ति पर ट्रस्ट में पदस्थापित हुए हैं।

गाँधी की आत्मकथा अब भी 'हॉट केक'

गाँधीजी की आत्मकथा 'मेरे सत्य के प्रयोग' अब भी देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तकों में सम्भवत: पहले स्थान पर है। मुंबई में पिछले दिनों चेतना मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट के द्वारा प्रोजेक्ट मैनेजमेंट अभ्यासक्रम के तहत 'जागृति' नाम से चलाए गए प्रोजेक्ट के दौरान इस आत्मकथा की 11,000 प्रतियाँ केवल एक महीने में बिक गईं। इंस्टीट्यूट के लगभग 350 छात्रों के एक समूह ने गाँधीजी की इस आत्मकथा को सिनेमा हॉलों, मॉल्स, मल्टिप्लेक्सों, कॉर्पोरेट्स आदि के सामने जाकर बेचा। विदित हो कि प्रोजेक्ट से जुड़े छात्रों को ही सबसे पहले यह आत्मकथा पढ़ने को दी गई थी। ये छात्र गाँधीजी के सन्देश लिखे टी-शर्ट पहनकर और उसी तरह के बुकमार्क एवं स्टिकर के साथ मुम्बई की गली-गली और बाजार-बाजार में पुस्तक लेकर गए और इन्हें बेचा। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष गाँधी जी की आत्मकथा के प्रकाशक, नवजीवन ट्रस्ट ने 16 भारतीय भाषाओं में कुल 3.36 लाख प्रतियों की बिक्री कर ली है।

हिन्दी की नयी चाल

—डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी

'भारतीय वाङ्मय' मई-जून 2011 के अंक में प्रकाशित लेख 'इधर हिन्दी नयी चाल में ढल रही है' को आद्योपान्त बड़ी ही उत्सुकता से पढ़ा। इसमें हिन्दी की बोलियों की अपेक्षा अन्य भाषाओं के शब्दों को यथावत् स्वीकार कर भाषागत काम चलाने का आग्रह दिखाया गया है। शुद्धतावादी लोगों को, हिन्दी के प्रति उनका झूठा स्वाभिमान दिखाकर, प्रगति का विरोधी सिद्ध किया गया है।

भारतीय स्वातन्त्र्य के पहले से लेकर अब तक हिन्दी पर बहुविध विचार एवं प्रच्छन्न प्रहार होते रहे हैं। प्रख्यात भाषाविद् डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने भाषा समृद्धि का मूलमंत्र बताते हुए लिखा है कि—"यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि भाषा को सम्पन्न करने का कोई राजमार्ग नहीं है। जिस क्षेत्र के लिए उसे सम्पन्न करना है उस क्षेत्र में उसका निरन्तर प्रयोग करना ही उसका एकमात्र साधन है।" पूर्वकाल में डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ० उदयनारायण तिवारी, सुमित्रानन्दन पन्त प्रभृति सुधी विचारकों ने हिन्दी की प्रकृति एवं विकास की प्रवृत्ति का आकलन करते हुए इसे सर्वमान्य स्वरूप प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त किया। इन विभिन्न चिन्तकों ने माना कि संस्कृत से मूल आकार ग्रहण कर, ब्रज, अवधी आदि सभी बोलियों से आवरण बनाकर तथा देशज शब्दों से समृद्ध होकर हिन्दी उत्तरोत्तर युगानुरूप, अपनी मौलिकता संजोये विकसित होती रहे। आज की यान्त्रिक उन्नति के कालखण्ड में मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल आदि शब्दों के हिन्दीकरण का प्रयास त्याग कर उसी रूप से काम चला लिया जाय यह मन्तव्य तात्कालिक दृष्टि से स्वीकार्य हो सकता है किन्तु भाषा-विकास एवं समृद्धि की दृष्टि से आदरणीय नहीं हो सकता। हमारे पास शब्द निर्माण का अपार कोष है। हमारे पूर्व संकलित धातु, प्रत्यय, कृत्, तद्धित आदि में से शतांश का भी सम्प्रति प्रयोग नहीं हो पा रहा है। उनसे ग्रहण कर हम अपनी समृद्धि सहज ही कर सकते हैं।

इस युग में हमारी सभ्यता, आचरण, दिनचर्या, आवश्यताएँ अद्यतन हो चलीं हैं। स्पष्ट है कि भाषा में भी यह परिवर्तन आया है। इसे स्वीकार करना भी हमारी अनिवार्यता है, किन्तु इसी पर आश्रित हो जाना कदापि श्रेयस्कर नहीं है। इसे अपना बनाकर अपनाना ही उचित है। अन्यथा, हमारी समृद्धि कब और कैसे होगी? हम यदि चलभाष, संगणक आदि को मोबाइल, कम्प्यूटर का पूर्ण प्रतिनिधि शब्द नहीं मानते हैं तो यह हमारे अनभ्यास-अप्रयोग का परिणाम है। कोई भी शब्द उस अर्थ में निरन्तर प्रयोग के बाद ही हमें आत्मीय लगता है। अपने वाञ्छित अर्थ को कह सकता है। हिन्दी, जिसकी पहचान सारे जगत् में है, जिस पर हम भी गर्व करते हैं, विश्व की भाषाओं में प्रतिस्पर्धा करने वाली समर्थ भाषा मानते हैं या बनाना चाहते हैं वह खिचड़ी हिन्दी नहीं है। सामान्यजन की भी हिन्दी नहीं है। वह मानक हिन्दी की खड़ी बोली रूप ही है जिसका परिष्कार पूर्वकाल में हुआ। समृद्धि इस काल में हो रही है। हिन्दी की व्यापकता बढ़ रही है। प्रमुखत: सिनेमाजगत् में इसका प्रयोग, विशेषत: अंग्रेजी में निमज्जित करके तथा उर्दू आदि का अनुमिश्रण करके, हो रहा है। दूरदर्शन के धारावाहिक, प्रेक्षकों में लोकप्रियता का उद्देश्य लेकर आते हैं। उन्हें हिन्दी के वर्तमान, भविष्य से कुछ भी प्रयोजन नहीं है। प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने भी इस व्यथा को प्रकट करते हुए लिखा है कि "भाषाओं का मिश्रण लोगों को दिमागी रूप से बीमार बना रहा है। सूचना क्रान्ति की वजह से हिन्दी का बाजारीकरण हो रहा है, यह उसके चरित्र का क्षय है।" आगे भी उन्होंने इसकी सस्ती एवं विकृत लोकप्रियता पर व्यंग्य करते हुए हिन्दी को बाजारू भाषा बनने से रोकने की सलाह दी है। (भारतीय वाङ्मय, अक्टूबर-नवम्बर अंक)

आज हिन्दी यदि जर्मनी या अमेरिका, ब्रिटेन में लोकप्रिय हो रही है तो यह हमारे लिये स्वर्णिम अवसर है कि हम उसका अधिकाधिक ग्राह्य परिष्कृत रूप उन्हें प्रदान करें। यद्यपि उनका भी एकमात्र उद्देश्य हिन्दी के माध्यम से इस हिन्दी भाषी देश में अपने व्यवसाय की जड़ें जमाना है, अथापि, हो सकता है कि वह कभी हिन्दी का प्रेमी भी बन जाय। शुद्ध या परिष्कृत हिन्दी की रक्षा के साथ उसे सुगम बनाना भी हमारा दायित्व है। जैसे शुद्धतावादी दीवनापन त्याज्य है, उसी प्रकार भाषा की खिचड़ीवादी अतिवादिता भी निन्दनीय है। बड़ों का मानना है कि अतिवादिता किसी भी कार्य की श्रेयस्कर नहीं होती। उनका समन्वय ही सुखद हुआ करता है। भगवान् बुद्ध ने 'मध्यमा प्रतिपदा' का सर्वग्राह्य मार्ग ऐसी ही स्थिति में सुझाया था। आधुनिकतावादी दीवानापन तो इसके लिये सबसे बड़ा संत्रास है। आज जहाँ वायु, अन्न, जल, वनस्पतियाँ, औषधियाँ, धरती, आकाश, सागर, महासागर सभी कुछ दूषित हो चला है, प्रचार माध्यमों ने इसका विकराल रूप दिखाकर हमें शुद्ध अन्न, जल, वायु आदि के लिये उन्मत्त बना दिया है। ऐसी स्थिति में भाषाएँ भी दूषित हो रही हैं। हिन्दी भी उसी प्रभाव में विशीर्ण हो रही है। अत: शुद्धता के प्रेमियों, पोषकों या समर्थकों से इतनी दूरी बनाना भी सर्वथा हानिकर कार्य होगा। समन्वयवादी सत् प्रयास, सतत प्रयोग ही इसका मार्ग प्रशस्त कर सकेगा।

बनारस के यशस्वी पत्रकार

शोध एवं सम्पादन : बच्चन सिंह व डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह

हिन्दी पत्रकारिता की जन्मभूमि भले कलकत्ता रही हो लेकिन कर्मभूमि तो बनारस ही है। स्वनामधन्य पत्रकारों ने अपनी विलक्षण प्रतिभा और विकट साधना से पत्रकारिता को इतनी ऊँचाई और गहनता दी कि 'बनारस स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म' नाम से एक नई धारा ही फूट पड़ी। बनारस हिन्दी पत्रकारिता का गढ़ बन गया। हिन्दी भाषा के विकास का मार्ग प्रशस्त किया बनारस की पत्रकारिता ने। इसका सबसे बड़ा श्रेय बाबूराव विष्णु पराड़कर और 'आज' को जाता है।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 160

सजिल्द : 978-81-7124-812-4 • रु० 200.00
अजिल्द : 978-81-7124-813-1 • रु० 125.00

(*पुस्तक के एक अध्याय का अंश*)

बाबूराव विष्णु पराड़कर

संक्षिप्त जीवन-परिचय—heje[keâj pee keâe pevce 16 veJecyej 1883 F0 keâe keâeMee ce nDee~ ehelee keâe veece heO eJe<CeMeem$ee heje[keâj Deej ceelee keâe veece ßeecelee DeVeheCee yeeF Lee~ ßee eJe<Ce Meem$ee heje[keâj cenejeâš keâ keâvne[heejJeej keâ Le pee eMe#ee heje keâjve keâ yeeo keâeMee Dee ieS Le~ Ùene Gvekeâe eJeJeen nDee Deej Ùene yeme ieS~ Jen memkeâle keâ ØekeâeC[eJeÉeve Le heejCeecemJe¤he yeeuekeâ meoeeMeJe keâe ØeejcYekeâ eMe#ee meveelevee yeeÿeCe heejJeeje keâe Yeeele Jeeokeâ jeele me nF~ ehelee mejkeâeje mkeâue ce DeOÙeehekeâ Le, FmeeueS Gvekeâe mLeeveevlejCe nelee jnlee Lee~ meve 1900 F0 ce Yeeieuehej ce ehelee keâ meeLe jnle nS neFmkeâue GòeeCe ekeâÙee~ Fmee Je<e eheleepee keâe mJeieJeeme ne ieÙee peye meoeeMeJe keâe DeeÙe cee$e 17 meeue Lee~ meoeeMeJe ve OeÙe vene KeeÙee Deej Dehevee eMe#ee peeje jKee~ peye Jen FCšjceee[Sš ce Le leye hueie keâe yeeceeje me 1900 F0 ce Fvekeâe ceelee keâe Yee onevle ne ieÙee~ Deye meoeeMeJe keâe eMe#ee yevo ne ieF~

Ùene meoeeMeJe Deeie Ûeuekeâj yeeyejeJe eJe<Ce heje[keâj nS~ ßee meKeejece ieCeMe oGmkeâj ve heje[keâj pee keâ Yeelej je<ŠØece keâe yeepe yeeÙee~ heeejJeeejkeâ GòejoeeÙelJe keâ keâejCe Gvn [ekeâ-leej eJeYeeie ce veekeâje keâjvee he[e~ ueekeâeve >eâeevlekeâeejÙee me ØeYeeeJele nekeâj Gvneve mejkeâeje veekeâje Úe[oe Deej ßee DejeJevo lee<e keâ oue ce Meeeceue ne ieS~ Fmee mevoYe ce Fvekeâe mechekeâ jemeeyeneje yeeme me nDee~ 1916 F0 ce keâuekeâòee keâ Skeâ e[hše meheejCšC[Cš Jemevle keâceej ceKepee keâe nlÙee keâ Deejehe ce Jen eiejHeleej ekeâS ieS ueekeâve Fme nlÙee me keâeF mecyevOe ve neve keâ keâejCe Gvn ejne keâj eoÙee ieÙee ekeâvle meceÙe-meceÙe hej heeueme keâe keâeHeâe Øelee[vee menvee he[e~

heje[keâj pee keâe 1919 F0 ce ceeoveehej (yeieeue) keâ Skeâ ieeJe ce vepejyevo jKee ieÙee~ keâÚ >eâeevlekeâeje meeLee Yee Gvekeâ meeLe Le~ Gme meceÙe Gvekeâe Gce ueieYeie 35 Je<e Lee~ 1920 F0 ce vepejyevoe me leye ceòeâ nS peye yeevoÙee keâe Deece ejneF nF~

heje[keâj pee ve oe eJeJeen ekeâÙe ekeâvle oevee heelveÙee DemeceÙe ne mJeieJeemee ne ieF~ >eâeevlekeâeje eJeÛeeje keâ Oevee heje[keâj pee ve 21 peve 1926 F0 keâe leemeje eJeJeen iJeeeueÙej keâe Skeâ yeeue-eJeOeJee me ekeâÙee ueekeâve leeve Je<e yeeo ne 3 ceeÛe 1929 F0 keâe leemeje helvee Yee Ûeue yemee~ eHeâj Gvneve Dehevee meeje peeJeve oMe, meceepe, he$ekeâeejlee Deej envoe keâ eJekeâeme keâe meceehele keâj eoÙee~ Gvneve keâeMee ce Yee >eâeevlekeâeje oue keâe mLeehevee keâe~ >eâeevlekeâeejÙee me Gvekeâe mecyevOe 1942 F0 lekeâ yevee jne~ 1938 F0 ce Jen DeeKeue YeejleeÙe envoe meeenlÙe mecceueve keâ eMeceuee DeeOeJeMeve keâ meYeeheele eveÙeòeâ ekeâS ieS~ 1950 F0 ce ceje"e meeenlÙe mecceueve keâ 33Je DeeOeJeMeve ce DeOÙe#e Le~ DeenvoeYee<ee nele nS Yee envoe keâe meJee keâ eueS 10 veJecyej 1953 F0 keâe je<ŠYee<ee ØeÛeej meceele, JeOee Éeje 1507 ®heS keâe cenelcee ieeOee hejmkeâej Øeoeve ekeâÙee ieÙee~ jele-eove keâ ßece Deej heeejJeeejkeâ meKe keâ DeYeeJe ce eoveeeove KeeKeuee nele ieS heje[keâj pee ve oe ceen keâe yeeceeje keâ yeeo 12 peveJeje 1955 F0 keâe Mejej lÙeeie eoÙee~

पत्रकार-जीवन—heje[keâj pee keâe he$ekeâeejlee keâe Me®Deele 1906 F0 ce 'envoe yeieJeemee' me nF~ Jeleve keâ ¤he ce Øeelecen heÛeeme ®heS eceuele Le~ keâÚ meceÙe yeeo 'enleJeelee' leLee Gmekeâ Ghejevle 'Yeejleece$e' ce Dee ieS~ 'enleJeelee' keâ mecheeokeâ Gvekeâ ceecee ßee meKeejece ieCeMe oGmkeâj Le~ Jen Gvne keâ Ùene jnle Le~ keâÚ eovee lekeâ cenejeâš me ØekeâeeMele neve Jeeue 'keâmeje' ce Yee keâece ekeâÙee~ Fmeme Gvekeâ peeJeve hej ueekeâceevÙe eleuekeâ keâe ØeYeeJe he[e~ 'enleJeelee' keâe meeenelÙekeâ he$e me jepeveeelekeâ he$e yeveeÙee Deej jepeveeelekeâ he$ekeâeejlee keâe Me®Deele keâe~ 1910-11 F0 ce 'enleJeelee' yevo ne ieÙee~ Fmekeâ yeeo Jen ßee DeecyekeâeØemeeo JeepeheÙee keâ menÙeeie me 'Yeejleece$e' ce meÙeòeâ mecheeokeâ eveÙeòeâ nS~

heje[keâj pee keâe he$ekeâeejlee ce eveKeej Deej Gmekeâe Ûejceelkeâ<e 1920 F0 ce keâeMee me ØekeâeeMele 'Deepe' ce Me¤ nDee~ Jen Me¤ ce 'Deepe' keâ mecheeokeâ ßee ßeeØekeâeMe pee keâ menÙeeiee jn, eHeâj Øeeve mecheeokeâ nS~ 'Deepe' keâe GöMÙe mhe° keâjle nS Gvneve eueKee ekeâ ''nceeje GöMÙe oMe keâ eueS meJeØekeâej me mJeelev$Ùe Gheepeve ne n~ nce nj yeele ce mJelev$e nevee Ûeenle n~ 1938 F0 ce ceenuee he$ekeâe 'keâceuee' (ceeemekeâ) keâe ØekeâeMeve ekeâÙee~ 1943 F0 ce 'memeej' keâ mecheeokeâ eveÙeòeâ nS~ ueekeâve 1947 F0 ce heve: ØeOeeve mecheeokeâ nekeâj 'Deepe' ce ueeš DeeS Deej peeJeveheÙevle Fmee ce yeve jn~ 1920 F0 ce 'Deepe' ce keâeÙe Me¤ keâjve keâ keâÚ meceÙe yeeo ne heje[keâj pee Gmeme Deueie ne ieS Le ueekeâve 1922 F0 ce heve: ueeš DeeS~ ßee ue#ceeMekeâj JÙeeme eueKele n—'' 'Deepe' ce leeve oMekeâe keâe Deeekeâe he$ekeâeejlee ve je<ŠYee<ee envoe keâe he$ekeâej keâuee keâe veÙee mJe¤he, veÙee eoMee Deej veJeeve ieele Øeoeve keâe~ heje[keâj pee keâe mecheeove-keâuee ve envoe he$ekeâeejlee keâe ceeveoC[emLej ekeâÙee leLee Gme YeejleeÙe he$ekeâeejlee ce ieJe Deej iejJe keâ heo hej Øeeleeÿele ekeâÙee~'' ...

प्राप्ति स्थान
विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

कन्नड़ साहित्यकार प्रोफेसर भैरप्पा को सरस्वती सम्मान

महज 11 साल की उम्र में जिसके सिर से माता पिता का साया उठ गया हो। इस पीड़ा से उबर पाते कि इससे पहले ही छोटे भाई और बहन भी प्लेग की भेंट चढ़ गए हों। इसके बावजूद पढ़ाई के प्रति ललक ज्ञान की देवी सरस्वती के ही किसी सच्चे साधक को होगी।

ज्ञान के ऐसे ही साधक को साहित्य के अग्रणी पुरस्कार सरस्वती सम्मान का सच्चा हकदार कहा जा सकता है। गरीबी और अकेलेपन की पीड़ा को झेलकर साहित्य सेवा करने वाले कन्नड़ लेखक प्रो० एस०एल० भैरप्पा को सरस्वती सम्मान से सम्मानित किये जाते समय उनकी संघर्ष कथा हर किसी के लिए प्रेरणादायी बन रही थी।

प्रो० भैरप्पा को कला और नैतिकता के बीच संतुलन की कुलबुलाहट पर आधारित उनके कन्नड़ उपन्यास 'मंद्र' के लिए 20वाँ सरस्वती सम्मान दिया गया। भारतीय सांस्कृतिक सहयोग परिषद के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह द्वारा सम्मान के तौर पर प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न एवं साढ़े सात लाख रु० की राशि प्रदान की गयी। 75 वर्षीय भैरप्पा सरस्वती सम्मान पाने वाले कन्नड़ के पहले रचनाकार हैं। उनके अब तक 22 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

अमरकांत, श्रीलाल शुक्ल और चंद्रशेखर कंबर को ज्ञानपीठ पुरस्कार

पैंतालीसवाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार हिन्दी के दो सुप्रसिद्ध लेखकों अमरकांत और श्रीलाल शुक्ल को संयुक्त रूप से दिया गया, जबकि 46वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार कन्नड़ के सुप्रसिद्ध लेखक चंद्रशेखर कंबर को दिया गया। ओड़िया कवि और ज्ञानपीठ पुरस्कार की प्रवर समिति के अध्यक्ष सीताकांत महापात्र की अध्यक्षता में हुई ज्ञानपीठ पुरस्कार चयन समिति की बैठक में उपस्थित दूसरे सदस्यों में प्रो० मैनेजर पाण्डेय, डॉ० के० सच्चिदानन्दन, प्रो० गोपीचंद नारंग, गुरदयाल सिंह, केशुभाई देसाई, दिनेश मिश्र और रवींद्र कालिया शामिल थे। ज्ञानपीठ पुरस्कार के अन्तर्गत वाग्देवी सरस्वती की कांस्य प्रतिमा, प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्रम् के अतिरिक्त 45वें पुरस्कार में अमरकांत और श्रीलाल शुक्ल हेतु पाँच-पाँच लाख रुपये और 46वें पुरस्कार में चन्द्रशेखर कंबर हेतु सात लाख रुपये की राशि शामिल है।

साहित्य को शासन का प्रणाम

वह क्षण गौरवशाली था लेकिन हृदयस्पर्शी, जब शासन ने अस्पताल तक जाकर साहित्य का सम्मान किया। राज्यपाल बी०एल० जोशी हाथों में प्रतीक चिह्न लिए अस्पताल के आई०सी०यू० में पहुँचे। सामने बिस्तर पर थे वरिष्ठ उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल। वह बोल तो कुछ नहीं पाए लेकिन उनके चेहरे के भाव बता रहे थे कि उन्हें राज्यपाल के आने का भान हो चुका है। डॉक्टरों की मदद से श्रीशुक्ल ने हाथ आगे बढ़ाया और राज्यपाल ने उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित किया।

शहरयार ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

पिछले दिनों दिल्ली में प्रख्यात शायर प्रो० अखलाक मोहम्मद खान 'शहरयार' को वर्ष 2008 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। शहरयार को नज्म और गजल को ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए इस प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान से फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन ने सम्मानित किया। शहरयार को प्रशस्ति पत्र के साथ वाग्देवी की प्रतिमा एवं सात लाख रुपये की राशि भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बच्चन ने कहा कि शहरयार के शब्दों की जादूगरी के सभी कायल हैं। शहरयार ने हिन्दी और उर्दू के बीच की काल्पनिक दीवार को ढहा दिया है। अमिताभ ने कहा कि जिस समाज में कला का सम्मान नहीं होता वह समाज जर्जर हो जाता है।

1936 में उत्तर प्रदेश के बरेली में जन्मे शहरयार को साहित्य अकादेमी, उर्दू अकादेमी, अदबी संगम, फिराक और गालिब इंस्टीट्यूट पुरस्कारों से भी अलंकृत किया जा चुका है।

शहरयार को 'नूर-ए-वतन' अवार्ड भी

लन्दन। शहरयार को लन्दन में 'नूर-ए-वतन' पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह सम्मान अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी एल्यूमनी एसोसिएशन, यू०के० द्वारा दिया जाता है। यह विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों का संगठन है। शहरयार भी इस विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। सर सैयद दिवस समारोह के अवसर पर शहरयार को यह सम्मान दिया गया।

5.51 लाख का हिन्दी साहित्य पुरस्कार

हिन्दी साहित्य में सराहनीय योगदान देने वाले साहित्यकारों के लिए इफको ने पाँच लाख 51 हजार रुपये का 'इफको हिन्दी साहित्य पुरस्कार' शुरू करने की घोषणा की है। उर्वरकों का सबसे अधिक उत्पादन और विपणन करने वाली सहकारी संस्था के प्रबन्ध निदेशक उदय शंकर अवस्थी ने बताया कि यह पुरस्कार हर वर्ष दिया जाएगा। इस वर्ष हिन्दी के विशिष्ट कथाकार विद्यासागर नौटियाल को प्रथम श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। 24 नवम्बर को एनडीएमसी सभागार, दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में केन्द्रीय कृषि मंत्री शरद पवार ने नौटियाल को सम्मान स्वरूप एक प्रशस्ति पत्र, शील्ड और 5,51,000 रुपये की राशि प्रदान की।

अखिल भारतीय हिन्दी सेवा पुरस्कार

पुणे विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, सुप्रतिष्ठित प्राध्यापक, प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० आनंदप्रकाश दीक्षित को महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्यमंत्री तथा अकादमी के अध्यक्ष श्री संजय देवतले के हाथों हिन्दी दिवस के अवसर पर 'अखिल भारतीय हिन्दी सेवा पुरस्कार' मुंबई में समारोहपूर्वक प्रदान किया गया। इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख रुपए का धनादेश, गौरव स्मृति चिह्न, सम्मान पत्र, शाल-श्रीफल का समावेश है।

इसके पूर्व डॉ० दीक्षित जी को जुलाई 2011 में इंदौर में श्रीमध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के शताब्दी समारोह के अवसर पर प्रथम अखिल भारतीय पुरस्कार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के हाथों प्रदत्त किया गया था जिसमें एक लाख रुपये का धनादेश, सम्मान पत्र, गौरव स्मृति चिह्न, शाल-श्रीफल का समावेश था।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा वर्ष 2008 एवं 2009 के पुरस्कारों की घोषणा

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने वर्ष 2008 एवं 2009 के लिए पुरस्कारों की घोषणा निम्नवत् की है :

गंगाशरण सिंह पुरस्कार (हिन्दी प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी प्रशिक्षण) (2008) गिरीश कर्नाड, माधुरी छेड़ा और बल्ली सिंह चीमा। (2009) वाई लक्ष्मी प्रसाद, मधुर भण्डारकर, दामोदर खडसे एवं चमनलाल सप्रू। **गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार** (हिन्दी पत्रकारिता तथा रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए) (2008) पंकज पचौरी तथा विनोद अग्निहोत्री। (2009) ब्रजमोहन बख्शी एवं बलराम। **आत्माराम पुरस्कार** (वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य और उपकरण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए) (2008) प्रो० यशपाल, मुहम्मद खलील। (2009) सुभाष लखेड़ा, नरेन्द्र सहगल। **सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार** (हिन्दी के विकास से सम्बन्धित सर्जनात्मक/आलोचनात्मक क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए) (2008) नंदकिशोर आचार्य एवं विजय बहादुर सिंह। (2009) अजित कुमार तथा गोपाल चतुर्वेदी। **महापण्डित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार** (हिन्दी में खोज, संधान एवं यात्रा विवरण आदि) (2008) गोपाल राय, डॉ० विमलेश कांति वर्मा। (2009) डॉ० हरिमोहन, डॉ० विक्रम सिंह। **डॉ० जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार** (विदेशी हिन्दी विद्वान् को विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य के लिए (2008) हरमन वैन ऑलफन (यू०एस०ए०)। (2009) ली जंग हो (कोरिया)

तथा 'पद्मभूषण डॉ० मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार' सुश्री पूर्णिमा बर्मन व श्री सुरेन्द्र गम्भीर को दिया जाएगा। पुरस्कार-स्वरूप एक लाख रुपए की राशि राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में दी जाएगी।

'नई धारा' के रचना सम्मान

ग्राम-संवेदना के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री विवेकी राय को 'नई धारा' साहित्यिक पत्रिका द्वारा वर्ष 2011 का पाँचवाँ 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान' देने की घोषणा की गई है, जिसके अन्तर्गत उन्हें एक लाख रुपए सहित सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न आदि अर्पित किए जाएंगे। प्रख्यात कथाकार मधुकर सिंह, लेखिका डॉ० ऋता शुक्ल तथा कथाकार बलराम भी वर्ष 2011 के 'नई धारा रचना सम्मान' से सम्मानित किये जाएँगे, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक लेखक को 25-25 हजार रुपए सहित सम्मान पत्र, प्रतीक चिह्न आदि अर्पित किए जाएँगे।

डॉ० सरोजिनी महिषी को 'हिन्दी रत्न सम्मान'

विगत दिनों राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन की 130वीं जयन्ती के अवसर पर नई दिल्ली के हिन्दी भवन के सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रबल पक्षधर डॉ० सरोजिनी महिषी को 'हिन्दी रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षा न्यायमूर्ति सुश्री ज्ञानसुधा मिश्रा, मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री विकास श्रीधर सिरपुरकर, श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, श्री रामनिवास लखोटिया, पद्मश्री गीता चंद्रन एवं डॉ० रत्ना कौशिक ने क्रमश: एक लाख रुपए की राशि, प्रशस्ति पत्र, वाग्देवी की प्रतिमा, रजत श्रीफल, शॉल और पुष्पाहार आदि सम्मान-स्वरूप प्रदान किए।

श्री रामपद चौधरी पुरस्कृत

विगत दिनों दिल्ली में इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ प्लानिंग एवं मैनेजमेंट द्वारा आयोजित समारोह में संस्थान के संस्थापक निदेशक डॉ० मलय चौधरी ने बांग्ला उपन्यासकार श्री रामपद चौधरी को 'रवीन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार' स्वरूप एक करोड़ रुपए और स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर आयोजित सेमिनार में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर लॉर्ड मेघानद देसाई, सर्वश्री मलय चौधरी, मोहन मुनासिंघे, बिंदेश्वर पाठक और अरिंदम चौधरी ने भाग लिया।

रमेशचंद्र शाह को 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान'

विगत दिनों मध्य प्रदेश सरकार ने विविध विधाओं के लिए राष्ट्रीय संस्कृति सम्मानों की घोषणा की है। साहित्य के क्षेत्र में स्थापित दो लाख रुपए का 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' जाने-माने कवि और लेखक रमेशचंद्र शाह को दिया जाएगा। रूपंकर कला के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' प्रख्यात चित्रकार जैराम पटेल को मिलेगा। लोक-कलाओं के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान' कालबेलिया नृत्य की मशहूर कलाकार गुलाबो को, 'राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान' व्यंग्यकार के०पी० सक्सेना को, 'राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान' पुणे के मशहूर गायक पं० संजीव अभ्यंकर को, शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' केरल के गुरु कलामंडलम गोपी को, शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में 'राष्ट्रीय कालिदास सम्मान' बनारस घराने के विख्यात गायक पण्डित छन्नूलाल मिश्रा को, लोक कलाओं के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय तुलसी सम्मान' चेन्नई के कलाकार रंगास्वामी बेडार को तथा उर्दू साहित्य के क्षेत्र में स्थापित 'राष्ट्रीय इकबाल सम्मान' गोपीचंद्र नारंग को प्रदान किया जायेगा।

'मातृभूमि पुरस्कार' सुकुमार को

मशहूर साहित्य आलोचक डॉ० सुकुमार अझीकोड को मलयाली अखबार 'मातृभूमि' के साहित्यिक पुरस्कार के लिए चुना गया है। 'मातृभूमि' के अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक एम०पी० वीरेन्द्र कुमार ने विगत दिनों कोझीकोड से जारी विज्ञप्ति में कहा कि इसके अन्तर्गत दो लाख रुपए की पुरस्कार राशि, एक प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र भी दिया जाता है।

मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद के पुरस्कार

भोपाल के भारत भवन में मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद् की साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2008 की श्रेष्ठ कृतियों पर पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। वरिष्ठ हिन्दी कवि श्री उद्भ्रान्त को उनकी लम्बी कविता 'अनाद्यसूक्त' के लिए अकादमी का वर्ष 2008 का अखिल भारतीय भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार, निबन्ध संग्रह 'विवेचना के सुर' के लिए प्रो० शरद नारायण खरे (मंडला) को माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, 'एक अचानक शाम' पर कहानी के लिए मनमोहन सरल (मुंबई) को मुक्तिबोध पुरस्कार, उपन्यास 'काहे री नलिनी' के लिए उषा यादव (आगरा) को वीरसिंह देव पुरस्कार और आलोचना पुस्तक 'गाँधी : पत्रकारिता के प्रतिमान' के लिए डॉ० कमलकिशोर गोयनका (दिल्ली) को आचार्य रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

सभी पुरस्कृत रचनाकारों को नारियल, शॉल, सम्मान-पत्र के साथ इक्यावन हजार रुपये की धनराशि प्रदेश के संस्कृति मंत्री माननीय श्री लक्ष्मीकांत शर्मा द्वारा प्रदान की गयी।

'परम्परा' संस्था के सम्मान : 2011

राजधानी की साहित्यिक संस्था 'परम्परा' द्वारा वरिष्ठ गजलकार और काव्यकार, राजनेता श्री उदय प्रताप सिंह को उनके समग्र योगदान हेतु 'परम्परा विशिष्ट ऋतुराज सम्मान' दिया गया। डॉ० जितेन्द्र श्रीवास्तव एवं सुश्री अलका सिन्हा को उनके काव्य-संकलनों (क्रमश:) 'असुन्दर-सुन्दर' और 'तेरी रोशनाई रोना चाहती है' को वर्ष 2011 के 'परम्परा ऋतुराज सम्मान' के लिए संयुक्त रूप से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप 51 हजार रुपये की राशि, अंगवस्त्रम्, स्मृति-चिह्न प्रदान किये गये।

'बाल साहित्य पुरस्कार-2011' घोषित

विगत दिनों त्रिश्शूर में साहित्य अकादेमी ने 24 पुस्तकों को बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की। सर्वश्री गुलाम नबी आतश (कश्मीरी), स्नेहलता राई (नेपाली), दर्शन सिंह आश्ट (पंजाबी), अभिराज राजेन्द्र मिश्र (संस्कृत), नूहुम हेम्ब्रह्म (संताली), एम०एल० थगप्पा (तमिल), और आदित्य असीर देहलवी (उर्दू) को उनके काव्य-संग्रहों; सर्वश्री बंदिता फुकन (असमिया), सिद्धार्थ शर्मा (अंग्रेजी), हुंदराज बलवानी (सिंधी), एन० डी'सूजा (कन्नड़), गजानन जोग (कोंकणी), और के० पापूट्टि (मलयालम) को उनके उपन्यासों; सुश्री के० शान्तिबाला देवी (मणिपुरी) को उनकी लोककथा एवं नाटक आधारित पुस्तक; सर्वश्री महेश्वर नार्ज्जारी (बोडो), मायानाथ झा (मैथिली), दिलीप प्रभवळकर (मराठी), हरीश बी० शर्मा (राजस्थानी) और एम० भूपाल रेड्डी (तेलुगु) को उनके कहानी-संग्रहों; सर्वश्री सेलेन घोष (बंगला), श्यामदत्त 'पराग' (डोगरी), (स्व०) रमेश पारिख (गुजराती), हरिकृष्ण देवसरे (हिन्दी) और महेश्वर मोहांति (ओड़िया) को उनके द्वारा बाल साहित्य में दिए गए योगदान हेतु 'बाल साहित्य पुरस्कार 2011' से नवम्बर 2011 में सम्मानित किया जाएगा। सम्मान-स्वरूप एक उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल और पचास हजार रुपए की राशि दी जाएगी।

जूलियन बार्न्ज को बुकर पुरस्कार

27 वर्ष पूर्व मिले पहले नामांकन के बाद ब्रिटिश लेखक जूलियन बार्न्ज को आखिरकार मेन बुकर पुस्कार मिल गया। उन्हें उपन्यास 'द सेंस ऑफ एन एंडिंग' के लिए इस सम्मान से सम्मानित किया गया। 150 पृष्ठ का यह उपन्यास मध्यम आयु के एक व्यक्ति के बचपन और युवावस्था की स्मृतियों को टटोलता है।

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

स्वीडन के कवि टॉमस गोस्टा ट्रांसट्रोमर को साहित्य का 'नोबल पुरस्कार'

स्वीडन के कवि टॉमस ट्रांसट्रोमर को साहित्य क्षेत्र में 2011 के 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। इंसानी दिमाग के रहस्यों को अपनी कलम से पिरोने वाले ट्रांसट्रोमर दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के अग्रणी रचनाकारों में हैं। स्वीडिश अकादमी ने कहा कि उन्होंने 80 साल के कवि को चुना, क्योंकि अपनी ठोस और स्पष्ट कल्पनाओं से ये यथार्थ को नया आयाम देते हैं। पुरस्कार में उन्हें एक करोड़ क्रोनोर यानी 15 लाख अमेरिकी डालर की राशि दी जाएगी। ट्रांसट्रोमर को 1990 में पक्षाघात हुआ, जिसके बाद उनके आधे शरीर को लकवा मार गया। वे बोल पाने में अक्षम हो गए, लेकिन उन्होंने लिखना जारी रखा। 2004 में उनका कविता-संग्रह 'द ग्रेट इनिग्मा' प्रकाशित हुआ। उनकी लोकप्रिय रचनाओं में 1966 में लिखी गई 'विंडोज एंड स्टोंस' और 1974 की 'बाल्टिक्स' शामिल है। उनकी रचनाओं का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

ट्रांसट्रोमर का जन्म 15 अप्रैल, 1931 में स्टॉकहोम में हुआ। स्टॉकहोम में सोड्रा लैटिन स्कूल में पढ़ाई के दौरान वे कविता लिखने लगे थे और 23 साल की उम्र में उनका संग्रह 'सेवेनटीन पोएम्स' प्रकाशित हुआ। उन्होंने स्टॉकहोम विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान की डिग्री ली। बाद में वे मनोवैज्ञानिक के रूप में सक्रिय रहे।

टॉमस ट्रांसट्रोमर भारत भी आए हैं। 1989 में भारत भवन (भोपाल) में आयोजित 'विश्व कविता' समारोह में उन्होंने सहभागिता की थी। उनके अब तक पन्द्रह से भी अधिक काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं, जिनमें प्रमुख हैं—'द सोरो गोंडोला', 'द हाफ फिनिश्ड हैवन', 'फोर द लिविंग एंड द डेड' तथा 'पाथ्स' आदि।

चीन के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार से भारतीय प्रोफेसर सम्मानित

इस वर्ष चीनी अध्ययन के प्रति योगदान, अनुवाद, चीनी पुस्तकों के प्रकाशन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए 'विशिष्ट पुस्तक पुरस्कार' दून यूनिवर्सिटी, देहरादून में चीनी भाषा के अतिथि प्रोफेसर तथा भाषा संकाय के डीन प्रो० बी०आर० दीपक को प्रदान किया गया। प्रो० दीपक इस पुरस्कार के लिए चुने गए पाँच अन्तरर्राष्ट्रीय लेखकों में एक और पहले भारतीय हैं। प्रो० दीपक को 88 क्लासिकल चीनी कविताओं के हिन्दी अनुवाद हेतु चीन का यह सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार दिया गया। यह कविताएँ 11वीं से 14वीं शती ईसापूर्व में लिखी गई थीं।

नवतेज सरना को सिख विरासत पुरस्कार

विगत दिनों न्यूयॉर्क के वरिष्ठ भारतीय राजनयिक नवतेज सरना सहित तीन प्रमुख सिखों को सिखों के उत्थान में उनकी भूमिका के लिए 'सिख विरासत पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। सिख आर्ट एंड फिल्म फाउंडेशन की ओर से न्यूयॉर्क में नवतेज सरना को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इजराइल में भारतीय राजूदत सरना दो उपन्यासों (दी एग्जाइल, वी वर नाट लवर्स लाइक दैट) के लेखक भी हैं। दोनों पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद क्रमश: 'एक निर्वासित महाराजा' तथा 'हम यूं आशना न थे' शीर्षक से किया गया है। सरना के अलावा स्टैंडर्ड चार्टर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (एशिया) जसपाल बिंद्रा तथा फिल्म निर्माता गुरिंदर चड्ढा को भी यह पुरस्कार दिया गया।

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के पुरस्कार

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग, नई दिल्ली के मुख्यालय में आयोजित 'पुरस्कार अर्पण समारोह' में आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति के०जी० बालाकृष्णन के हाथों पुरस्कार प्रदान किए गए। मौलिक श्रेणी में डॉ० सुभाष शर्मा को उनकी कृति 'भारत में मानवाधिकार' को प्रथम (रुपए पचास हजार), मनोहर बाथम को उनकी कृति 'अस्तित्व का संकट और मानवाधिकार' के लिए द्वितीय (रुपए चालीस हजार), डॉ० श्रीमती स्वाति तिवारी को उनकी कृति 'अकेले होते लोग' के लिए भी द्वितीय (रुपए चालीस हजार), अर्जुन सिंह रावत को उनकी औपन्यासिक कृति 'बटमार' के लिए तृतीय (रुपए तीस हजार) तथा दस-दस हजार रुपए राशि के प्रोत्साहन पुरस्कार डॉ० श्रीमती ममता चंद्रशेखर एवं डॉ० कन्हैया त्रिपाठी को उनकी क्रमश: कृतियों : 'मानवाधिकार और महिलाएँ', 'आदिवासी समाज और मानवाधिकार' हेतु। साथ ही अनुवाद श्रेणी में डॉ० गौरीशंकर रैणा को 25000/- का पुरस्कार उनकी अनूदित किताब 'रंग-राजतरंगिणी' को दिया गया।

धीरेन्द्र अस्थाना को छत्रपति शिवाजी पुरस्कार

वरिष्ठ कहानीकार और राष्ट्रीय सहारा के मुंबई ब्यूरो प्रमुख धीरेन्द्र अस्थाना को महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादेमी ने छत्रपति शिवाजी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया है। धीरेन्द्र अस्थाना को 51 हजार रुपए का यह सम्मान उनके समग्र साहित्यिक लेखन को देखते हुए दिया गया है। उन्हें शॉल, श्रीफल, ट्रॉफी और राशि का चेक महाराष्ट्र की संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती फौजिया खान ने प्रदान किया।

डॉ० प्रवेश सक्सेना को सम्मान

संस्कृत अकादमी, दिल्ली द्वारा संस्कृत काव्य रचना की आजीवन सर्जना हेतु डॉ० प्रवेश सक्सेना को वर्ष 2008-09 के 'पण्डितराज जगन्नाथ सम्मान' से अलंकृत किया गया है। पिछले दिनों दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्हें उक्त सम्मान के अन्तर्गत पचास हजार रुपए की राशि, सरस्वती प्रतिमा, श्रीफल, उत्तरीय एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये।

राजेन्द्र यादव को शब्द साधक शिखर सम्मान

जे०सी० जोशी स्मृति साहित्य सम्मान के अन्तर्गत चौथे 'शब्द साधक शिखर सम्मान' से हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार और 'हंस' के सम्पादक राजेन्द्र यादव को सम्मानित किया गया।

हिमाचली भाषा सम्मान अर्पित

''कोई भी भाषा या बोली किसी मान्यता या प्रमाण से सिद्ध नहीं होती, बल्कि उस भाषा में लिखा जा रहा उत्कृष्ट लेखन ही उसे समृद्ध बनाता है।'' यह विचार साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने विगत दिनों शिमला में अकादेमी द्वारा आयोजित 'भाषा सम्मान अर्पण समारोह' में हिमाचली भाषा के लिए पुरस्कृत लेखकों को सम्मानित करते समय व्यक्त किये। इस आयोजन में हिमाचली भाषा के लिए दो साहित्यकारों गौतमचंद शर्मा 'व्यथित' और प्रत्यूश गुलेरी को 'भाषा सम्मान 2007' से सम्मानित किया गया। दोनों साहित्यकारों को स्मृति चिह्न और 25-25 हजार रुपए की सम्मान राशि दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार हिमांशु जोशी थे।

'आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान'

दिल्ली में कथाक्रम समिति द्वारा श्रीलाल शुक्ल की अध्यक्षता में वर्ष 2011 का 'आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' कथाकार श्री स्वयंप्रकाश को देने की घोषणा की गई। सम्मान-स्वरूप प्रतीकों में 15 हजार रुपए की राशि, सम्मान-चिह्न तथा सम्मान-पत्र शामिल हैं।

'स्पंदन' के पुरस्कार घोषित

विगत दिनों भोपाल में ललित कलाओं के लिए समर्पित स्पंदन संस्थान द्वारा स्थापित पुरस्कारों की शृंखला में 'स्पंदन शिखर सम्मान' श्री कामतानाथ को, 'स्पंदन साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार' श्री अखिलेश को, 'स्पंदन कृति पुरस्कार' श्री योगेंद्र आहूजा को, 'स्पंदन आलोचना पुरस्कार' श्री ज्योतिष जोशी को तथा 'स्पंदन कृति पुरस्कार' श्री आर० चेतनक्रांति को दिसम्बर में भारत भवन में आयोजित सम्मान समारोह में दिया जाएगा। सम्मान-स्वरूप ग्यारह हजार रुपए की राशि, शॉल, श्रीफल एवं स्मृति-चिह्न दिए जाएँगे।

भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में शोधछात्र अनुज लुगुन को इस वर्ष का प्रतिष्ठित भारत भूषण अग्रवाल युवा पुरस्कार दिया जाएगा। 35 वर्ष के कम आयु के युवा कवि को मिलने वाला यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उन्हें उनकी कविता 'अघोषित उलगुलान' के लिए मिला है, जो 'प्रगतिशील वसुधा' के अप्रैल-जून 2010 के अंक में छपी थी।

'श्रीकृष्ण चरित' अब गुजराती भाषा में

डॉ॰ भवानीलाल भारतीय लिखित महाभारत पर आधारित 'श्रीकृष्ण चरित' अब गुजराती भाषा में अनूदित होकर भरूच (गुजरात) से प्रकाशित हुआ है। इस पर ग्रन्थ लेखक को दस हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया है। श्रीकृष्ण चरित का प्रथम संस्करण 1956 में हिन्दी में प्रकाशित हुआ था। तब से अब तक इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं। 1982 में यह ग्रन्थ पं॰ गंगाप्रसाद उपाध्याय साहित्य पुरस्कार से भी पुरस्कृत हो चुका है।

हिन्दी रत्न सम्मान

विगत दिनों हिन्दी-दिवस पखवाड़े के अंतर्गत राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार एवं 'बालवाटिका' के सम्पादक डॉ॰ भैरूंलाल गर्ग को उनके द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन की दृष्टि से किए जा रहे कार्यों के लिए 'हिन्दी रत्न' सम्मान में प्रशस्ति पत्र, शॉल, स्मृति चिह्न के साथ इक्कीस सौ रुपए की नकद राशि भेंटकर सम्मानित किया गया।

युवा साहित्यकार सम्मान-2011

लखनऊ। ''साहित्यकारों का सम्मान केवल साहित्यकार विशेष का सम्मान नहीं होता अपितु समाज को दिशा देने वाले श्रेष्ठ विचारों का सम्मान होता है। साहित्य सृजन करने का मान बढ़े व उन्हें और प्रभावी लेखन की प्रेरणा मिल सके। इस निमित्त सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं के द्वारा साहित्यकारों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।''

उक्त विचार भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा आयोजित पं॰ प्रतापनारायण मिश्र-स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान समारोह में समारोह के अध्यक्ष, प्रख्यात आलोचक एवं उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष श्री गोपाल चतुर्वेदी ने व्यक्त किये। चालीस वर्ष आयु तक के श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाधर्मिता हेतु पुरस्कृत होने वालों में काव्य विधा के लिए श्री अरविन्द 'पथिक', कथा साहित्य के लिए नई दिल्ली के अखिलेश द्विवेदी 'अकेला' को, बाल-साहित्य के लिए पौड़ी गढ़वाल के मनोहर चमोली 'मनु' को, पत्रकारिता विधा के लिए लखनऊ की अपर्णा रस्तोगी, संस्कृत के लिए हरिद्वार के डॉ॰ प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप' तथा राजस्थानी साहित्य के लिए बीकानेर, राजस्थान के डॉ॰ मदन गोपाल लढ़ा को पं॰ प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान 2011 से सम्मानित किया गया।

प्रत्येक साहित्यकार को सम्मान स्वरूप सरस्वती प्रतिमा, अंगवस्त्र, श्री फल के साथ-साथ 5000/- रुपये की सम्मान राशि प्रदान की गई।

'वयोवृद्ध साहित्यकार सम्मान'

बिहार के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, भारतीय भाषा साहित्य समागम के अध्यक्ष श्री नृपेन्द्रनाथ गुप्त, सम्पादक, 'नया भाषा-भारती-संवाद' को उनकी उत्कृष्ट साहित्य सेवा को दृष्टिगत रखते हुए बिहार सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2010-11 में वयोवृद्ध साहित्यकार सम्मान पुरस्कार से पटना स्थित बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् सभागार में बिहार के मानव-संसाधन विकास मंत्री श्री पी॰के॰ शाही द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री गुप्त को सम्मान राशि 11,000/- रु॰ के साथ प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्रम् प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मैथिली को सम्मान

पिछले दिनों दरभंगा में मैथिली-भाषा के वयोवृद्ध साहित्यकार श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' को साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता प्रदान की गयी। इस अवसर पर अकादमी के उपाध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि वे लेखकों की उस श्रेणी के हैं जिन्होंने अपने कृतित्व से साहित्य को नयी दिशा दी है। श्री 'अमर' ने अपने सम्मान को मैथिली का सम्मान बताया।

'प्रमोद वर्मा आलोचना सम्मान'

विगत दिनों रायपुर में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में वर्ष 2011 का 'प्रमोद वर्मा आलोचना सम्मान' साहित्यकार डॉ॰ कृष्णदत्त पालीवाल को तथा 'युवा आलोचना सम्मान' श्री प्रफुल्ल कोलारकाल को प्रदान किया गया। सम्मान-स्वरूप दोनों आलोचकों को क्रमश: 21 एवं 11 हजार रुपए, प्रतीक चिह्न, शॉल, श्रीफल दिए गए। इस अवसर पर आलोचकों ने हिन्दी की समकालीन आलोचना पर विचार व्यक्त किए।

'कविता कोश सम्मान' समारोह

विगत दिनों जयपुर में जवाहर कला केन्द्र के कृष्णायन सभागार में प्रथम 'कविता कोश सम्मान' समारोह में श्री प्रेमचंद गाँधी को कविता कोश का नया सम्पादक घोषित किया गया। 'कविता कोश सम्मान 2011' हेतु दो वरिष्ठ कवियों श्री नरेश सक्सेना एवं श्री बल्ली सिंह चीमा को 11000 रुपए नकद, कविता कोश सम्मान पत्र और कविता कोश ट्रॉफी प्रदान की गई तथा पाँच युवा कवियों सर्वश्री दुष्यन्त, श्रद्धा जैन, अवनीश सिंह चौहान, सिराज फैसल खान एवं पूनम तुषामड़ को सम्मान-स्वरूप 5000 रुपए नकद, सम्मान पत्र और कविता कोश ट्रॉफी प्रदान की गई।

'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-2011'

इस वर्ष का 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' डॉ॰ हरमहेन्द्र सिंह बेदी को 'साहित्य-मण्डल' श्रीनाथद्वारा के तत्त्वावधान में आयोजित प्रभु श्री श्रीनाथजी के 'पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह' एवं 'हिन्दी लाओ-देश बचाओ समारोह' के शुभ अवसर पर 14 सितम्बर को दिया गया। सम्मान-स्वरूप श्रीफल, शॉल, उत्तरीय, श्रीनाथजी का प्रसाद, श्रीनाथजी के हाथ कलम का चित्र, अभिनन्दन एवं सम्मान पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि प्रदान की गयी।

'मीरा-स्मृति सम्मान समारोह'

विगत दिनों इलाहाबाद में मीरा फाउंडेशन द्वारा आयोजित मीरा स्मृति सम्मान समारोह में प्रो॰ ए॰ अरविन्दाक्षन, डॉ॰ जगन्नाथ पाठक, श्री गिरीश पाण्डे तथा प्रो॰ उषा यादव को उनकी उपलब्धियों के लिए 'मीरा-स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ॰ चंद्रकान्त त्रिपाठी थे। प्रथम सत्र में श्री दूधनाथ सिंह की पुस्तक 'तू फू', श्री चंचल चौहान की पुस्तक 'हिन्दी कथा साहित्य : विचार और विमर्श', श्री अमरेन्द्र कुमार शर्मा की पुस्तक 'आपातकाल : हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता', श्री हीरालाल की पुस्तक 'कस्में हीरालाल' तथा श्री जमीर अहसन की पुस्तक 'सौ गजलें' का विमोचन किया गया। द्वितीय सत्र में डॉ॰ कमला प्रसाद की 'नेह के नाते', श्री श्रीराम वर्मा की 'जस्ट फिट', श्री लीलाधर मंडलोई की 'मनवा बेपरवाह', श्री ललित सुरजन की 'नील नदी की सावित्री' तथा श्री वर्षा अग्रवाल की 'मुक्तिबोध का रचना-संसार' पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

दिव्य पुरस्कार

स्व॰ अम्बिकाप्रसाद दिव्य की स्मृति में साहित्य सदन, भोपाल द्वारा प्रदत्त दिव्य पुरस्कारों की घोषणा भोपाल में आयोजित एक सादे समारोह में दिव्य पुरस्कारों के संयोजक एवं 'दिव्यालोक' के सम्पादक श्री जगदीश किंजल्क ने की। उपन्यास विधा का, पाँच हजार रुपये राशि का दिव्य पुरस्कार दिल्ली के श्री अखिलेश द्विवेदी को उनके उपन्यास 'अनधिकृत' को, इक्कीस सौ रुपये राशि के दो पुरस्कार क्रमशः खरगोल के कहानीकार श्री भालचंद्र जोशी (कृति-चरसा) और दिल्ली के शायर श्री आलोक श्रीवास्तव (कृति-आमीन) को दिये जायेंगे। दिव्य रजत अलंकरण प्राप्त रचनाकार हैं—श्री राधेलाल बिजधावने, भोपाल (उपन्यास-छोटी छोटी छतों वाले मकान), डॉ॰ सतीश दुबे, इंदौर (कहानी संग्रह-धुंध के विरुद्ध), श्री महेश अग्रवाल, भोपाल (ग़ज़ल संग्रह—जो कहूँगा, सच कहूँगा), डॉ॰ श्रीमती सी॰जे॰ प्रसन्नकुमारी, तिरुवनन्तपुरम (निबन्ध संग्रह-भाषा, साहित्य और संस्कृति चिंतन के कण), डॉ॰

रवि शर्मा, दिल्ली (नाटक—विरासत), श्री अश्वनी कुमार पाठक, सीहोरा (बाल साहित्य-तुम धरती के राज दुलारे), डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़ (समालोचना—हिन्दी नाटक एवं रंगमंच), श्री चंद्र मोहन दिनेश, शाहजहाँपुर एवं श्री आनन्द सिन्हा, भोपाल ('साक्षात्कार' पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन हेतु)।

'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' प्रदत्त

विगत दिनों दिल्ली में पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हरियाणा साहित्य अकादमी के पूर्व निदेशक डॉ० जयनारायण कौशिक को उनकी पाण्डुलिपि 'एक पंथ दो काज' के लिए 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' स्वरूप सोलह हजार रुपए की नकद राशि प्रदान की गई।

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' को सम्मान

हिन्दी के शताधिक ग्रन्थों के प्रणेता साहित्यकार प्रोफेसर (डॉ०) रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' को कोलकाता की भारतीय वाङ्मय पीठ (साहित्य, संस्कृति एवं कला को समर्पित साहित्यिक संस्था) द्वारा पिछले दिनों 'कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर सारस्वत साहित्य सम्मान' से अलंकृत किया गया है। डॉ० दिनेश को देश की कई प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित एवं अलंकृत किया जा चुका है।

आचार्य शिवपूजन सहाय स्मृति सम्मान

विगत दिनों बक्सर (बिहार) में आयोजित आचार्य शिवपूजन सहाय स्मृति व्याख्यानमाला सह सम्मान समारोह में वरिष्ठ पत्रकार पंकज बिष्ट को साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु 'प्रथम आचार्य शिवपूजन सहाय स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया।

राज बुद्धिराजा को 'स्वयंसिद्धा सम्मान'

हिन्दी की जानी-मानी साहित्यकार राज बुद्धिराजा को विगत दिनों भोपाल में ओजस्विनी अलंकरण 'स्वयंसिद्धा' से अलंकृत किया गया। यह सम्मान उन्हें हिन्दी की दीर्घकालीन सेवा के लिए प्रदान किया गया। लेखकों, साहित्यकारों, राजनतिज्ञों की उपस्थिति में शंख-ध्वनि के बीच तिलक लगाकर एक पौधा, नारियल, शॉल, प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक-चिह्न तथा ग्यारह हजार रुपए की धनराशि उन्हें भेंट की गई।

शाहिदा शबनम को 'संस्कृति पुरस्कार'

संस्कृति प्रतिष्ठान दिल्ली ने इस वर्ष साहित्य के लिए संस्कृति पुरस्कार कश्मीरी भाषा की युवा लेखिका शाहिदा शबनम को देने की घोषणा की है। प्रतिष्ठान ने पत्रकारिता के लिए राणा अय्यूब, कला के लिए अभिषेक हजरा, संगीत के लिए मुराद अली और सामाजिक उपलब्धि के लिए विनायक लोहानी के नामों की घोषणा 'संस्कृति पुरस्कार' के लिए की है।

घोषणा करते हुए प्रतिष्ठान की पुरस्कार समिति के अध्यक्ष अशोक वाजपेयी ने कहा कि संस्कृति पुरस्कार एक समारोह में पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम देंगे। पुरस्कार में पचास हजार रुपये की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र भी शामिल है।

भोजपुरी स्वाभिमान समारोह

विगत दिनों दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित समारोह में 'दैनिक जागरण' नोएडा के मुख्य महाप्रबन्धक निशिकान्त ठाकुर को सिने अभिनेता व सांसद शत्रुघ्न सिन्हा की उपस्थिति में वयोवृद्ध गाँधीवादी व पूर्व राज्यपाल डॉ० भीष्म नारायण सिंह ने भोजपुरी गौरव सम्मान प्रदान किया।

अमृतसर में सूर्यकान्त नागर सम्मानित

गत दिनों अमृतसर में पंजाब साहित्य अकादेमी, पंजाबी लघुकथा 'मिन्नी' तथा पिंगलवाड़ा सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बीसवें अन्तर्राष्ट्रीय लघुकथा सम्मेलन में सूर्यकान्त नागर को लघुकथा के क्षेत्र में उनके अवदान के लिए 'माता शरबतीदेवी स्मृति सम्मान' से अलंकृत किया गया। उन्हें यह सम्मान डॉ० अनूपसिंह, गुरुभजन सिंह गिल, विक्रमजीत नूर और लघुकथाकार सुभाष नीरव द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र और राशि देकर उन्हें सम्मानित किया गया।

पं० दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान

पिछले दिनों भोपाल में पं० दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती के अवसर पर आयोजित एक समारोह में विख्यात साहित्यकार एवं चिंतक डॉ० देवेन्द्र दीपक को 'पण्डित दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान 2011' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें शॉल, श्रीफल एवं मानपत्र के साथ 11,000/- की राशि भेंट की गई। इस अवसर पर 'स्वदेश' पत्र समूह के सम्पादक प्रमोद भारद्वाज को भी 'पत्रकार सम्मान' से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि थे—मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी और अध्यक्ष थे—मोहनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रजकिशोर।

डॉ० पेरिसेट्टी श्रीनिवासराव को तेलुगु भाषी हिन्दी युवा लेखक पुरस्कार

आन्ध्रप्रदेश राज्य सरकार की हिन्दी अकादमी विगत कुछ वर्षों से सितम्बर 14 को हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी-तेलुगु तथा अन्य दक्षिण हिन्दी रचनाकारों को सम्मान स्वरूप पुरस्कार प्रदान कर रही है। इस वर्ष 2011 के लिए दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के दूरस्थ शिक्षा के सहायक निदेशक डॉ० पेरिसेट्टी श्रीनिवासराव को 'तेलुगु भाषी हिन्दी युवा लेखक' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, इन्हें एक प्रशस्ति पत्र तथा 25,000 रुपये की नकद राशि सम्मान स्वरूप राज्य के उप मुख्यमन्त्री एवं शिक्षा मन्त्री श्री दामोदर राजनारसिम्हा द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादेमी पद्मश्री आचार्य वाई० लक्ष्मी प्रसाद तथा अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

विगत दिनों फारबिसगंज में डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम की पुस्तक 'इग्नाइटेड माइंडस' के मैथिली अनुवाद 'प्रज्वलित प्रज्ञा' हेतु केरल में साहित्य अकादेमी सम्मान-2010 से पुरस्कृत प्रो० (डॉ०) नित्यानंद लाल दास का अभिनन्दन इंद्रधनुष साहित्य परिषद् के तत्त्वावधान में स्थानीय साहित्यकारों एवं साहित्य-प्रेमियों द्वारा किया गया। अध्यक्षता प्रो० कमला प्र० बेखबर ने की।

सम्मान हेतु सूचना

पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग द्वारा 'डॉ० महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान-2011' हेतु हिन्दी लेखक किसी भी विधा में प्रकाशित पुस्तक की एक प्रति, पाँच फुटकर रचनाओं की प्रतिलिपि, साहित्य योगदान का विस्तृत विवरण पत्रिका के सन्दर्भ, विवरण एवं पंजीकरण शुल्क 100 रुपए के मनीऑर्डर के साथ रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा 31 दिसम्बर तक सचिव, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, रेडियो कॉलोनी, पो० रिंजा, शिलांग-793006 (मेघालय) पर भेजें।

'सरस्वती' एवं 'शिक्षकश्री' सम्मान

विगत शिक्षक दिवस पर लखनऊ में आयोजित समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री डॉ० राकेशधर त्रिपाठी ने प्रदेश के शिक्षकों का सम्मान करते हुए 'सरस्वती' एवं 'शिक्षकश्री' सम्मान प्रदान किये।

'सरस्वती' सम्मान के अधिकारी थे डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रमेश चन्द्र सारस्वत, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो० वाइसचांसलर डॉ० उपेन्द्रनाथ द्विवेदी एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के ही अर्थशास्त्र विभाग के प्रो० डॉ० मोहम्मद मुजम्मिल। आपको मानपत्र, उत्तरीय, श्रीफल के साथ 1 लाख रु० समर्पित किये गये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे इसरो के सलाहकार प्रो० एम०जी०के मेनन।

इसी के साथ महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के डॉ० राममोहन पाठक, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो० यदुनाथ प्रसाद दूबे, रामपुर के डॉ० शरीफ अहमद कुरैशी, फिरोजाबाद के डॉ० श्याम सुंदर सिंह चौहान, लखनऊ की डॉ० धर्म कौर, मथुरा के डॉ० कुलदीप भार्गव, सहारनपुर के डॉ० के०के० शर्मा, गाजीपुर के डॉ० अनिल कुमार सिंह, बरेली की डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी को 'शिक्षक श्री' सम्मान से सम्मानित करते हुए मान-पत्र, उत्तरीय आदि के साथ 50 हजार रुपये की राशि प्रदान की गयी।

संगोष्ठी/लोकार्पण

शोध के लिए नचिकेता संस्कृति का विकास करें—प्रो० पुरुषोत्तम अग्रवाल

वाराणसी। पिछले दिनों दिनांक 11 एवं 12 नवम्बर 2011 को हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं बहुभाषी तथा बहुविषयक अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल 'शोध हस्तक्षेप' के संयुक्त तत्वावधान में कला संकाय प्रेक्षागृह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 'बदलते वक्त में शोध की चुनौतियाँ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि हिन्दी के प्रतिष्ठित आलोचक और संघ लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो० पुरुषोत्तम अग्रवाल थे। उन्होंने शोध की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए शोध के उद्देश्य को रेखांकित किया। शोध में नयापन होना चाहिए लेकिन उससे जरूरी सवाल यह है कि नया क्यों? उन्होंने शोधार्थियों को लक्षित करते हुए कहा कि अगर शोध से घबराते हैं तो शोध करने की जरूरत नहीं। शोध का तत्कालीन सामाजिक उपयोग जरूरी नहीं, उसका सर्वकालिक उपयोग होता है। प्रो० अग्रवाल के अनुसार शोध की चुनौतियाँ असल में शोधार्थियों की चुनौतियाँ हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि जिज्ञासा को दबाये नहीं, पूरी विनम्रता और दृढ़ता से सवाल पूछना सीखें। उनके अनुसार श्रवण नहीं बल्कि नचिकेता संस्कृति का विकास करें।

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के कुलपति डॉ० पृथ्वीश नाग ने शोध को नयी टेक्नालॉजी, विकास, मूल्यों और सामाजिक उपयोग से जोड़ने पर बल दिया। अध्यक्षता करते हुए हिन्दी विभाग के भूतपूर्व आचार्य और भाषा वैज्ञानिक प्रो० राजमणि शर्मा ने शोध की व्यावहारिक चुनौतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। शोध के गिरते स्तर पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने शोध निर्देशक और शोधार्थी के सम्मुख सामाजिक दबावों का उल्लेख करते हुए शोध के व्यवसायीकरण पर चिन्ता व्यक्त की। इस अवसर पर 'शोध हस्तक्षेप' के द्वितीय अंक का लोकार्पण भी गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया। विषय का प्रवर्तन और स्वागत 'शोध हस्तक्षेप' के सम्पादक और संगोष्ठी के संयोजक डॉ० सत्यपाल शर्मा ने किया। अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० राधेश्याम दूबे ने तथा संचालन हिन्दी विभाग की डॉ० आभा गुप्ता ने किया।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे सत्र में बदलते वक्त में हिन्दी भाषा और साहित्य में शोध की चुनौतियाँ पर विस्तार से विचार किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में जे०एन०यू० नई दिल्ली के डॉ० ओमप्रकाश सिंह ने विश्वविद्यालय से इतर हो रहे वास्तविक शोधों की चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

तीसरे सत्र में साहित्य, इतिहास और संस्कृति में शोध की चुनौतियों पर विचार किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो० पुरुषोत्तम अग्रवाल ने साम्राज्यवाद के आर्थिक, सांस्कृतिक रूपों पर प्रकाश डालते हुए औपनिवेशीकरण पर गहराई से विचार किया। औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया भारत की आजादी के बाद खत्म नहीं हुई है, सम्भवत: वह बढ़ी है। इतिहास वर्तमान राजनीति का अखाड़ा नहीं है। इतिहास की स्वायत्तता की रक्षा इतिहास में शोध के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन साहित्य समाज और राजनीति में शोध की चुनौतियों पर विचार किया गया। मुख्य वक्त मालवीय शान्ति अनुशीलन केन्द्र के समन्वयक और NSECO के चेयरहोल्डर प्रो० प्रियंकर उपाध्याय ने भारत में शोध के लिए जरूरी धरोहरों के रख-रखाव पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्हें विश्वस्तरीय बनाने तथा Transdisciplinary संग्रहालय बनाने का सुझाव दिया। ज्ञान तथा शोध पर अंग्रेजी तथा अमेरिका के वर्चस्व को भी उन्होंने चिन्तनीय बताया। विशिष्ट वक्ता प्रो० बलिराज पाण्डेय, डॉ० मनोज कुमार सिंह, प्रो० वशिष्ठ अनूप, डॉ० रामसुधार सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में शोध की चुनौतियों पर प्रो० अवधेश प्रधान तथा प्रो० सदानन्द शाही ने विस्तार से उल्लेख किया। प्रो० अनीता सिंह (अंग्रेजी) ने शोध पद्धति पर प्रकाश डाला। प्रो० विनोदानंद तिवारी (रसियन) ने डिग्री के लिए शोध को वास्तविक शोध से अलग करने का प्रस्ताव किया।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० सुरेन्द्र दूबे ने शोध की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए रोजगार के लिए शोध की डिग्री की अनिवार्यता खत्म करने का सुझाव दिया। अध्यक्षता करते प्रो० पंकज ने शोध ग्रन्थों के अंबार पर चिन्ता व्यक्त करते हुए गुणवत्ता युक्त शोध पर जोर दिया। स्वागत हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० राधेश्याम दूबे तथा धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी के संयोजक डॉ० सत्यपाल शर्मा ने किया।

'75 वें वर्ष में गोदान : एक पुनर्पाठ'

जो समाज अतीत का पुनर्पाठ नहीं करता, वह जड़ हो जाता है। किसी भी कृति में सब कुछ ढूँढ़ना खतरनाक और प्रतिगामी होता है। किसी भी रचना का एक पुनर्पाठ नहीं हो सकता, जब समाज विविध रूपी हो, तो पुनर्पाठ समकालीनता के दबाव में ही सम्भव होगा। पुनर्पाठ क्यों और कैसे हो? यह भी विचारणीय है। आज की स्थितियों को रचना में ढूँढ़ने लगें सिर्फ यही महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह विश्लेषण ज्यादा जरूरी है कि लेखक ने क्या लिखा और क्या नहीं लिखा। यह लेखक की अपनी सीमा है या देश काल की। पुनर्पाठ का मतलब होगा जो प्रेमचंद में नहीं है उसे उद्घाटित किया जाए। इसके लिए पुनर्पाठ का योग्य वारिस होना भी जरूरी है। पूर्वाग्रह ग्रस्त होकर प्रेमचंद का पुनर्पाठ नहीं हो सकता। पुनर्पाठ के लिए प्रेमचंद जैसी 'स्पिरिट विद् द टाइम' होनी चाहिए। उक्त बातें महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा आयोजित गोष्ठी में कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ इतिहासकार एवं इतिहास बोध के सम्पादक श्री लालबहादुर वर्मा ने कहीं।

'75 वें वर्ष में गोदान : एक पुनर्पाठ' विषय पर आयोजित इस गोष्ठी में श्री रविभूषण एवं अली जावेद ने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी का संचालन श्री संतोष भदौरिया ने किया।

सांस्कृतिक विरासत की परत दर परत पड़ताल

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी में संचारित करने के उद्देश्य से महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद केन्द्र द्वारा 'बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का सन्दर्भ' शृंखला के अन्तर्गत बीसवीं सदी के प्रथम एकांकीकार व नाटककार भुवनेश्वर की जन्मशती पर भुवनेश्वर एकाग्र विषय पर आयोजित दो दिवसीय समारोह का उद्घाटन साहित्य आलोचक व विश्वविद्यालय के कुलाधिपति नामवर सिंह ने किया। समारोह में समय और समाज की कसौटी पर परखते हुए भुवनेश्वर के जीवनसंघर्ष और उनकी रचनाओं की परत दर परत पड़ताल की गई।

व्यक्ति के रूप में भुवनेश्वर पर विमर्श करते हुए नामवर सिंह ने कहा कि भुवनेश्वर अपने दौर के अद्भुत रचनाकार थे। उनकी गद्य लिखने की शैली, फैंटेसी रचने की कला अनूठी थी। नाटकों में भी उन्हों कई प्रयोग किए। ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों पर लिखे नाटकों में भुवनेश्वर की अद्भुत कल्पनाशीलता नज़र आती है। भूले-बिसरे नाटककार को याद करना देश के किसी भी विश्वविद्यालय का पहला आयोजन है। ऐसे वैचारिक विमर्श से हम भुवनेश्वर के कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।

कार्यक्रम में सर्वश्री भानु भारती, से०रा० यात्री, दूधनाथ सिंह, सुषमा भटनागर, अनुपम आनंद, आतमजीत सिंह, राजकुमार शर्मा, मीराकांत आदि ने आयोजित विभिन्न सत्रों में विचार व्यक्त किये। अंत में तांबे के कीड़े, श्यामा, भुवनेश्वर-दर-भुवनेश्वर नाटकों के मंचन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

ßÕâ§Å Ñ www.vvpbooks.com

लेखकों का सम्मान करना कोई नार्वे से सीखे

''नार्वे में साहित्यकारों और कलाकारों को पूजा जाता है। वहाँ के लोग भारतीय दर्शन से बेहद प्रभावित हैं और उसका सम्मान करते हैं'' उक्त विचार पिछले 28 वर्षो से नार्वे में रह रहे एक प्रख्यात सम्पादक/पत्रकार अमित जोशी ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम में 'नार्वे में हिन्दी' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा।

उन्होंने नार्वे के इतिहास और वहाँ के भूगोल की विस्तृत जानकारी हेते हुए बताया कि सन् 1914 में पहले भारतीय स्वामी आनन्द आचार्य कोलकाता से वहाँ जाकर बसे। वर्तमान में प्रवासी भारतीयों की संख्या दस हज़ार से ज्यादा है। जोशीजी ने बताया कि वहाँ की मुद्रा और हवाई जहाज एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों पर लेखकों/कलाकारों के चित्र और मूर्तियाँ लगी मिल जाएँगी। नार्वे के लोग अपनी भाषा नार्वेज़ियन से बेहद प्यार करते हैं और वहाँ रोज़गार पाने के लिए इसका जानना जरूरी है। हम भारतीयों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। भारत में हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा कि केवल सरकार ही नहीं बल्कि हिन्दी समाज को भी इसको सुधारने के लिए व्यक्तिगत प्रयास करने होंगे।

साहित्य अकादेमी का 'बहुभाषी रचना-पाठ'

''भारतीय साहित्य को एक आकार देकर उसकी पहचान बनाने के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर अनुवाद बेहद जरूरी है।'' उक्त विचार देश के जाने-माने वरिष्ठ कवि/आलोचक केदारनाथ सिंह ने विगत दिनों हरिद्वार में साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा आयोजित बहुभाषी रचना पाठ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने आगे कहा कि अभी पूरे विश्व में भारतीय साहित्य का मतलब अंग्रेजी में उपलब्ध प्राचीन संस्कृत साहित्य है या अंग्रेजी में लिख रहे कुछ गिने-चुने भारतीय लेखकों का लेखन..... इस भ्रांति को तोड़ने के लिए भारतीय भाषाओं का उत्कृष्ट साहित्य सामने लाना होगा, जो श्रेष्ठ अनुवाद के जरिए ही सम्भव है।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष तथा वरिष्ठ कवि और आलोचक प्रो० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि देश की सभी भाषाएँ राष्ट्र भाषाएँ हैं। उन्होंने अपने देश की समृद्ध भाषा विविधता की प्रशंसा करते हुए कहा कि केवल लोकप्रिय कृतियों का ही अनुवाद न हो बल्कि दूसरी भाषाओं का उत्कृष्ट साहित्य भी अनूदित होना चाहिए।

आरम्भिक व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के हिन्दी परामर्श मण्डल के संयोजक माधव कौशिक ने बहुभाषी रचना पाठ कराने के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि केवल रचना ही नहीं रचनाकार भी महत्त्वपूर्ण होता है और उसे भी मंच प्रदान कराना जरूरी है।

फिजा में फैल गया 'फ़ैज़' का फ़ैज़

'हम मेहनतकश जगवालों से जब अपना हिस्सा मांगेंगे/इक खेत नहीं इक देश नहीं, सारी दुनिया मांगेंगे; बोल की लब आजाद हैं तेरे.../बोल की जां अब तक तेरी है....' जैसी विश्व क्लासिक शायरी रचने वाले फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की जन्मशती के अवसर पर महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा व प्रगतिशील लेखक संघ के सहयोग से विगत दिनों इलाहाबाद में दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया गया जिसमें पाकिस्तान, जर्मनी सहित भारत के नामचीन अदीबों ने विमर्श किया।

'शख्शियत : फ़ैज़ अहमद फ़ैज़' पर आधारित उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व हिन्दी के शीर्ष आलोचक नामवर सिंह ने फ़ैज़ को मद्धम स्वर में दिलों में आग भर देने वाला शायर बताते हुए कहा कि अवाम में क्रान्तिकारी चेतना जगाने की कुवत रखने वाले फ़ैज में गुरूर जरा भी नहीं था। लोकप्रियता की ऊँचाई पर होने के बावजूद वे बेहद शालीन थे। फ़ैज़ की बेटियाँ सलीमा हाशमी और मुनीज़ा हाशमी व पाकिस्तान की सुप्रसिद्ध लेखिका किश्वर नाहिद की मौजूदगी ने हिन्द-पाक के अवामी और तहज़ीबी रिश्तों को नए जोश और मोहब्बत से भर दिया। बतौर वक्ता नाहिद किश्वर बोलीं, फ़ैज़ हमेशा सीखने की कोशिश करते थे और दूसरों के हुनर को सराहते भी थे, यह बड़ी शख्शियत की पहचान है। प्रो० अकील रिजवी ने फ़ैज़ से जुड़े संस्मरण सुनाते हुए सन् 1981 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम का जिक्र किया और बताया कि तमाम आशंकाओं के बावजूद फ़ैज़ को सुनने के लिए इतना बड़ा मज़मा जुटा जो फिर कभी दिखायी नहीं दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी में फ़ैज़ की इतनी बड़ी अहमियत है जितनी शायद उर्दू में भी नहीं। कुलपति विभूति नारायण ने कहा कि फ़ैज़ भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बड़े कवियों में से एक हैं और हमारी साझा संस्कृति के उत्कृष्टतम नमूना हैं।

पाकिस्तान की सुप्रसिद्ध कवयित्री व लेखिका नाहिद किश्वर तथा पटना के खगेन्द्र ठाकुर की संयुक्त अध्यक्षता में प्रतिरोध की कविता और फ़ैज़ 'लाजिम है कि हम भी देखेंगे' पर आधारित द्वितीय अकादमिक सत्र में वक्ताओं ने वैचारिक विमर्श किया। इस सत्र में मंचस्थ अध्यक्षद्वय के अलावा कवि बद्रीनारायण, राजेन्द्र शर्मा, ज़फरबख्त, आरिफ़ नकवी, अविनाश मिश्र ने विचार व्यक्त किये, संचालन ए०ए० फातमी ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय समारोह के दूसरे दिन फ़ैज़ की बेटी सलीमा हाशमी व शमीम फ़ैज़ी की संयुक्त अध्यक्षता में फ़ैज़ : गद्य के हवाले से 'बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे' पर आधारित अकादमिक सत्र में शाहिना रिज़वी, अबू बक़र आज़ाद, अजीजा बानो ने बतौर वक्ता के रूप में वैचारिक विमर्श किया। सत्र का संचालन साहित्यकार असरार गाँधी ने किया।

फ़ैज़ ने ग़ज़ल की नई परम्परा की नींव डाली—ग़ज़ल की परम्परा और फ़ैज़ 'सुलूक जिससे किया हमने आशिकाना किया' विषय पर आधारित अकादमिक सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए शीर्षस्थ आलोचक नामवर सिंह ने कहा कि फ़ैज़ ने न सिर्फ ग़ज़ल का ढाँचा बदला बल्कि उसकी रूह भी बदली, उन्होंने ग़ज़ल के तेवर को बदला। अंदाज को बदला। उन्होंने ग़ज़ल की नई परम्परा की नींव डाली। उनकी ग़ज़ल आम तौर की ग़ज़ल नहीं है। वे मीर गालिब की परम्परा से हटकर कहते हैं। इसलिए जैसे-जैसे दुनिया बदलती गई, फ़ैज़ की ग़ज़लों के माने भी बदले। इस सत्र में मुनीज़ा हाशमी, एहतराम इस्लाम, संजय श्रीवास्तव, अर्जुमंद आरा, सालिहा जर्रीन, सरवत खान, डी०पी० त्रिपाठी और विभूति नारायण राय ने विचार विमर्श किया।

कार्यक्रम के दौरन प्रो० एहतेशाम हुसैन और मसीहुज्जुमा द्वारा संकलित पुस्तक 'इंतेखाबे जोश' का विमोचन मंचस्थ अतिथियों के द्वारा किया गया। सत्र का संचालन करते हुए ए०ए० फातमी ने कहा कि जो काम उर्दू विश्वविद्यालय या उर्दू अकादमी को करना चाहिए वो काम हिन्दी विश्वविद्यालय ने किया।

फ़ैज़ एकाग्र पर आयोजित यादगार मुशायरा एवं कवि सम्मेलन से अन्तर्राष्ट्रीय समारोह का समापन हुआ। समारोह की अध्यक्ष और पाकिस्तान की मशहूर शायरा किश्वर नाहिद ने 'खेल सराय, सीढ़ियों पर ठहरी उम्र' जैसी नज़्में सुनाकर समां बाँधा।

विष्णु प्रभाकर की कहानियों का प्रभावशाली नाट्य मंचन

विगत दिनों विष्णु प्रभाकर जन्मशती के अवसर पर नोयडा के हिन्दी भवन में विष्णु प्रभाकर की पाँच प्रसिद्ध कहानियों का सुरेन्द्र शर्मा के नाट्य निर्देशन में 'रंग सप्तक' द्वारा नाट्य मंचन किया गया। विष्णु प्रभाकर की प्रसिद्ध कहानियों 'धरती अब भी घूम रही है' के अतिरिक्त 'डायन', 'कितने जेबकतरे', 'दूध वाले का बेटा', 'मिडिल स्कूल का हैडमास्टर' का मंचन किया गया। नाट्यकार सुरेन्द्र शर्मा ने कल्पनाशीलता का परिचय देते हुए कहानियों को एक दूसरे से जोड़ते हुए ऐसी माला का निर्माण

किया कि कहानियों ने उपन्यास का रूप ले लिया और सब प्रसंग एक दूसरे से जुड़े लगने लगे।

'ग्रह-नक्षत्रों द्वारा भाग्य निर्माण' पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली के इंडिया हैबीटैट सैंटर के सभागार में दयानन्द वर्मा रचित पुस्तक 'ग्रह-नक्षत्रों द्वारा भाग्य निर्माण' का लोकार्पण हुआ। लोकार्पण वरिष्ठ सांसद तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने किया और समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार वेद प्रताप वैदिक ने की।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 125वीं जयन्ती

चेन्नई की प्रसिद्ध संस्था साहित्यानुशीलन समिति के तत्वावधान में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में विशेष समारोह आयोजित किया गया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० बालशौरि रेड्डी विशेष अतिथि थे। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदराज वैद ने कहा कि मैथिलीशरण गुप्तजी ही आधुनिक हिन्दी साहित्य में पहले रचनाकार हैं जिन्हें जनता ने 'राष्ट्रकवि' की गौरवमयी उपाधि प्रदान की। उनकी काव्यकृति 'भारत भारती' भी हिन्दी जगत् में राष्ट्रीयता की गीता के रूप में समादृत हुई। डॉ० बालशौरि रेड्डी ने कहा कि द्विवेदी-युग के प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में उनकी जो देन है वह अद्वितीय है। राष्ट्रकवि के व्यक्तित्व-कृतित्व पर उपस्थित अन्य विद्वानों ने भी विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर साहित्यानुशीलन समिति द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'कृष्ण काव्य परिशीलन' का लोकार्पण डॉ० बालशौरि रेड्डी ने किया।

नदियों के बचने से ही हमारी संस्कृति बचेगी

''नदियाँ हमारी संस्कृति की जनक हैं, मनुष्य और नदी की जुगलबंदी से ही सभ्यता का विकास हुआ है, लेकिन नगर सभ्यता का आकर्षण हमारी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट कर रहा है।'' उक्त विचार प्रख्यात लेखक और चित्रकार तथा नर्मदा के पर्याय बन चुके अमृतलाल वेगड़ ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'साहित्य मंच' कार्यक्रम में 'मेरी नर्मदा परिक्रमा' पर अपना व्याख्यान देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि गंगा ने हमारी संस्कृति का निर्माण किया है, वह श्रेष्ठ है लेकिन नर्मदा गंगा से ज्येष्ठ है और देश की अकेली ऐसी नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है।

लोकार्पण समारोह

दिल्ली की प्रसिद्ध कवियत्री श्रीमती पवन जैन की पाँचवीं कृति 'यही एक पल' का लोकार्पण विगत दिनों एन०सी०ई०आर०टी० के न्यूपा हॉस्टल, दिल्ली में सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम 'साहित्य भारती' संस्था द्वारा आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह ने की।

एकांकी संग्रह 'एक बीमार सौ अनार' का विमोचन

चंद्रपुर की हिन्दी उर्दू लेखिका, कवयित्री, एकांकीकार बाल साहित्यकार डॉ० बानो सरताज की एकांकियों का संग्रह 'एक बीमार सौ अनार' का हाल ही में विमोचन एवं लोकार्पण सम्पन्न हुआ।

'एक और अभिमन्यु' का लोकार्पण

अजमेर स्थित अन्तर्भारती साहित्य एवं कला परिषद एवं अभिनव प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ० रामगोपाल गोयल की जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् डॉ० सुरेन्द्र भटनागर ने अभिनव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'एक और अभिमन्यु' (नाटक) का लोकार्पण किया।

'नागार्जुन' जन्म शताब्दी

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद द्वारा विगत 8 नवम्बर को बाबा नागार्जुन जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन सभा परिसर में किया गया।

प्रमुख वक्ता प्रो० शुभदा वांजपे ने नागार्जुन द्वारा रचित रचनाओं में नारी जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से इसकी जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि दैनिक स्वतंत्र वार्ता के सम्पादक डॉ० राधेश्याम शुक्ल ने बाबा नागार्जुन के प्रारम्भिक जीवन से लेकर यात्री जीवन तक की काव्य यात्रा का वर्णन किया जो पुस्तकों में भी प्राप्त नहीं होता, बहुत सारी निजी जानकारियों के साथ उनकी घुमक्कड़ वृत्ति पर भी प्रकाश डाला। विशेष अतिथि डॉ० रमा द्विवेदी ने नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को गिरते देखा' गीत को अपने मधुर स्वर में प्रस्तुत किया। समारोह के अध्यक्ष डॉ० चन्द्रदेव कवडे जी ने नागार्जुन के गद्य एवं पद्य व जीवनयात्रा पर संक्षिप्त तथा सारगर्भित जानकारी दी।

हिन्दीतर भाषी हिन्दी नवलेखक शिविर आयोजित

अक्षरा साहिती सांस्कृतिक सेवा पीठम्, राजमंड्री तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में श्री वेंकटेश्वरा आनम कला केन्द्रम, राजमंड्री में आयोजित 'हिन्दीतर भाषी हिन्दी नवलेखक शिविर' का आयोजन हुआ। इस अवसर पर डॉ० मलिक राजकुमार (उपन्यासकार, कथाकार) नई दिल्ली ने इस नवलेखक शिविर में उपस्थित रहकर नवलेखकों का मार्गदर्शन किया।

शिविर का प्रारम्भ करते हुए शिविर प्रभारी डॉ० मोहम्मद नसीम (सहायक अनुसंधान अधिकारी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली) ने शिविर का उद्देश्य और आठ दिन के कार्यक्रम के बारे में बताया। प्रो० आर०एस० सर्राजु जी (हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय) ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि दक्षिण भारत में जिस तरह से हिन्दी का मौलिक लेखन सुचारु रूप से हो रहा है, इसे देखकर इस आयोजन को 'हिन्दी लेखक' शिविर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वैसे हिन्दी के विस्तार को देखते हुए अब 'हिन्दीतर' शब्दों का प्रयोग कोई अर्थ नहीं रखता।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० टी०वी० कट्टीमनी, हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, के प्रो० वी० कृष्णा ने समारोह अध्यक्ष, प्रो० येड्लूरि सुधाकर, डीन, पोट्टिश्रीरामुलु तेलुगु विवि, राजमंड्री तथा श्री जी० समर्पण राव, करस्पांडेंट, अवंती कॉलेज, राजमंड्री ने विशिष्ट अतिथियों के रूप में भाग लेकर अपने विचार प्रकट किए।

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री स्मृति सभा

'आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री को बड़ा लेकिन उपेक्षित साहित्यकार मानकर तथा उनके अप्रकाशित साहित्य को सामने लाने भर की बातों से हिन्दी समाज उनके किए वृहत्तर लेखन को अनदेखा कर रहा है। उनका पद्य ही नहीं गद्य भी बहुत श्रम और आत्मीयता से लिखा गया है। अत: उनके प्रति दया भाव से नहीं बल्कि सम्मान भाव से काम करने की जरूरत है।' उक्त विचार प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह ने साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री की स्मृति-सभा में कहे।

वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने उन्हें याद करते हुए कहा कि वे निराला और रवीन्द्रनाथ टैगोर की गीत परम्परा के अन्तिम गीतकार थे।

इस स्मृति सभा में श्री अशोक वाजपेयी, श्री गोपेश्वर सिंह, श्री मैनेजर पाण्डेय, गंगा प्रसाद विमल, भारत भारद्वाज, उद्भ्रान्त आदि ने भी उनके साथ की अपनी स्मृतियों को साझा किया।

नेमिचन्द्र जैन स्मृति व्याख्यान

विगत दिनों राजधानी दिल्ली में प्रसिद्ध समाजशास्त्री दीपंकर गुप्त ने कहा कि बहुसंस्कृतिवाद आज सांस्कृतिक अध्ययन के लिए जरूरी है। बहुसंस्कृतिवाद का अध्ययन आज सारी दुनिया में किया जा रहा है। एक संस्कृति के अन्दर भी बहुत सारी संस्कृतियाँ होती हैं। दीपंकर गुप्त ने 'मैटाफर्स ऑफ कल्चर' विषय पर नेमिचन्द्र जैन स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए यह महत्त्वपूर्ण अवधारणा श्रोताओं के सम्मुख रखी।

'तार सप्तक' के कवि और रंगालोचक स्वर्गीय नेमिचन्द्र जैन के जन्मदिन पर इस व्याख्यान का आयोजन नेमि निधि और नटरंग प्रतिष्ठान ने किया।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की पुण्यतिथि मनाई गई

विगत दिनों दिल्ली में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 71वीं पुण्यतिथि पर संगीत नाटक अकादमी और संस्कृति मन्त्रालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित सांस्कृतिक संध्या का उद्घाटन केन्द्रीय वित्त मन्त्री श्री प्रणव मुखर्जी ने किया। सर्वश्री आफताब सेठ, प्रणव मुखर्जी, शैलजा तथा लीला सैमसन ने गुरुदेव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का समापन शास्त्रीय संगीतज्ञ श्री बहाउद्दीन डागर के रुद्र-वीणा के मधुर संगीत से हुआ।

धूमिल के गाँव में धूमिल की बातें

वाराणसी, जनकवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की 75वीं जयन्ती विगत 9 नवम्बर 2011 को उनके गाँव खेवली में धूमधाम से मनायी गई। इस अवसर पर आयोजित गोष्ठी में धूमिल की स्मृतियों को सहेजने के साथ ही उनकी जयन्ती को खेवली महोत्सव के रूप में मनाने के प्रस्ताव पर विद्वतजनों ने अपनी सहमति जताई।

गोष्ठी में मुख्य अतिथि काशी विद्यापीठ हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष श्रद्धानन्द ने कहा कि धूमिल जनकवि तो थे ही साथ ही उतने ही निर्भीक भी।

अध्यक्षता प्रो० अवधेश प्रधान ने की। डॉ० आर०के० सिंह, डॉ० कन्हैया पाण्डेय, प्रभाकर सिंह, विशाल विक्रम, डॉ० सदानंद आदि ने विचार व्यक्त किये।

मॉरिशस में हिन्दी हिन्दी पुस्तक मेला सम्पन्न

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर विगत दिनों मॉरीशस की प्रसिद्ध संस्था हिन्दी संगठन व भारत के प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान प्रभात प्रकाशन के तत्त्वावधान में हिन्दी पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। गुडलैंड्स के सोशल वेलफेयर सेंटर में मॉरिशस के कला-संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुन्नी ने पुस्तक मेले का शुभारम्भ किया, स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्री लोमेश बंधू ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी वक्ताओं का मत था कि मॉरिशस में हिन्दी फल-फूल रही है।

व्यक्तिवादी नहीं थे अज्ञेय

हिन्दी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह का कहना है कि अज्ञेय के साहित्यिक योगदान का सही मूल्यांकन होना अभी बाकी है। अज्ञेय ने काव्य और कथा-साहित्य ही नहीं, कथेतर विधाओं में भी विपुल रचनाएँ दी हैं, जिनके जोड़ की चीजें हिन्दी में ढूँढ़ना मुश्किल काम होगा।

भारत सेवा संस्थान द्वारा अज्ञेय जन्मशती वर्ष के अवसर पर जोधपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि अज्ञेय के काव्य को पढ़े बगैर आधुनिक कविता का मिजाज नहीं समझा जा सकता।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अज्ञेय के निकटस्थ एवं 'जनसत्ता' के सम्पादक ओम थानवी ने की। विशेष अतिथि कवि मरुधर मृदुल और जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० बी०एस० राजपुरोहित थे। राजपुरोहित ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गौरव का बोध है कि अज्ञेय ने यहाँ सत्तर के दशक में शिक्षण कार्य किया। आयोजन का संयोजन ओपी टाक ने किया।

सोनिया की जीवनी का लन्दन में विमोचन

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी की जीवनी का विमोचन विगत दिनों ब्रिटेन में किया गया। अप्रवासी पत्रकार रानी सिंह द्वारा 'सोनिया गाँधी : ऐन एक्स्ट्राआर्डिनरी लाइफ, ऐन इण्डियन डेस्टिनी' नामक इस किताब का विमोचन डी०एस०सी० साउथ एशियन लिटरेचर फेस्टिवल में किया गया।

किताब की भूमिका पूर्व सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे मिखाइल गोर्बाचेव ने लिखी है।

विद्वानों के प्रेरणा पुंज थे गोपीराज कविराज

मुख्य अतिथि प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने विगत दिनों सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के योग साधना केन्द्र में कविराज जी की 125वीं जयन्ती पर आयोजित समारोह में कहा, ''पारम्परिक ज्ञानधारा का एकीकरण और वैदिक ऋचाओं की नवीन व्याख्या करने वाले महान सिद्ध संत के रूप में पं० गोपीनाथ कविराज सदैव याद किए जाते रहेंगे। उनका कृतित्व उनके व्यक्तित्व से कहीं उन्नत और महान है।''

उन्होंने कहा कि गोपीनाथ कविराज ने ज्ञान की धारा से जुड़ने के लिए ध्यान की धारा को प्राथमिकता दी थी। अध्यक्षता करते हुए प्रति कुलपति प्रो० यदुनाथ दुबे ने कहा कि काशी ज्ञान की वह नगरी है जहाँ के कण-कण में ज्ञानियों का वास है। जरूरत है उन ज्ञानियों की तलाश करने की। पं० गोपीनाथ कविराज ऐसे ही व्यक्तित्व थे।

'हे उत्सव' केरल

दुनिया-भर के कवि और लेखक नवम्बर माह में केरल में तीन दिवसीय 'हे उत्सव' में उपस्थित हुए। केरल दूसरी बार इस उत्सव की मेजबानी कर रहा है। तिरुवनंतपुरम में 17 नवम्बर को शुरू 'हे उत्सव' केरल नामक इस समारोह में देश-विदेश के जाने-माने कवि, उपन्यासकार, पत्रकार, फिल्म निर्माता और कलाकारों ने भाग लिया। 'हे उत्सव' 24 वर्ष पहले वेल्स में शुरू हुआ था। तब से ब्रिटेन में यह सबसे बड़ा साहित्योत्सव बन गया। उसके विदेशी संस्करण के अन्तर्गत मैक्सिको और कोलंबिया से लेकर केन्या और बेरुत तक करीब दस 'हे उत्सव' चल रहे हैं। भारत में यह दूसरा भारतीय संस्करण है। केरल में 'हे उत्सव' ने टीमवर्क प्रोडक्शन के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया है। इसमें स्पेनिश, तमिल, मलियालम, हिन्दी, वेल्स, आइसलैंडिक अंग्रेजी भाषा के साहित्यकारों ने भाग लिया। जिसमें वाइल्ड स्वाइंस और चेयरमैन माओ के जीवनी लेखक जंग चांग, बीबीसी वर्ल्ड के एंकर निक गोविंग, ऑस्कर विजेता फिल्म निर्माता एंड्रयू, लेखक अनीता नायर आदि शामिल हैं।

'सीढ़ियाँ' पुस्तक लोकार्पित

राँची विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय के सभागार में साहित्यिक संस्था 'सुरभि' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में डॉ० पूर्णिमा केडिया 'अन्नपूर्णा' के कहानी संकलन 'सीढ़ियाँ' का लोकार्पण कथाकार एवं 'हंस' के कार्यकारी सम्पादक श्री संजीव ने किया।

कला, संस्कृति और हमारी स्थिति

हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक और कवि अशोक वाजपेयी ने कहा कि मौजूदा दौर का माहौल मनुष्य को मनुष्य से कमतर बनाने की ओर ले जा रहा है। अशोक वाजपेयी दिल्ली में लोकमत समाचार की कला वार्षिकी 'दीपो भव' के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् कृष्ण कुमार ने लोकमत समाचार की कला वार्षिकी का लोकार्पण किया।

'हमारी स्थिति' विषय पर शिक्षाविद् कृष्णकुमार, नृत्यांगना सोनल मानसिंह, रंग-निर्देशिका कीर्ति जैन, चित्रकार जतिनदास ने विचार व्यक्त किये।

असाधारण कवि हैं रवीन्द्रनाथ

केन्द्रीय वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर को 'भारत का महापुरुष' करार देते हुए उन्हें विगत दिनों श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा कि वे राष्ट्रवाद की राजनीति से दूर थे और उन्होंने सार्वभौम भाईचारे की हिमायत की थी। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् की ओर से गुरुदेव की 150वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'टैगोर्स विजन ऑफ द कांटेम्परी वर्ल्ड' को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय मन्त्री ने गुरुदेव की साहित्यिक रचनाओं की पंक्तियों का उल्लेख कर शान्ति और प्रेम के उनके संदेश को प्रस्तुत किया।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेमिनार सम्पन्न

कुरुक्षेत्र में भारतीय विद्या संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डियन नॉलेज) ट्रिनिडाड एंड टुबैगो (वेस्टइंडीज) द्वारा प्रवासी विश्वकवि प्रो० हरिशंकर आदेश के 75वें अमृतोत्सव पर अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ० बाबूराम को 'अन्तर्राष्ट्रीय ट्रिनिडाड हिन्दी शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया तथा उन्हें भारतीय विद्या संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका 'ज्योति' और ट्रिनिडाड हिन्दी समिति के परामर्श-मंडल का तीन वर्ष के लिए सदस्य

मनोनीत किया गया। सेमिनार में विश्व के कई देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

'विकास के पथ.....' कृति लोकार्पित

प्रभात प्रकाशन द्वारा दिल्ली के सीरीफोर्ट ऑडिटोरियम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी कृत 'विकास के पथ.....' पुस्तक का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। लोकार्पण आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक आध्यात्मिक गुरु पूज्य श्री श्री रविशंकर ने किया व अध्यक्षता पूर्व उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणीजी ने की। मुख्य अतिथि रा०स्व०संघ के सह सरकार्यवाह श्री सुरेश सोनी तथा वरिष्ठ सम्पादक श्री एम०जे० अकबर थे।

लोकार्पण समारोह सम्पन्न

विगत दिनों हिन्दी भवन में शब्द सेतु, नव उन्नयन एवं दिल्ली हिन्दी सम्मेलन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में 'कल्पांत' के 'पुष्प-मधुप' दंपती विशेषांक का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि डॉ० नरेन्द्र मोहन थे।

अनवरत सत्याग्रह है साहित्य

'साहित्य बिना किसी नेतृत्व के अनवरत सत्याग्रह है और जनांदोलनों की पृष्ठभूमि में रहता है।' यह बात कवि और चिंतक नंदकिशोर आचार्य ने पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज में 'जन आन्दोलन, साहित्य और सामाजिक परिवर्तन' विषय पर दिए अपने व्याख्यान के दौरान कही।

वनमाली सृजन पीठ का 'रचना-प्रसंग'

पिछले दिनों भोपाल में युवा कवि वसंत सकरगाए के पहले कविता-संग्रह 'निगहबानी में फूल' का लोकार्पण प्रख्यात कवि और कला चिंतक नरेश सक्सेना ने किया। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में समान रूप से सक्रिय वनमाली सृजन पीठ द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'रचना प्रसंग' की यह पहली सभा थी।

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों नागपुर में लोहिया अध्ययन केन्द्र के तत्त्वावधान में महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के सौजन्य से मधु लिमये स्मृति सभागृह में 'भाषा, बोली और तत्सामयिक समाज' पर आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ० वेदप्रकाश मिश्रा ने किया, अध्यक्षता श्री नंदकिशोर नौटियाल ने की। प्रथम सत्र 'भारतीय भाषाएँ, बोलियाँ और समाज', द्वितीय सत्र 'सिनेमा, साहित्य की भाषा और समाज', तृतीय सत्र 'दलित चेतना और भाषा' विषय पर केन्द्रित था। दूसरे दिन का प्रथम सत्र 'बाजार की भाषा और समाज', द्वितीय सत्र 'भाषा और डॉ० लोहिया', तृतीय सत्र काव्य-गोष्ठी पर आधारित था। समापन समारोह श्री नंदकिशोर नौटियाल की अध्यक्षता में हुआ। प्रमुख अतिथि श्री ब्रजभूषण तिवारी तथा विशिष्ट अतिथि श्री एस०क्यू० जमा थे।

बाल साहित्य पुस्कार 2011

'सरताज' संस्था चंद्रपुर द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला डॉ० मैमूना शाह स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार 2011, एक भव्य समारोह में द्वाराहाट-अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड के बाल साहित्यकार श्री रमेश चंद्र पंत को उनकी गद्य-कृति 'बालमन की प्रतिनिधि कहानियाँ' पर प्रदान किया गया। यह पुरस्कार डॉ० बानो सरताज अपनी माताजी के नाम पर देती हैं। पुरस्कार स्वरूप उन्हें शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न एवं 5000/- रु० नगद प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ० बानो सरताज द्वारा चन्द्रपुर में 'हिन्दी साहित्य मंच' का गठन भी किया गया।

तीन पुस्तकें विमोचित

लखनऊ में राजभाषा सप्ताह समारोह के अवसर पर श्री संजीव जायसवाल 'संजय' की नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'चंदा गिनती भूल गया' के तेलुगु और अंग्रेजी संस्करण तथा 'शेर बिल्ली बन गया' एवं 'जंगल का राजा' का विमोचन आर०डी०एस०ओ० (रेल मंत्रालय) के महानिदेशक श्री वी० रामचन्द्रन ने किया।

'कथा साहित्य में विकलांग विमर्श' कृति विमोचित

विगत दिनों बिलासपुर में अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् द्वारा प्रकाशित एवं डॉ० विनय कुमार पाठक द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'कथा साहित्य में विकलांग-विमर्श' का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती मृदुला सिन्हा तथा विशिष्ट अतिथि डॉ० ए०एस० झाड़गाँवकर एवं श्री आई०एन० सिंह थे। अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र पाण्डेय ने की।

'यशधारा' का विमोचन सम्पन्न

विगत दिनों धार में भोज शोध संस्थान द्वारा निमाड़ के प्रतिनिधि कवियों के काव्य-संग्रह 'यशधारा' का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि श्री प्रभु जोशी तथा विशिष्ट अतिथि श्री अजीज अंसारी एवं डॉ० छाया गोयल थे। अध्यक्षता डॉ० लता चौहान ने की। इस अवसर पर श्री अजीज अंसारी की पुस्तक 'पाँव तले आसमान' का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया।

'के० एन० मोदी कर्मयोगी' विमोचित

विगत दिनों दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर में डॉ० केदारनाथ मोदी के जीवन पर आधारित पुस्तक 'के० एन० मोदी कर्मयोगी' का विमोचन श्री हरि शंकर सिंघानिया ने किया। पुस्तक की पहली प्रति श्री किशोर बियानी को भेंट की गई। इस अवसर पर सर्वश्री आर० के० धवन, सुरेश नेवटिया, के० के० मोदी, एम० के० मोदी और डी० एन० मोदी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

साहित्य और इतिहास

हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, दक्षिण भारत हिन्दी परिषद एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रो० पद्मा पाटील के संयोजकत्व में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी सम्पन्न हुई। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी की केन्द्रीय संकल्पना थी 'साहित्य और इतिहास'।

संगोष्ठी का उद्घाटन राजस्थान साहित्य अकादमी के 'मीरा पुरस्कार' से सम्मानित वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर ने किया। चार सत्रों में आयोजित संगोष्ठी में देश-विदेश के विद्वानों ने सहभागिता की।

समारोह की अध्यक्षता शिवाजी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० ना०ज० पवार ने की। उन्होंने कहा कि 'इतिहास को लोक तक पहुँचाना है, उसकी रोचकता बढ़ानी है तो उसे साहित्य का आश्रय लेना पड़ता है।'

संगोष्ठी में 'साहित्य और इतिहास' ग्रन्थ का विमोचन प्रो० ना०ज० पवार के तथा 'दक्षिणांचल शोध पत्रिका' विशेषांक का विमोचन डॉ० सुरेशचंद्र शुक्ल 'आलोक' के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

रचनाकार की मुक्ति

विगत दिनों सुल्तानपुर में 'वर्तमान परिवेश में साहित्यकार की जिम्मेदारियाँ' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में 'युग तेवर' के सम्पादक कमल नयन पाण्डेय ने कहा कि कालजयी रचनाएँ उस युग का बोध कराती हैं। इलिए जरूरी है कि साहित्यकार अपने समय और यथार्थ की उपेक्षा नहीं करे। उन्होंने कहा कि लोकमुक्ति में ही रचनाकार की मुक्ति है।

कवि एम० मिश्र ने कहा कि कतिपय साहित्यकार समय से कटे हुए हैं। पत्रकार प्रमोद शुक्ल ने सिर्फ बिकने के लिए लिखे जा रहे साहित्य पर चिंता व्यक्त की। राजेश्वर सिंह ने कहा कि रचनाकार का वर्तमान से जुड़ाव और भविष्य-दृष्टि दोनों ही जरूरी है। सुशील कुमार पाण्डेय ने कहा कि परम्परागत मूल्यों की पहचान के बिना समस्याओं से संघर्ष सम्भव नहीं है।

हिन्दी का बढ़ा महत्त्व

जापान के हिन्दी विद्वान् प्रोफेसर ताकेशि फुजिइ ने भारत और जापान के सदियों पुराने सम्बन्धों को याद करते हुए कहा है कि इधर के वर्षों में बढ़ते आर्थिक सम्बन्धों के कारण हिन्दी का महत्त्व उजागर होने लगा है। उन्होंने कहा कि अब तक जापान में हिन्दी पढ़ने वालों के मन में हिन्दी के माध्यम से भारत को जानने की आकांक्षा ज्यादा रहती थी, लेकिन अब हिन्दी की पढ़ाई उन्हें भारत में काम कर रही जापानी कम्पनियों में रोजगार के अवसर देने का माध्यम भी नजर आ रहा है।

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

प्रोफेसर फुजिइ पिछले दिनों हिन्दू कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) की हिन्दी साहित्य सभा की ओर से आयोजित एक समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। इस कॉलेज के 1982 से 1984 के बीच छात्र रह चुके प्रोफेसर फुजिइ ने पिछले साल भारत और जापान के बीच हुए आर्थिक सहयोग समझौते का जिक्र करते हुए कहा, 'मेरा विश्वास है, इससे भारत और जापान के बीच सम्बन्ध मजबूत होंगे।' समारोह की अध्यक्षता कर रहीं कथाकार ममता कालिया ने जापान में हिन्दी शिक्षण के लिए 'टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज' और खास तौर पर वहाँ के प्रोफेसर फुजिइ के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में फुजिइ के सहयोगी प्रोफेसर सुरेश ऋतुपर्ण ने टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज में हिन्दी शिक्षण की शुरुआत के सन्दर्भ में बताया कि वहाँ 1908 में हिन्दुस्तानी भाषा के रूप में हिन्दी की पढ़ाई शुरू हुई थी। विश्व में यह शायद अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ हिन्दी शिक्षण की शुरुआत हुए एक सदी बीत चुकी है।

अमृतलाल नागर की मनाई गई 95वीं वर्षगाँठ

उपन्यास सम्राट् प्रेमचंद की परम्परा के संवाहकों में भारतीय वाङ्मय को समृद्ध करने वाली जिन विभूतियों का स्मरण आदर के साथ किया जाता है, उनमें श्री अमृतलाल नागर प्रमुख हैं, जिन्हें विख्यात आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा 'कथा वाचस्पति' की उपाधि से अभिहीत करते थे। विगत दिनों लखनऊ में नागर जी की 95वीं वर्षगाँठ के अवसर पर संचित स्मृति न्यास द्वारा साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद के सहयोग से साहित्यिक आयोजन किया गया। इसका मुख्य आकर्षण रहा नागर जी के समग्र बाल साहित्य का उनके पुत्र शरद नागर तथा पौत्री दीक्षा नागर द्वारा सम्पादित पुस्तक 'सम्पूर्ण बाल रचनाएँ : अमृतलाल नागर' का लोकार्पण।

क्रान्तिकारी व्यक्ति थे पराड़कर जी

वाराणसी। प्रसिद्ध पत्रकार के विक्रम राव ने कहा कि बाबूराव विष्णु पराड़कर क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। पत्रकारिता को गले लगाया तो इसकी बदौलत उन्होंने न केवल देशवासियों को स्वाधीनता के लिए प्रेरित किया बल्कि समाज की विसंगतियों की ओर इशारा भी किया। इतना ही नहीं आज के दौर में बहुप्रचलित कई शब्द भी बनाए। श्री राव विगत दिनों पराड़कर जयंती के अवसर पर सम्पादकाचार्य पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर स्मृति न्यास की ओर से पराड़कर भवन मे आयोजित 'पत्रकारिता : सरोकार का द्वंद' विषयक संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। संगोष्ठी को साहित्यकार अखिलेश, डॉ० योगेंद्र प्रताप सिंह, राकेश जेतली, कुमार विजय, डॉ० दयानंद ने भी सम्बोधित किया। संचालन आलोक पराड़कर ने किया। अध्यक्ष थे केन्द्रीय सूचना आयुक्त डॉ० ओ०पी० केजरीवाल।

जिन्होंने मजाज को देखा था

उर्दू के कीट्स कहे जाने वाले मशहूर शायर मजाज लखनवी को उनके शहर लखनऊ ने विगत दिनों ऐतिहासिक श्रद्धांजलि पेश की। भारतेन्दु नाट्य अकादमी में लखनऊ सोसायटी की ओर से आयोजित मजाज जन्मशती समारोह में देश-विदेश की अदबी हस्तियों ने इस महान् शायर को याद किया। मजाज के सबसे करीबी चार लोगों को मंच पर ले आना इस समारोह की ऐतिहासिक कामयाबी रही। इनमें 5 दिसम्बर, 1955 (मजाज के इंतकाल का दिन) को मजाज के आखिरी मुशायरे की सदारत करने वाले जे०एन०यू० के भाषा विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० शारिब रुदौलवी, जर्मनी में बसे आरिफ नकवी, लखनऊ विश्वविद्यालय में मजाज के जूनियर रहे और समकालीन उर्दू गद्य में मजबूत पहचान रखने वाले आबिद सोहेल और वयोवृद्ध आलोचक प्रो० मलिकजादा मंजूर अहमद शामिल थे।

इस समारोह में मजाज पर केन्द्रित सेमिनार एवं काव्य-गोष्ठी सम्पन्न हुई।

राजधानी में 'सातवीं औरत का घर' लोकार्पित

दिल्ली स्थित साहित्य अकादेमी में विगत दिनों कथाकार नीला प्रसाद के पहले कहानी-संग्रह 'सातवीं औरत का घर' का लोकार्पण राजेन्द्र यादव ने किया। अध्यक्षता डॉ० नामवर सिंह ने की। शुरुआत में कथाकार-पत्रकार प्रियदर्शन ने कहा कि यह एक खामोशी से लगातार रचनाकर्म करने वाली कथाकार के संग्रह का विमोचन है, जिनकी कहानियों में नारी अस्मिता की बारीक और सटीक अभिव्यक्तियाँ हैं। अनुज, डॉ० गंगाप्रसाद विमल आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

सन्दर्भ : हिन्दी आलोचना के शिखरपुरुष डॉ० रामविलास शर्मा

डॉ० रामविलास शर्मा हिन्दी नवजागरण को निरन्तरता में देखते हैं, यह बताते हुए प्रो० शम्भुनाथ ने विगत दिनों दिल्ली में कहा कि हिन्दी क्षेत्र की तमाम बोलियाँ और भाषाएँ ही हिन्दी की माँ हैं। रामचन्द्र शुक्ल ने जब हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा तो तमाम बोलियों-भाषाओं को समेटते हुए उन्हें इसी दृष्टि से देखा। उसी परम्परा को डॉ० रामविलास शर्मा ने आगे बढ़ाया। इसी तरह रामविलास जी ने हजारीप्रसाद द्विवेदी की परम्परा को भी आगे बढ़ाया। इन्हें आमने-सामने कर नहीं देखा जाना चाहिए।

प्रो० शंभुनाथ ने डॉ० रामविलास शर्मा के 99वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 'हिन्दी नवजागरण : वर्तमान सन्दर्भ' विषय पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही। इसी के साथ रामविलास शर्मा के जन्म शताब्दी वर्ष के आयोजनों की शुरुआत भी हो गई।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कर्मेंदु शिशिर ने रामविलास जी का विचार-भूगोल विस्तृत रूप में बताते हुए कहा कि उन्होंने भाषा, इतिहास, समाज और दर्शन जैसे तमाम विषयों पर गहरा अध्ययन किया था। नवजागरण को लेकर लम्बी बौद्धिक यात्रा करते हैं।

शुरुआत में अपने स्वागत वक्तव्य में रामशरण शर्मा 'मुंशी' ने कहा कि रामविलास शर्मा हिन्दी नवजागरण की शुरुआत 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम से मानते हैं। सारे भारत में और खास तौर से हिन्दी प्रदेश में उसका बहुत असर पड़ा था।

'21वीं सदी का बाल साहित्य' पर विचार गोष्ठी तथा पुस्तकों का लोकार्पण

सलूंबर, उदयपुर में नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया ने साहित्यिक संस्था 'सलिला' और राजस्थान साहित्य अकादेमी के सहयोग से एक विचार गोष्ठी व पुस्तक लोकार्पण का आयोजन किया। इस आयोजन में देशभर से कई वरिष्ठ साहित्यकार एवं बाल साहित्यप्रेमी शामिल हुए। साथ ही कई विद्यालयों के बच्चे न केवल श्रोता रहे, बल्कि सहभागी भी रहे।

इस अवसर पर ट्रस्ट की पाँच पुस्तकों—छोटी चींटी की बड़ी दावत, सुनो कहानी (एसीसीयू), विज्ञान और आप, इसरो की कहानी तथा चित्र ग्रीव का लोकार्पण बच्चों ने ही किया। बच्चों ने ही इन पर समीक्षा प्रस्तुत कीं।

आरा में एकदिवसीय साहित्य उत्सव व संगोष्ठी का आयोजन

बिहार के आरा जिला स्थित वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में नेशनल बुक ट्रस्ट ने पिछले दिनों पुस्तक लोकार्पण व वर्तमान दौर में पुस्तक की प्रासंगिकता विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। हिन्दी विभाग और एन०बी०टी० के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में एन०बी०टी० द्वारा प्रकाशित 10 पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। पुस्तकें थीं—एक थी चिड़िया, संतोष साहनी; दर्द का रिश्ता व अन्य कहानियाँ, नासिरा शर्मा; ठाकुर साहब का व्रत, गोविंद मिश्र; हरदीप और उसकी अंधविश्वासी माँ, भगवंत रसूलपुरी; नुस्खा, लाल सिंह; आ गई दूसरी सिमरन, प्रेम गोरखी; विज्ञान का क्रमिक विकास वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, राम दास चौधरी; प्रभावती, उषा किरण खान; पर्वत-पर्वत बस्ती-बस्ती, चंडी प्रसाद भट्ट; कहाँ तक कहें युगों की बात, मिथिलेश्वर।

पुस्तक परिचय

मानव-तत्त्व तथा वर्णविवेक (Anthropology)

भार्गव शिवरामकिङ्कर योगत्रयानन्द

अनु० : **एस०एन० खण्डेलवाल**

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 168

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-853-3

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-836-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत ग्रन्थ जिन महामानव की कृति है, उनके सान्निध्य में आकर स्वामी विवेकानन्द, उपन्यासकार बंकिमचन्द चटर्जी, महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज जैसे महापुरुष स्वयं को कृतार्थ कर चुके हैं। इससे अधिक इनके सम्बन्ध में और क्या कहा जा सकता है? प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रात:स्मरणीय ग्रन्थकार ने मानव-तत्त्व की जो विशद तथा सारगर्भित व्याख्या की है, उसमें पाश्चात्य विज्ञान, पाश्चात्य दर्शन से भारतीय दर्शन तथा वेद-विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन इस तथ्य को परिपुष्ट कर देता है कि इस देश की प्रतिभा ने सृष्टि के रहस्य को जिस गहराई में जाकर उद्घाटित किया था, उससे आज का उन्नत जड़विज्ञान अभी भी अनेकांश में उपकृत हो सकता है। यह जड़विज्ञान आज भी चेतना के विज्ञान को नहीं जान सका है, जो समस्त विज्ञान का, साइंस का मूल है। यह जड़विज्ञान भले ही Anatomy आदि शरीर-विज्ञान के अध्ययन में चरम की ओर पहुँचता जा रहा है, तथापि मानव के प्रकृत तत्त्व की सीमारेखा का भी स्पर्श कर सकने में सक्षम नहीं हो सका है। चेतनासमुद्र का एक बिन्दु भी उसे प्राप्त नहीं हो सका है, जिसमें हमारे चिन्तक, मनीषी, ऋषि अबाध रूप से सन्तरण करते रहते थे। चेतन में जड़ तथा जड़ में चेतन देखने का विज्ञान आज भी वैज्ञानिकों की खोज का आधार है।

वास्तव में सृष्टि का समस्त रहस्य मानव-अस्तित्व में अन्तर्निहित है। यह हमारे चेतन विज्ञान (शास्त्रों) का उद्घोष है। मानव विधाता की अनमोल कृति है। यह काल के अन्तर्गत प्रतीत होने पर भी कालातीत, टाइम तथा स्पेस से भी अतीत हो सकता है। इसी में जीवन-मृत्यु का रहस्य भी अन्तर्लीन है। अमरत्व की प्रकाश-रेखा भी इसी मानव-अस्तित्व के माध्यम से अनुभूत हो सकती है। 'सबाई ऊपर मानुष सत्य तार ऊपर नाई' सबसे ऊपर मनुष्यरूपी सत्य है। इससे ऊपर कुछ नहीं है। यह ज्ञान, विज्ञान तथा प्रज्ञान की चरम परिणति है।

पूज्य ग्रन्थकार ने अपनी साधनपूत दृष्टि से मानव-तत्त्व का जो अवलोकन किया, उसका सार इस ग्रन्थ में उन्होंने अंकित किया है। वैसे वे इतना ही इस विषय में लिखकर सन्तुष्ट नहीं थे, इस ग्रन्थ के अध्ययन से यह विदित होता है। परन्तु कुछ काल पश्चात् इनके द्वारा भगवत्-प्रेरणा से ग्रन्थ-लेखन भी त्याग दिया गया और अनेक लिखे ग्रन्थ गंगार्पित कर दिये गये। विषय इससे आगे न बढ़ सका। यह भले ही इन सर्वत्यागी के लिए परम नि:श्रेयस का क्षण हो, तथापि जिज्ञासुगण के लिए यह दुर्भाग्य का विषय ही कहा जायेगा। फिर भी एक दृष्टि से सन्तोष तो होता ही है कि यह ग्रन्थ प्रकृत मानव-तत्त्व के जिज्ञासुगण के पथ-प्रदीप के रूप में उनका मार्गदर्शन करता रहेगा।

कबीर काव्य कोश

डॉ० वासुदेव सिंह

द्वितीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 472

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-791-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कबीर की भाषा की शक्ति और क्षमता का परिचय उनके शब्द-भाण्डार से मिलता है। उनका शब्द-ज्ञान असीम था। तत्कालीन प्रचलित ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, बुंदेली, राजस्थानी, भोजपुरी आदि बोलियों के अतिरिक्त पंजाबी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं तथा अरबी-फारसी आदि विदेशी भाषाओं के लोक-प्रचलित शब्द उनके काव्य में अनायास और स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने शब्दों का चयन जीवन के विस्तृत क्षेत्र से किया था।

कबीर के समय तक अरबी-फारसी भाषा का भी प्रयोग काफी बढ़ गया था। अरबी मुस्लिम शासकों की धर्म-भाषा थी और फारसी राजभाषा। इसलिए मुस्लिम-शासन में इन दोनों भाषाओं का प्रचार खूब बढ़ गया था। हिन्दी के सभी भक्त-कवियों—सूर, तुलसी आदि-ने भी इन भाषाओं के शब्दों का काफी मात्रा में प्रयोग किया है। कबीर में भी ऐसे शब्द बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं, जो उस समय तक जन-जीवन में घुलमिल गए थे। कबीर में एक विशेषता और पाई जाती है। उन्होंने जब 'अवधू' को सम्बोधत किया है तो प्राय: नाथयोगियों की शब्दावली का प्रयोग किया है, जब हिन्दू विधि-विधानों का खण्डन किया है तब संस्कृत के तत्सम-तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है और जब मुल्ला-मौलवी को फटकारा है तब फारसी-अरबी शब्दों का सहारा लिया है। इससे कथन में स्वाभाविकता आ ही गयी है, साथ ही इससे कबीर के असीम शब्द-ज्ञान तथा सटीक शब्द प्रयोग का भी प्रमाण मिल जाता है।

इस प्रकार कबीर के काव्य में विभिन्न भाषाओं और बोलियों के शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग उनके पाठक के समक्ष अनेक प्रकार की समस्या पैदा कर देते हैं और उनका अर्थ करने में भ्रान्तियाँ हुई हैं। इसी असुविधा को दूर करने के प्रयोजन से यह 'कबीर काव्य कोश' तैयार किया गया है। अत: कबीर में सामान्य शब्दों के साथ ही पारिभाषिक एवं प्रतीकात्मक शब्दों का भी बाहुल्य है और ऐसे शब्द अर्थ की गम्भीर समस्या पैदा करते हैं, अत: पारिभाषिक एवं प्रतीकात्मक शब्दों को अलग से विस्तृत अर्थ के साथ दिया गया है। कबीर में संख्यावाची शब्द भी बहुत हैं। इनके प्रयोग में उन्होंने प्राय: संकेतात्मक पद्धति का सहारा लिया है। यत: संख्यावाची शब्दों को भी अलग करके प्रस्तुत किया गया है। कबीर को भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने पौराणिक-ऐतिहासिक सन्दर्भों का विपुल मात्रा में प्रयोग किया है। कोश के अन्त में ऐसे सन्दर्भों का विस्तृत परिचय भी दे दिया गया है। इससे प्रस्तुत कोश की सार्थकता एवं महत्ता बढ़ गई है। कबीर के काव्य, भाषा के मर्म को समझने के लिए यह कोश एक अनिवार्य ग्रन्थ है।

योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व-कथा

महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

चतुर्थ संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 216

अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-247-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

परमहंस स्वामी विशुद्धानन्दजी उच्चकोटि के योगी थे। उन्हें अनेक सिद्धियाँ प्राप्त थीं। उन्होंने अपनी सिद्धियों के माध्यम से अध्यात्म और विज्ञान का अभूतपूर्व समन्वय स्थापित किया। विशुद्धानन्दजी महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज के गुरु थे। कविराज जी ही विशुद्धानन्दजी की मनीषा, अध्यात्म और सिद्धियों को समझने में सक्षम थे। प्रश्नों के रूप में

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

कविराजजी ने योगिराज से अध्यात्म जगत के निगूढ़ रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया। अनेक खण्डों में प्रश्नोत्तर हुए। इस पुस्तक में कतिपय प्रश्न और उनके उत्तर संकलित किये गए हैं।

विशुद्धानन्दजी अपने उपदेशों के अन्तर्गत जिस प्राकृतिक शक्ति या सत्ता की क्रिया या प्रतिक्रिया का विश्लेषण करते थे, आवश्यकतानुसार उसे प्रत्यक्ष करके दिखा भी देते थे। प्रथम भाग में विशुद्धानन्दजी की संक्षिप्त जीवनी के अन्तर्गत सूर्य विज्ञान तथा अन्य अलौकिक क्रियाओं का विवरण भी दिया गया है।

अध्यात्म जगत के जिज्ञासुओं के लिए यह प्रसंग तत्त्व कथा प्रेरणास्पद है।

दीक्षा

महामहोपाध्याय
पद्मविभूषण
डॉ० पं० गोपीनाथ
कविराज

तृतीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 164

अजि. : रु० 90.00 ISBN : 978-81-89498-52-8

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

दीक्षा के सम्बन्ध में शास्त्रों का निर्देश यह है कि आध्यात्मिक जीवन-पथ पर उन्नति करने के लिए दीक्षा ग्रहण करना साधारणत: आवश्यक है। वास्तव में जीव शिव से अभिन्न है। कारण स्वयं भगवान् लीला करने के लिए जीव बनकर मायिक जगत् में प्रकट हुए हैं। और जिस मत से जीव नित्य और भगवत्स्वरूप का ही अंशस्वरूप है, उस मत से भी अनादिकाल से इस मायिक-जगत् में जीव संसार-भ्रमण में व्यापृत है। इसीलिए आचार्यों ने जीव को अनादि बहिर्मुख के रूप में वर्णन किया है। दोनों ही मतों से जीव के नित्यस्वरूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए आत्मतत्त्व का अपरोक्ष ज्ञान गुरु से प्राप्त हो जाता है। जिस प्रक्रिया के द्वारा गुरु शिष्य को यह अपरोक्ष ज्ञानदान करते हैं, उसी का नाम है—दीक्षा। कुलार्णव तंत्र में है—''दीयते विमलं ज्ञानं क्षीयते कर्मवासना। तस्मात् दीक्षेति सा प्रोक्ता ज्ञानिभि: तंत्रवेदिभि:'' अर्थात् विमल ज्ञान प्राप्ति और कर्म-वासना का क्षय, जब तक ये दोनों सम्पन्न नहीं होंगे तब तक दीक्षा की वास्तविक सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। किसी-किसी तंत्र में स्पष्ट वर्णन है कि पापक्षय और शिवत्त्व-योजन, ये दोनों व्यापार ही दीक्षा के लक्षण हैं। अर्थात् जिस ज्ञान के द्वारा पाप का क्षय होता है एवं शिवत्त्व-लाभ होता है, वही वास्तविक दिव्यविज्ञान है। कैवल्य-मुक्ति दीक्षा का फल नहीं है। कारण दीक्षा के व्यतिरेक से आत्मा और अनात्मा का विवेकज्ञान उत्पन्न होते ही आत्वमा कैवल्य-मुक्ति प्राप्त कर सकती है। किन्तु उससे परमात्मा के साथ आत्मा की योगस्थापना नहीं होती। फलत: शिवस्वरूप जीवात्मा के लिए इस प्रकार का कैवल्य परम पुरुषार्थ के रूप में विवेचित नहीं हो सकता। शास्त्र का सिद्धान्त यह है—जीव दीक्षा के अलावा अन्य किसी उपाय से पौरुष-अज्ञान से मुक्त नहीं हो सकता एवं यह सत्य है कि पौरुष-अज्ञान बिना निवृत्त हुए शिवरूपी जीव की शिवत्व प्रतिष्ठा असम्भव है। पौरुष-अज्ञान निवृत्त होने पर भी जब तक जीव बौद्धिक अज्ञान से निवृत्त नहीं होगा तब तक दीक्षा से प्राप्त अपने शिवत्व की उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकता। इसीलिए साधना के द्वारा बौद्धिक ज्ञान उत्पन्न करके बौद्धिक अज्ञान को निवृत्त करना पड़ता है। जब गुरु कृपा प्राप्त निजका शिवस्वरूप अपने सामने प्रकट होता है तब जीव अपने को शिवरूप में अनुभव करता है और जीवन्मुक्ति का रसास्वादन करता है। प्रारब्ध के भोग के बाद देहत्याग के समय पौरुषज्ञान उदय होता है। तब वास्तविक शिवरूप में स्थिति होती है। यह दीक्षा व्यापार आत्मा के निज के दिव्यज्ञान उन्मेष के द्वार-स्वरूप है।

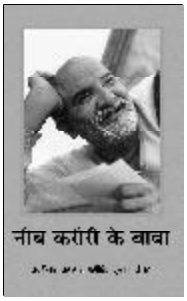

नीब करौरी के बाबा

बदरीनाथ कपूर
परीक्षित कुमार चोपड़ा

तृतीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 64

अजि. : रु० 25.00 ISBN : 978-81-7124-831-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

घोर कलियुग की इस बीसवीं शताब्दी में भी भारत भूमि पर अनेक ऐसे संत-महात्माओं ने जन्म लिया जिनका मूल उद्देश्य संभवत: मानव समाज का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उपकार करना ही था। ऐसे संत-महात्माओं को इसीलिए अवतारी पुरुष कह सकते हैं क्योंकि इन्होंने भगवान राम और कृष्ण की ही तरह पृथ्वी का भार हल्का किया और अपने भक्तों का असीम उपकार किया।

वैसे तो बाबा का विराट् स्वरूप है। इनके लीला-कौतुक भी अगणित हैं, इन पर साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तो भी हमें बाबा की जिस छवि के दर्शन हुए तथा इसके फलस्वरूप जो सुख प्राप्त हुआ उसका कुछ अंश ही सही अपने पाठकों तक पहुँचाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं।

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य : विविध सन्दर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 184

सजि. : रु० 225.00 ISBN : 978-81-7124-828-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत संग्रह में मध्यकाल के विविध सन्दर्भों से सम्बद्ध निबन्ध संगृहीत हैं। मध्यकाल में भक्ति और रीति दोनों का समावेश हो जाता है। ये निबन्ध किसी न किसी संस्था की माँग पर लिखे गए हैं, इसलिए इनमें गहराई और वैविध्य दोनों है। इनका सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि ये आज की दिशाहीन मानव-चेतना को स्वस्थ दिशा की ओर अग्रसर करने में समर्थ हैं। निश्चय ही मध्यकालीन हिन्दी काव्य-चेतना के प्रति जिज्ञासा का भाव रखने वाले साहित्यिकों और इस विषय के सामान्य पाठकों दोनों के लिए यह संग्रह उपयोगी होगा।

गोदान : कुछ सन्दर्भ

डॉ० कमलेश कुमार गुप्त

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 140

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-826-1
सजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-827-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

श्रेष्ठ रचना बराबर मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रेरित करती है। 'गोदान : कुछ सन्दर्भ' भी ऐसा ही एक लघु प्रयास है। इसमें कुछ विशिष्ट सन्दर्भों में 'गोदान' के मूल्यांकन का प्रयास किया गया है। 'गोदान' ग्रामीण जीवन और लोक संस्कृति का उपन्यास तो है ही, यह किसान-चेतना और स्त्री-चेतना का भी उपन्यास है। इसमें वर्णित किसानों की तबाही और बरबादी के मूल में है ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीति के अन्तर्गत भारत के भयानक आर्थिक शोषण की प्रक्रिया। चूँकि उस समय भारत ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आश्रित था, इसलिए ब्रिटिश सत्ता का प्रबल प्रहार उसके ही ऊपर हुआ और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी किसान का जीवन त्रासदी बन गया। 'गोदान' जिस तरह से ग्रामीण जीवन का उपन्यास है, वैसे ही

नगरीय जीवन का भी उपन्यास है, इसमें जनसंख्या की अधिकता और निवासियों की विविधता, अर्थ और उद्योगप्रधान वर्ग विभक्त समाज, खूबियों और खामियों सहित एकाकी परिवार, औपचारिक और द्वितीयक सम्बन्ध, व्यक्तिवादिता और प्रतिस्पर्द्धा से भरी जिन्दगी, स्वार्थप्रेरित सहनशीलता, तर्क और विवेकप्रधान जीवन, सामाजिक नियन्त्रण के औपचारिक साधन आदि नगरीय जीवन की विशेषताएँ भरी पड़ी हैं। पारिवारिक जीवन का मार्मिक आख्यान भी है 'गोदान'। महाजनी या पूँजीवादी सभ्यता के दबाव में किस तरह संयुक्त परिवार टूट रहे थे और विघटन की ओर बढ़ रहे थे यह हम इसमें लक्षित कर सकते हैं। चरित्रांकन, कथा-भाषा और कथा-शिल्प की दृष्टि से भी यह एक बेजोड़ उपन्यास है। पुस्तक में इन सब पर कुछ विस्तार से विचार किया गया है।

हिन्दी-भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास

प्रो० सत्यनारायण त्रिपाठी

पंचम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 284

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-822-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास को संतुलित रूप में प्रस्तुत करना इस कृति का लक्ष्य है। हिन्दी का विकास वस्तुत: डिंगल, ब्रजी, अवधी और खड़ी बोली हिन्दी के साहित्यिक रूपों का इतिहास है। डिंगल-काव्यों से लेकर आधुनिक हिन्दी नयी कविता तक के भाषारूपों के आधार पर इस विकास की रूप-रेखा प्रथम बार विस्तृत रूप में इस कृति में स्पष्ट की गयी है। इस विकासात्मक अध्ययन में भाषाओं के साहित्यिक रूपों के साथ उनके कथ्यरूपों का भी विवेचन किया गया है और विकास के उत्थानों के लिए कालपरक नामों के अतिरिक्त भाषा परक नाम भी सुझाए गए हैं। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के वर्गीकरण पर विचार करते समय लेखक ने डॉ० ग्रियर्सन और डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी के वर्गीकरणों की सम्यक् परीक्षा करके उनकी सीमाओं का निर्देश किया है।

मूल कृति का प्रणायन उन्नीस सौ चौंसठ ई० में हुआ था। प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा, उसकी ध्वनियों और उसके पदरूपों के विकास का ऐतिहासिक निरूपण था। लगभग बयालीस वर्षों के इस लम्बे अन्तराल में हिन्दी भाषा का बहुआयामी विकास हुआ और उसके स्वरूप तथा विभिन्न समस्याओं को लेकर बहुत कुछ सार्थक और स्तरीय लिखा गया है। यह सब देखते हुए प्रस्तुत कृति को नए और अधुनातन रूप में प्रस्तुत करने की इच्छा हुई। इसी का परिणाम यह वर्तमान संस्करण है जो मूल कृति का संशोधित एवं संवर्धित अद्यतन रूप है। इसमें पाँच नए प्रकरण सम्मिलित किए गए हैं। इनमें से पाँचवें में हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूपों का प्रयोग के आधार पर निरूपण हुआ है। साथ ही हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए उसके प्रमुख रूपों की विवेचना की गई है। अन्त में विभिन्न दृष्टियों से हिन्दी के मानक रूप का निर्धारण है।

हिन्दी ध्वनियों का विवेचन व्याकरण और ध्वनि-विज्ञान के सिद्धान्तों के आलोक में पहले किया गया था। प्रस्तुत संस्करण के नवें प्रकरण में स्वनिम-सिद्धान्त के अनुसार हिन्दी स्वनिमों का निरूपण नया परिवर्धन है। सोलहवाँ प्रकरण नया है और इसमें हिन्दी पदरूपों का रूपिम-विज्ञान की दृष्टि से स्वतन्त्र रूप से अध्ययन किया गया है। सत्रहवाँ प्रकरण भी नया है और इसका सम्बन्ध हिन्दी वाक्यों के निरूपण से है। इसमें हिन्दी वाक्यों का अध्ययन वाक्य-विज्ञान और पदिम-सिद्धान्त के आधार पर हुआ है। अन्तिम नया प्रकरण उन्नीसवाँ नागरी के मानकीकरण से सम्बद्ध है। इसके अन्तर्गत अब तक के उपलब्ध प्रमुख मतों और साक्ष्यों के आधार पर हिन्दी लिपि (नागरी का वर्तमान रूप) के मानक रूप की समस्या पर विचार करते हुए प्रामाणिक निष्कर्ष प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है।

भास्कर वर्मण

ऐतिहासिक नाटक

डॉ० हीरालाल तिवारी

द्वितीय संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 64

अजि. : रु० 20.00 ISBN : 978-81-7124-697-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत के राजनीतिक क्षितिज पर तीन उज्ज्वल नक्षत्र देदीप्यमान थे—दक्षिण भारत में चालुक्यराज पुलकेशिन् और उत्तर भारत में स्थाणीश्वर (स्थाण्वीश्वर) के सम्राट् हर्ष और प्राग्ज्योतिषपुराधीश महाराज कुमार भास्कर वर्मण। मालवा और गौड़ के शासक विगत वैभव गुप्त-साम्राज्य के सान्ध्य-दीप थे। श्रीहर्ष की माँ यशोवती गुप्त-वंश की थी। महाराज कुमार भास्कर वर्मण राजा अथवा मनुष्य किसी भी रूप में श्री हर्ष से उन्नीस न थे।

श्रीहर्ष के दुर्दिन में—पिता प्रभाकरवर्द्धन के असामयिक निधन तथा बहनोई (अवन्तिवर्मा के ज्येष्ठ पुत्र और राज्यश्री के पति ग्रहवर्मा) और बड़े भाई राज्यवर्द्धन की हत्या के पश्चात् उनके मातृकुल के ही लोग जब उनकी अपरिपक्वता का लाभ उठाकर मौखरि और वर्द्धन-वंश को उखाड़ फेंकने का षड्यंत्र रच रहे थे, भास्कर वर्मण ने मित्रता का हाथ बढ़ाकर श्रीहर्ष को उबार लिया था। मित्रता की पहल न करके यदि भास्कर ने थोड़ी और प्रतीक्षा की होती और स्थाणीश्वर और गौड़युद्ध के बाद ससैन्य इधर आया होता तो आज हम भारत का कोई और इतिहास पढ़ रहे होते। वैसे भी भास्कर जितना बड़ा और शक्तिशाली राज्य उस समय किसी और का नहीं था।

हर्ष और भास्कर दोनों अविवाहित थे। तरुणी विधवा बहन राज्यश्री के साहचर्य में श्रीहर्ष ने विवाह नहीं किया यह तो समझ में आ जाता है किन्तु भास्कर क्यों आजीवन महाराज कुमार बने रहे, अब तक रहस्य है। इतना पौरुष, वैभव, यश होते हुए भी यह व्यक्ति संन्यासी जैसा रहता था। सातवीं शती के इस गृही संन्यासी जैसा व्यक्तित्व इतिहास में दुर्लभ है। इतना होते हुए भी भास्कर वर्मण के सम्बन्ध में बहुत कम लिखा गया है। यह नाटक इस दिशा में एक प्रयास है।

ध्रुव स्वामिनी (नाटक)

जयशङ्कर प्रसाद

सम्पादक :

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 96

अजि. : रु० 30.00 ISBN : 978-81-7124-843-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'ध्रुवस्वामिनी' एक सफल मंचीय नाटक ही नहीं, एक उत्कृष्ट साहित्यिक रचना भी है। इसमें जीवन की मार्मिक छवियों को बड़ी ही सशक्त भाषा में उकेरा गया है।

वस्तुत: 'प्रसाद'जी मूलत: कवि हैं। उनमें भावुकता और दार्शनिकता के ताव भी हैं। इसलिए उनकी नाट्य-कृतियाँ सफल काव्य-कृतियाँ भी हैं। संस्कृत में 'काव्येषु नाटकमरम्यम्' कहा गया है। वहाँ 'नाटक' और 'काव्य' में अभेद है। 'प्रसाद' के नाटकों में भी यह भेद मिट गया है। 'प्रसाद' का प्रत्येक पात्र किसी-न-किसी मार्मिक परिस्थिति में कविता बोलने लगता है।

अनुभूतिमयता कवित्व के लिए आवश्यक है। यह तत्त्व 'प्रसाद' के सभी पात्रों में लक्षित होता है। अनुभूतिमय और संवेदनशील होने के कारण ही 'प्रसाद' के पात्र सजीव और गतिशील हैं। इसलिए निर्विवाद रूप में 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक साहित्यिक दृष्टि से एक उत्कृष्ट रचना है।

स्मृति-शेष

वयोवृद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री श्रीलाल शुक्ल का निधन

31 दिसम्बर, 1925 को अतरौली (लखनऊ जनपद) में जन्मे प्रख्यात कथाकार एवं व्यंग्यकार श्री श्रीलाल शुक्ल का विगत 28 अक्टूबर 2011 को लखनऊ में निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित श्री शुक्ल को साहित्य अकादेमी, व्यास सम्मान एवं हाल ही में उन्हें उनके उपन्यास 'राग दरबारी' के लिए वर्ष 2009 का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया था। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े श्री शुक्ल ग्रामीण भारत के जीवन-जगत के चितेरे थे।

शुक्लजी ने कई महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखे जिनमें सूनी घाटी का सूरज, अज्ञातवास, राग दरबारी, मकान, राग-विराग और बिस्रामपुर का सन्त खूब चर्चित रहे। अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— उमराव नगर में कुछ दिन, पहला पड़ाव, आदमी का जहर, सीमाएँ टूटती हैं, अंगद का पाँव आदि।

प्रशासनिक सेवा के दौरान विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने हिन्दी में 25 से अधिक रचनाएँ कीं। हिन्दी उपन्यास के बने बनाये पारम्परिक साँचे को तोड़कर उन्होंने 'राग दरबारी' जैसी कालजयी कृति की रचना की। इसी कृति के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' और 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार मिला। इसका अनुवाद अंग्रेजी के साथ-साथ 15 भारतीय भाषाओं में हो चुका है।

असमिया साहित्यकार इंदिरा का निधन

असमिया साहित्य की प्रख्यात लेखिका व ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित 69 वर्षीय इंदिरा राइसम गोस्वामी का 29 नवम्बर 2011 को प्रात: लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। असम में शान्ति बहाल करने में इंदिरा गोस्वामी की प्रमुख भूमिका रही। उग्रवादी संगठन उल्फा को बातचीत करने के लिए तैयार करने का श्रेय उनको जाता है।

इंदिरा ने मामोनी राइसम गोस्वामी के नाम से कई उपन्यास, कहानी संग्रह और कुछ अन्य रचनाएँ लिखीं। देश में साहित्य के क्षेत्र में दिए जाने वाले सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार (सन् 2000) के अतिरिक्त भी इंदिरा को कई पुरस्कार प्राप्त हुए। उनकी पुस्तक 'अदाज्या' पर बनी फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'रामायण—गंगा से ब्रह्मपुत्र तक' के लिए फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी ने इंदिरा को अन्तर्राष्ट्रीय तुलसी पुरस्कार से सम्मानित किया।

डॉ० कुमार विमल नहीं रहे

प्रख्यात साहित्यकार एवं बिहार लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० कुमार विमल का विगत 26 नवम्बर को निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। वह निमोनिया से पीड़ित थे।

डॉ० बि० रामसंजीवय्या नहीं रहे

विगत 11 सितम्बर को मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् के प्रधान सचिव डॉ० बि० रामसंजीवय्याजी का निधन हो गया। 1955 से वे परिषद् से जुड़े, 37 वर्षों तक परिषद् के प्रधान सचिव पद की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वाह किया, परिषद् को आत्मनिर्भर, गतिमान बनाया। पिछले 40 वर्षों में परिषद् द्वारा करीब 16 लाख अहिंदी भाषी विद्यार्थियों ने उनके प्रयत्न से हिन्दी सीखी। करीब 4 लाख कन्नड़ेतर विद्यार्थियों ने कन्नड़ सीखी।

अर्थशास्त्री श्री विष्णुदत्त नागर नहीं रहे

विगत 9 अक्टूबर को जाने-माने अर्थशास्त्री और स्तम्भकार श्री विष्णुदत्त नागरजी का दिल का दौरा पड़ने के कारण निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे। उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग की स्थापना में उनकी अहम भूमिका रही। वे इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति और अर्थशास्त्र विभाग के प्रमुख भी रहे। राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में इनके सैकड़ों आलेख प्रकाशित हुए हैं।

कुबेर दत्त का निधन

वरिष्ठ हिन्दी कवि कुबेर दत्त का विगत 2 अक्टूबर को दिल्ली में उनके निवास पर हृदय गति रुकने से निधन हो गया। वे 63 वर्ष के थे। कुबेर दत्त ने दूरदर्शन में प्रोड्यूसर रहते साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' के द्वारा अपनी एक अलग पहचान बनाई। इसके अतिरिक्त 'सृजन', 'कला परिक्रमा' और 'किताबों की दुनिया' जैसे साहित्य, कला और संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों के लिए भी उन्हें याद किया जाता है। 'काल काल आपात', 'केरल प्रवास' और 'कविता की रंगशाला' शीर्षक तीन काव्य-संग्रहों के अतिरिक्त उनके गजलों, लेखों और संस्मरणों के संग्रह भी प्रकाशित हैं।

रंगकर्मी गुरुशरण सिंह का निधन

पंजाबी के मशहूर नाट्य लेखक और रंगकर्मी गुरुशरण सिंह का लम्बी बीमारी के बाद विगत दिनों चण्डीगढ़ में निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे। चण्डीगढ़ में उनके अन्तिम संस्कार के अवसर पर रंगमंच और साहित्य जगत् की कई बड़ी हस्तियाँ मौजूद थीं। लोगों ने शहीद भगत सिंह की जयंती और रंगकर्मी गुरुशरण सिंह की पुण्यतिथि को अब से 'पीपुल्स थिएटर दिवस' के रूप में मनाने की शपथ ली।

रामदयाल मुंडा का निधन

प्रसिद्ध शिक्षाविद् और राज्यसभा सांसद रामदयाल मुंडा का विगत दिनों निधन हो गया। 72 वर्षीय मुंडा कैंसर से पीड़ित थे। मुंडा ने अपनी शिक्षा रांची विश्वविद्यालय से पूरी की थी। बाद में वे इस विश्वविद्यालय के कुलपति भी बने। मुंडा को पद्मश्री सम्मान से भी सम्मानित किया गया था। उन्होंने कई किताबें भी लिखीं, जिसमें 'आदि-वासियों का आदिग्रन्थ' सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है।

साहित्यवाचस्पति डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम' का निधन

अपने सक्रिय जीवन के 90वें वर्ष में चरणन्यास करने के पूर्व ही ख्यातिलब्ध साहित्यकार और वरिष्ठ कवि डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम' महाप्रयाण कर गये। छायावादोत्तर युग के एक समर्थ और प्रख्यात मानवमुखी गीतकार के रूप में आप समादृत रहे। आपकी सरस-सुरस, गीत-धारा काव्य मंचों एवं राष्ट्रीय क्षितिज की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में स्नेहपूर्वक प्रकाश पाती रही। 'जीवन-तरी', 'नीलम ज्योति', 'संघर्ष' से आरम्भ उनका सृजन रचना और आलोचना के बीच समादृत रहा।

श्री लिंगदेवारु हालमने का निधन

कन्नड़ भाषा के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, नाटककार, भाषा शास्त्री एवं 'रंगायन' के निर्देशक श्री लिंगदेवारु हालमने का देहावसान हो गया। वे भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के प्रति समर्पित शब्दार्थ अभिव्यक्ति की क्रियाशीलता थे।

संगीत सम्राट पं० श्यामदास मिश्र नहीं रहे

विगत दिनों कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किये गये संगीत सम्राट पण्डित श्याम दास मिश्र का पटना के पाटलिपुत्र डिवाइन अस्पताल में निधन हो गया।

डॉ० सौरभ कुमार चालिहा का निधन

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार सम्मान प्राप्त असमी भाषा साहित्य के सुपरिचित साहित्यकार डॉ० सौरभ कुमार चालिहा का अवसान हो गया। वे 81 वर्ष के थे।

मुश्ताक अहमद आजमी नहीं रहे

जनसाक्षरता-विशेषज्ञ एवं जनसाक्षरता आन्दोलन के पहरुआ मुश्ताक अहमद आजमी, जिन्हें प्यार से मुश्ताक साहेब कहा जाता था, अब हमारे बीच नहीं रहे। 12 जुलाई, 2011 को नई दिल्ली में 92 साल की उम्र में उनका निधन हो गया।

गुडुरी सीताराम का निधन

पहली पीढ़ी के प्रख्यात तेलुगु कथाकार, उपन्यासकार एवं आलोचक गुडुरी सीताराम का 25 सितम्बर 2011 को हैदराबाद में निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। उनकी 85 कहानियाँ तथा दो उपन्यास प्रकाशित हैं। श्री सीताराम ने हाल ही में ट्रस्ट के लिए 'नेल्लुरी केशवा स्वामी उथमा कथालु' नाम से एक मूल तेलुगु कथा संचयन का चयन एवं सम्पादन किया था।

ÒÖ#ÚÌèØ ß#¾×ØÓ ÂçÚß#Ú -¤è ¥#Ú â çÎß»Ì
¥#ˆ×#¥# -¤# Ö#ßÖèÙè Ÿ#h#ÁçÜ

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

ग्रह-नक्षत्रों द्वारा भाग्य-निर्माण : दयानंद वर्मा, प्रकाशक : माइंड एंड बॉडी रिसर्च सेंटर, W-21 ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1, नयी दिल्ली-110048, संस्करण : प्रथम, मूल्य 125/- रु०

प्राचीन उपनिषद्-परम्परा में प्रस्तुत पुस्तक की सर्जना ज्योतिष, अध्यात्म के विद्वान, साहित्य-रचनाकार श्री दयानंद वर्मा और शोधार्थी निशा घई के बीच प्रश्न-उत्तर क्रम से हुई है। विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में श्री वर्मा ने वैज्ञानिक-दार्शनिक दृष्टि से जो समाधान दिये हैं वे वर्तमान युग के अनास्थामय परिदृश्य को बदलने की दृष्टि से प्रासंगिक भी हैं और उपादेय भी।

कृष्णकाव्य अनुशीलन : सम्पादक : डॉ० इन्दरराज बैद, प्रकाशक : साहित्यानुशील समिति, 14 नारायण एपार्टमेन्ट्स, टेन्थ स्ट्रीट, नांगलौर, चेन्नई-600061, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100/- रु०

भारतभूमि के उत्तरापथ और दक्षिणापथ तक प्रसारित कृष्ण-काव्यधारा का अनुशीलन है प्रस्तत ग्रन्थ। अलग-अलग क्षेत्र और भाषा के विद्वानों द्वारा हिन्दी भाषा में लिखित आलेख कृष्ण-चरित्र और कृष्ण-काव्य का राष्ट्रीय परिदृश्य उपस्थित करते हैं।

युगमानव : मुकुन्द नीलकंठ जोशी, प्रकाशक : कंडारी पब्लिशिंग हाऊस, प्रथम तल, विंडलास कॉम्प्लेक्स, 11-ए राजपुर रोड, देहरादून-248001, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100/- रु०

पौराणिक महानायक 'श्रीकृष्ण' के ऐतिहासिक कलेवर को रेखांकित करता प्रस्तुत प्रबन्ध-काव्य अवतार की उपादेयता एवं उद्देश्य की सार्थक खोज है।

लड़कियाँ दस्तक देती हैं : किशोरी लाल व्यास 'नीलकंठ', प्रकाशक : डॉ० किशोरीलाल व्यास, एफ-1 रत्ना रेज़ीडेन्सी, माहेश्वरी नगर, हब्शीगुडा, हैदराबाद-500007, संस्करण : प्रथम, मूल्य 200/-रु०

नारी-मुक्ति के वर्तमान सन्दर्भ में आज की प्रवर्धमान पीढ़ी की युवतियों की ऊर्जा को लक्ष्य करके रची गयी ये रचनाएँ नये-पुराने प्रतिमानों की पड़ताल करती हैं और वर्तमान पीढ़ी को दिशा संकेत देती हैं—पढ़ो, स्वयं को गढ़ो/सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ो, आगे बढ़ो।

हाइकु ऋचाएँ : नलिनीकान्त, प्रकाशक : कविता श्री प्रकाशन, उत्तर बाजार, अण्डाल-713321, पश्चिम बंगाल, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 50/- रु०

'हाइकु' विधा के परिचित हस्ताक्षर नलिनीकान्त ने 240 हाइकु ऋचाओं का संकलन प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं में प्राचीन प्राकृतिक अनुभूतियों से लेकर वर्तमान जीवन तक की अनुभूतियों का परिदृश्य दिखलाई पड़ता है।

धूप में सया : उद्धव महाजन 'बिस्मिल', प्रकाशक : असबाक़ पब्लिकेशन्स, सायरा मंजिल, 230 बी/102, विमान दर्शन, संजय पार्क, लोहगाँव रोड, पुणे - 411032 (महाराष्ट्र)

प्रस्तुत ग़ज़ल-संग्रह की अवधारणाओं एवं अनुभूतियों के सम्बन्ध में इसी का एक शेर मुकम्मल बयान होगा।

'कदम सँभल के उठाओ बिस्मिल, कि रास्ते सारे पुरख़तर हैं/कहीं अगर ठोकरें लगीं तो, लहू की बहती नदी मिलेगी।'

यही सच है : डॉ० कैलाश निगम, प्रकाशक : श्री अरुण कुमार जग्गी, प्रिंट आर्ट ऑफसेट, कैंट रोड, लखनऊ, संस्करण : प्रथम, मूल्य 170/- रु०

मध्यकालीन ग़ज़लगोई के बरखिलाफ प्रस्तुत ग़ज़ल-संग्रह की ग़ज़लें आम आदमी के सुख-दुःख से बावास्ता हैं। उजालों के परदे में अँधेरों की हकीक़त से रू-ब-रू शायरी का जज्बा देखिये—'उठा लेते हैं सर पे हम इक कयामत/सितम यूँ ही चुपचाप सहते नहीं हैं।'

मेरे कमरे के तीन कोने : सुश्री प्रेरणा सारवान, प्रकाशक : साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 125/- रु०

ÖæÚÌ èØ ßæ¾×Ø

मासिक

वर्ष : 12 सितम्बर-दिसम्बर 2011 अंक : 9-12

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11   RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)
विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)